ISSN : 2436-5017

जापान से निकलने वाली हिंदी साहित्य की प्रथम त्रैमासिक ई-पत्रिका

हिंदी की गूँज

वर्ष 3 , अंक -10

हिंदी कल्चर सेंटर, जापान की पहल

हिंदी की गूंज

日本インド

Japan India

अतंरराष्ट्रीय ई पत्रिका

संरक्षक

एव

मुख्य संपादक

— रमा शर्मा, जापान

साहित्य और समाज की पगडंडियों पर आगे बढ़ती,हिन्दी के लिये जनसंवाद, चिंतन, मंथन करती हुई,जापान से निकलने वाली पहली हिंदी त्रैमासिक ई पत्रिका

संरक्षक

रमा शर्मा जापान

इंद्रजीत शर्मा (अमेरिका)

प्रधान संपादक
रमा शर्मा (जापान)

संपादक
विनोद पाण्डेय

सह संपादक
उपासना सियाग

वरिष्ठ परामर्श दाता
डॉ हरीश नवल जी(प्रसिद्ध व्यंग्यकार)

विदेश प्रतिनिधि

कपिल कुमार (बेल्जियम)
शामलाल पुरी(लंदन)
श्वेता सिंह उमा (रशिया)
मोनी बिजय जी(कतर)

भारतीय प्रतिनिधि
डॉ कामराज गुरू जी कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी
राकेश छोकर-सहारनपुर (यूपी) ,भारत
पूनम माटिया (नई दिल्ली)
डॉ मोनिका देवी

विशेष सहयोगी
राकेश छोकर, भारत

भारतीय सैना प्रतिनिधि
तृप्ति मिश्रा (माहू)

सहयोगी प्रतिनिधि
आलोक रंजन पांडेय (लोक बात टी वी)
सुनीता चौहान, दिल्ली

ज्योतिषाचार्य
डॉ विनय भारद्वाज
बोध गया विश्वविद्यालय

तकनीकी सहयोग
जे पी द्विवेदी
गाजियाबाद

संपादकीय कार्यालय
त्सुकुबा सिटी, टोक्यो ,जापान

व्हट्सअप नंबर - 00818061658299

ईमेल hindikigoonj.jp@gmail.com
hindikeegoonj@gmail.com

Twitter

@hindikigoonj

यू ट्यूब चैनल-

Hindi ki Goonj , Japan

इंस्टाग्राम : Hindikeegoonj

संपादन, संचालन, प्रकाशन एवं सभी सदस्य पूरी तरह अवैतनिक, अव्यवसायिक !

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं ।संपादक तथा प्रकाशक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं ।प्रकाशित रचनाओं के मौलिक होने का उत्तर दायित्व लेखक पर होगा । पत्रिका ISSN (जापान) नंबर के साथ जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्टूबर में प्रकाशित होगी।

हिन्दी की गूँज

अनुक्रम

संपादकीय

संपादकीय -रमा शर्मा/5
अपनी बात- विनोद पाण्डेय/6

आलेख /निबंध /शोध लेख

शोध प्रविधि-संजू कुमारी/42-44
राजभाषा हिन्दी का बढ़ता वर्चस्व- प्रो विनय भारद्वाज/
डॉ सुनीता चौहान/45
दादू पंथः सिद्धान्त और जीवन दर्शन-डॉ अंबे कुमारी/46-47
क्या भगवान बुद्ध का अविर्भाव महाभारत
या भगवान कृष्ण से पूर्व हुआ था?-डॉ किर्ति वर्धन/47-48
मैं तिमिर हूँ- मोनी विजय /51-52
मरंगगोड़ा नीलकंठ हुआ उपन्यासः
आदिवासी चिंतन -रेणुका सरोज/53-56
जापान में महिलाओं की स्थिति- रमा शर्मा/57

गीत /गजल /कविता

हम अदने से लोग-केशव मोहन पाण्डेय/12
गजल -नवीन माथुर पंचोली/13
बाल कविता- डॉ शिल्पा शिल्पी सक्सेना/13
कवितायें-मंजु मिश्रा/14
कुछ पक्तियाँ बेटियों के नाम-डॉ मीना शर्मा/14
प्रेम-जे पी रावत/15
बाप होने का एहसास-जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/15
गजल-प्रशांत उपाध्याय/16
गजल-प्रीति चौधरी 'प्रीत'/16 गजल-लव कुमार 'प्रणय'/17
गीत- डॉ अमिताभ पाण्डेय/17 गीत-प्राची चतुर्वेदी 'रंधावा'/17
परिणय सूत्र के ये गठबंधन-शालिनी गर्ग/18
तुम-पंकज त्रिवेदी/18 गजल - हर्षवर्धन आर्य/18
ओ साथी संग ना तुम जो होते-डॉ पंकज शर्मा/24
तेरे सहारे-संजय शुक्ल/24 पहाड़-संजय वर्मा 'दृष्टि'/24
तीन रंगो के ध्वज को लेकर अंबर
तक फहरायें- डॉ राजीव पाण्डेय/25-26
यही तो है वह युक्ति- अरुण भगत/26
नाग डसा ही करते हैं- प्रो पंढरीनाथ पाटील 'शिवांश'/26
मैं हिन्दी हूँ- तरुणा पुंडीर 'तरुनिल'/26
काली स्त्रियाँ- रश्मि विभा त्रिपाठी/27 स्त्री-पुष्पिता अवस्थी/28
आजादी के नारों में- नरेंद्र सिंह नीहार/28
दोहरी संस्कृति-डॉ कृष्ण कन्हैया /28
गजानन महाराज- अंकुर सिंह/29 घड़ी-पुष्प लता शर्मा/29
ऐ वतन मेरे वतन-निकिता कुसुम तिवारी/29
पर्यावरण प्रदूषण-डॉ ई गौतम सागर/31

गीत /गजल /कविता

मन के भीतर बैठ जुलाहा-डॉ प्रीति समकित सुराना/31
बुद्ध संदेह - बाबा कनपुरी/32 लक्ष्मी वंदना-बाबा कनपुरी/32
दोहे-डॉ रमनिवास 'मानव'/32
हम हैं हिन्दुस्तानी-डॉ जयप्रकाश मिश्र/33
साथ दे दो चलो जीत हम जाएँगे -विजय कन्नौजिया/33
सावन की इन्द्रधनुषी रंग - वंदना खुराना/33
एक अदद हाथ- विश्वास दुबे/35
आत्मविश्वास- डॉ मीनू पाण्डेय नयन /37
भोजपत्रों को कुरेदा जा रहा है-सन्नी भारद्वाज/37
हर रिसते का है मान बड़ा- डॉ मीनू परासर मानसी /38
संवेदनायें- योजना शाह जैन /39 कवितायें- डॉ मृदुल शर्मा/41
मेघ की पाती भू के नाम- श्याम सुंदर श्रीवास्तव 'कोमल'/41
आजादी का बरगद-समीर मूसा/50
अरसद मिर्जा की कवितायें- अरसद मिर्जा/50
मैं और मेरी कविता-ऐश्वर्या संपन्ना/50
गजल-ऋतुराज बिहोला/50 जौके इश्क-श्वेता सिंह उमा/51
डाकबंगला -डॉ किशोर सिन्हा/51
डॉ कन्हैया त्रिपाठी की पाँच कवितायें- डॉ कन्हैया त्रिपाठी/59

अनूदित साहित्य

किस्मत-मनीष श्रीवास्तव/49 माई- रमा शर्मा/52

लघुकथा /कहानी /रम्य रचना

अनीता कपूर की लघुकथायें- अनीता कपूर/8
दो लघुकथा- विजय कुमार तिवारी/9
सी एच बी इंटरव्यू- वाढेकर रामेश्वर महादेव/10-11
चहकी-डॉ शिल्पा शिल्पी/11 खूँटे की गाय-कल्पना मनोरमा/12
गुलमोहर- डॉ अन्नपूर्णा सिसोदिया/19
बचपन के दिन-अरविंद पथिक/19-21 उड़ान-रश्मि अभय/21-22
सोसल मीडिया का मंदिर-शालिनी वर्मा/22-23
सोनू की समझदारी- मीना चंदेल/23 एक है वंदना- चित्रा गुप्ता/34-35
अनसन- डॉ जयशंकर शुक्ल/36 डॉ नैना- डॉ उर्मिला सिन्हा/36
माँ की बात- उपासना सियाग/60-63

व्यंग्य

शरीफ आदमी- राम स्वरूप दीक्षित /38
चाटुकारिता-मीनाक्षी सुकुमारन /56

संस्मरण/ज्योतिष

ट्रेनिंग- कपिल कुमार/7 ज्योतिष-डॉ विनय भारद्वाज/8
हमारे समाज में वृद्धों की सेवा-इन्दरजीत शर्मा/40-41
अंक के चित्रकार/58

संपादकीय

बचपन में जब भी कभी कार्य में बाधाएँ आती तो हमें निरंतर डटें रहने की सलाह दी जाती । बड़े-बुजुर्ग यहीं कहते रहे कि 'करत-करत अभ्यास के २.' जिसका मतलब यही है कि हिम्मत नहीं हारना चाहिए ,सफलता निश्चित मिलेगी । सोच लेने से कार्य सिद्ध नहीं होते,करने से सब होता है । व्यक्ति अगर ठान ले और सकारात्मक होकर कार्य सम्पन्न करने के पीछे पड़ जाए तो दुनिया की कोई शक्ति नहीं है जो उसे रोक सके । बस अपने पर विश्वास रखो और कर्म करते रहो , एक न एक दिन उसका फल अवश्य मिलता है । फल मतलब कार्य की सफलता से है ।

आप सोच रहें होंगे कि ये सब कही गयी बातें मैं क्यों दोहरा रहा हूँ तो असली बात यह है कि इन बातों की सत्यता की साक्षात गवाह मैं हूँ और कार्य का फल है हिंदी की गूँज पत्रिका को दिन पर मिलता आप सभी का प्यार ।

वाकई आज जो सच हो रहा है वो मेरे लिए कभी एक स्वप्न जैसा था । मेरा सपना जापान से हिंदी की पत्रिका निकालने का था जो पूरा हुआ, चाहे रास्ते में हजारों कठिनाइयाँ आईं पर पूरा हुआ, हिंदी की गूंज जापान से लेकर भारत में ही नहीं पूरे विश्व में गूंजने लगी । धीरे-धीरे इसमें बहुत से बदलाव और सुधार भी किये गए जो आप सब को पसंद आये और अब हिंदी की गूंज पत्रिका के छपने का सपना भी पूर्ण हुआ । समय लगा, लेकिन पूर्ण हुआ। अब पत्रिका आपके हाथों में है । पहले आप सिर्फ इसे फोन या कंप्यूटर पर ही पढ़ सकते थे क्योंकि ई पत्रिका थी , यानि ऐसी पत्रिका जो कंप्यूटर पर ही लिखी जाये और कंप्यूटर पर ही पढ़ी जाये।इसमें छपने का , कागज का कोई काम नहीं होता, आज के समय में ई पत्रिका का चलन बहुत बढ़ गया है और ये सुविधाजनक भी है। क्योंकि फोन तो सब के हाथों में हर समय रहता है, इसलिए सुविधानुसार जब भी समय मिलें ई पत्रिका पढ़ी जा सकती है लेकिन.. पत्रिका अगर छपी हुई आपके हाथों में है तो इसे पढ़ने का मजा बहुत बढ़ जाता है , ये मेरी सोच है । इसलिए मैं इसे छपवाने के लिये यत्न कर रही थी और मेरी लगन , आप सब का सहयोग और प्रोत्साहन से मेहनत रंग लाई और हिंदी की गूंज पत्रिका आपके हाथों में है । अब आप चाहें तो इसे पुस्तक के रूप में पढ़े या ई पत्रिका के रूप में, ये आपकी अपनी सुविधा और पसंद पर निर्भर करता है । आप अपने सुझाव निम्नलिखित ई मेल पर जरूर भेजें, जो पत्रिका में छपा भी करेंगे, पत्रिका में से नया कॉलम जुड़ने जा रहा है । संपादक मंडल में भी कुछ बदलाव हुए हैं, जैसा कि आप सब के सुझाव थे , वैसा ही करने का प्रयत्न किया गया है ।आगे से सेहत के लिये एक कॉलम जरूर होगा । बच्चों की कलम का भी स्वागत है ।जो बच्चे अपनी विडियो बना कर भेजना चाहें वो निम्नलिखित फोन नंबर पर भेज सकते हैं, विडियों 2 मिनट से ज़्यादा लंबी न हो। आपकी विडियो हिंदी की गूंज यूट्यूब चैनल पर अपलोड की जायेगी, विडियो के शुरू में आप चैनल का आभार व्यक्त करना न भूलें ।

आपके सहयोग का एक बार फिर से बहुत बहुत आभार ।

■■

रमा शर्मा
मुख्य संपादक एवम संरक्षक
टोक्यो, जापान

Email:
hindikeegoonj@gmail.com
Ph N0 :
00818061658299

अपनी बात

विनोद पांडेय
गाजियाबाद

आज जब हिंदी की बात हो रही है तो ऐसा नहीं हो सकता कि आप सिर्फ हिंदी के लिए ही सोचें ? अंग्रेजी या अन्य भाषाओं पर इतनी गहन चर्चा क्यों ? अंग्रेजी का चलन बढ़ रहा है तो उसके कारणों विस्तृत चर्चा की आवश्यकता है कि वैश्विक स्तर पर हिंदी के साथ ऐसा क्यों नहीं हो सकता ? लेकिन चर्चा से अधिक कार्य की आवश्यकता है जो आप करेंगे नहीं क्योंकि वास्तव में आप भी हिंदी के लिए बस आज ही चिंतित है और जिसके लिए आप अन्य भाषाओं से तुलना कर अघोषित रूप से हिंदी को हीन भाषा बनाने पर तुले हैं ।

हिंदी हमारे लिए सबसे ऊपर है । कोई तुलना नहीं । एक घ ार में तमाम लोग होते हैं ,मित्र ,रिश्तेदार भी होते हैं ,किसी से हमारे मतलब भी सिद्ध होते हैं,उनकी संगत भी हमें अच्छी लगती है पर इसका मतलब यह तो नहीं कि माँ-बाप का कद कम हो जाए । हिंदी तो हमारे अस्तित्व में है ।

अंग्रेजी को बढ़ावा मिलने से हिंदी का कद घट रहा है ऐसा मैं तो कतई नहीं मान सकता । अंग्रेजी या अन्य भाषाओं से हिंदी को भयभीत होने की जरूरत नहीं है । हिंदी तो सबको साथ लेकर आगे बढ़ती है ,हिंदी वो विशाल उफनती नदी है जिसमें अन्य भाषाएँ के शब्द नहर के रूप में गिर कर स्वयं अपना अस्तित्व खोकर हिंदी के हो जाते हैं । आज की हिंदी में कितने उर्दू के शब्द हैं ,कितने पुर्तगाली हैं , ईरानी हैं ,फ्रेंच है इसका अंदाजा लगाना मुश्किल है फिर अंग्रेजी को भी हिंदी मय होने दो ना।

हिंदी को नुकसान उन लोगों से है जो स्टेटस और दिखावा के पीछे भागते हैं इसमें भाषा का कुछ लेना देना नहीं है स यह ठीक उसी प्रकार है जैसे घर का देसी व्यंजन और होटल का पिज़्ज़ा बर्गर । मैं कई लोगों को जानता हूँ जो अंग्रेजी जानने के बाद भी हिंदी में रुचि दि खाई क्योंकि हिंदी सिर्फ भाषा नहीं है यह हम भारतीयों की पहचान है जो हमारी संस्कृति में निहित है ।

अंग्रेजी भाषा को बढ़ावा देने के पीछे बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ हैं , विश्व के देशों के लोग हर भाषा तो सीख नहीं सकते इसलिए अंग्रेजी वैश्विक सम्पर्क भाषा के रूप में अस्तित्व में आ गयी । यह व्यापार की भाषा है । हिंदी संस्कार की भाषा है स हमने और हमारी सरकारों ने इस विषय में सोचा ही नहीं कि हिंदी को बाजार से कैसे जोड़ें ? सोचा इसलिए नहीं उस स्तर पर हम नीरस हैं ,हम पुरस्कार पाकर खुश होने वाले लोग हैं । भला कैसे बताएँ सरकार को कि हिंदी का विकास भी एक मुद्दा है । भला कौन पूछता कि हिंदी को बाजार में स्थापित करने की योजना क्या है ?

आइए हिंदी दिवस पर यह प्रण लीजिए कि किसी को कोसकर नहीं बल्कि हिंदी के लिए सकारात्मक कार्य करके इसे आगे बढ़ाएँगे । कुछ नहीं कर सकते तो अपने बच्चों को हिंदी जरूर सिखाएँ ,हिंदी साहित्य की किताबें पढ़ने को प्रेरित करें ,जहाँ अंग्रेजी की अति आवश्यकता न हो वहाँ हिंदी में ही बात करें । कोई गलत लिख रहा है ,कोई टूटी-फूटी लिख रहा है लिखने दीजिए ..कम से कम लिख तो रहे हैं ,आज नहीं तो कल उनमें अच्छी हिंदी की समझ पैदा हो ही जाएगी । उसके पहले कदम पर उसका मजाक उड़ा कर आप उसके लिए नहीं बल्कि हिंदी के लिए रास्ता बंद कर रहे हैं । आपको हिंदी अच्छी आती है तो सीखने वाले को सिखाइए ,उत्साह बढ़ाइए ,मजे मत लीजिए । आधा हिंदी ,आधा अंग्रेजी बोल रहा है तो भी स्वागत है । वो जानबूझ कर ऐसा नहीं बोल रहा है मित्र ,गौर कीजिए वो जो अंग्रेजी का शब्द बोल रहा है आज उसका हिंदीकरण हो चुका है । और हिंदीकरण होने दीजिए हिंदी का ही भला है ।

छोटे-छोटे सकारात्मक काम है वहाँ ऊर्जा लगाइए और हिंदी को पीड़ित भाषा के तौर पर नहीं बल्कि समृद्ध भाषा के तौर पर देखिए ,आप का नजरिया ही हिंदी को बहुत आगे ले जाएगा । जय हिंदी,जय हिंद।

■■

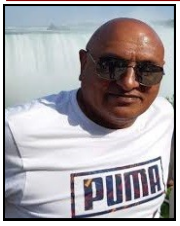

कापिल कुमार
बेल्जियम

ट्रेनिंग

जीवन में सीखी गयी कोई भी चीज व्यर्थ नहीं जाती स कभी न कभी आपको लगता है कि आपने जो सीखा उसी की बदौलत आज आप समस्याओं को पार कर पाएँ हैं ।मैदानी और सुरक्षित स्थानों पर नौकरी करने के कारण मुझे कभी आपदा मैनेजमेंट की ट्रेनिंग की जरूरत समझ में नहीं आ रही थी लेकिन आदेश अहफिसियल हों तो भला कौन टाल सकता था ।

हमेशा से ही घूमने का दोस्तों के साथ वक्त बिताने का शौक रहा है,काम की तरफ से ट्रेनिंग पर जाना लगता था कि चलो फिर से मस्ती का मौका मिला ,सोचते थे कि कुछ देर अटेंड करेंगे फिर दोस्तों के साथ मस्ती करेंगे किसी रेस्तरां मे बैठेंगे , ऐसा ही अवसर हाथ लगा जब आपदा मैनेजमेंट की ट्रेनिंग पर जाने का खत मिला ,तुरन्त दोस्तों को फोन किया कौन-कौन जा रहा है और रेस्तरां के प्रोग्राम की रूप रेखा भी फोन पर तैयार हो गई ।वो दिन भी आ गया जब ट्रेनिंग पर जाना था ,सबने अपनी अपनी कार फ्री पार्किंग में पार्क की और सिर्फ एक कार के साथ रवाना हो गए ट्रेनिंग स्थल की ओर ।सब दोस्तों ने ये ही सोचा था हर दफा की तरह इस दफा भी आधा दिन की हाजिरी लगा कर दोपहर को निकल जाएँगे।

मगर हमारे सपनो पर तब पानी फिर गया जब ट्रेनिंग देने वाला अफसर सामने आया वो और कोई नही था हमारा ही बिग बहस था ,फिर सबने प्लानिंग की कोई बहाना बनाकर लंच के बाद निकल जाएँगे मगर बहस तो हमारा इरादा जानता था शायद इसलिए उसने घोषणा की ट्रेनिंग दो पार्ट में होगी ,पहले में थ्योरी फिर प्रैक्टिकल और दोपहर आखिर में एग्जाम ,जो उस एग्जाम में पास होगा उसे ही ट्रेनिंग का सर्टिफिकेट मिलेगा ,और ये सभी के लिये अनिवार्य है, हमारे सभी सपनो पर पानी फिर गया ,मन ही मन सभी दोस्त बहस को कोस रहे थे ,मगर मजबूरी थी पूरी ट्रेनिंग पर ध्यान दिया ,और जैसे तैसे सभी दोस्तों ने एग्जाम भी पास कर लिया , सभी ने उसकी सेलेब्रेशन काफी और चहकलेट से की, और फिर से अपने अपने कार्य मे मशगूल हो गए। यकीन मानिए इस ट्रेनिंग में कोई दिलचस्पी नहीं थी लेकिन करना पड़ा ।

इस घटना के कुछ साल बीतने पर पिछले साल जब गर्मियों की शुरुआत होने लगी थी ,मैने पत्नी ने अपने काम पर 10 दिन की छुट्टियाँ लिखा ली थी ,हमारा प्रोग्राम बेटे और उसकी मंगेतर के साथ अपनी कार से स्वीटजरलैंड में छुट्टियाँ मनाने का प्रोग्राम था, कहटेज बुक था।

तकरीबन 8 घण्टे के सफर के बाद स्वीटजरलैंड पहुँचे , तीन कमरे थे और हम चार ,बच्चो ने अपनी पसन्द का कमरा लिया जिससे पहाड़ दिख रहे थे ,हमे सिर्फ बाहर वाली सड़क ही खिड़की से नजर आ रही थी , जल्दी फ्रेश होकर हमने पास के पहाड़ पर ट्रॉली से जाने का प्रोग्राम बनाया ,क्योंकि कॉटेज के नजदीक था वरना तो ड्राइव से इतना थके थे मन ही नही था,खैर पहाड़ की चोटी पर पहुँचकर जो नीले पानी की झील देखी सब थकान भूल गए, बस लग गए फोटो पर फोटो खींचने।

अँधेरा होने लगा था वापस कॉटेज में हम पहुँच गए और खाना जो साथ लाये थे वो ही गर्म करके खा लिया ,बाहर बिजली कड़क रही थी बरसात भी पहाड़ों वाली अपने चरम पर थी ,हम सभी ने मीठा खाने के बाद लूडो खेलना शुरू किया ,तकरीबन रात के 11.30 बज चुके थे ,तभी बेटे ने कहा पापा देखो दरवाजे से पानी अंदर आ रहा है, मैने देखा कि दरवाजे के नीचे से पानी के साथ मिट्टी भी आ रही है मैने पर्दा हटाकर बाहर झाँका तो मेरे होश उड़ गए बाहर पानी के साथ मिट्टी पत्थर ,कीचड़ इतनी ऊपर तक आ चुकी थी कि दरवाजे का आधे से ज्यादा हिस्सा डूब चुका था मतलब साफ था उस तरफ सिर्फ मौत थी किसी भी वक्त दरवाजा टूट सकता था ,मुझे आपदा मैनेजमेंट ट्रेनिंग की बाते याद आने लगी कि घबराना बिल्कुल नही नहर्मल रहना है ,मैने उन्हें कुछ नही बताया और बेटे को कहा एमरजेंसी को फोन करो , वो फोन मिलाने लगा मैने धीरे से उसे समझा दिया और खुद बाहर निकलने का रास्ता देखने के लिए अपने कमरे में गया ,वहाँ की खिड़की से झाँकने के बाद कुछ उम्मीद दिखी की इधर से कूद कर बचा जा सकता है ,जल्दी अंदर आकर बच्चो से कहा कि यहाँ से जल्दी निकलो मेरे कमरे की खिड़की से।

मगर तभी अचानक अँधेरा छा गया दरवाजे खिड़की सब टूट गए पानी ने हमको बहुत जोर से दीवार के ऊपर दे मारा , मगर होश बाकी था ,देखा कि एक अलमारी पत्नी के ऊपर गिरी उसे हटाकर उसको निकाला, बच्चो को आवाज लगाई मगर कोई जवाब न मिला पत्नी बस बच्चो का नाम लेकर उधर जाना चाहती थी जिधर अँधेरा और मौत के सिवा कुछ न था,मुझे ट्रेनिंग की बातें याद थी पहले खुद को बचाओ फिर औरों के लिए मदद लेकर आओ बस पत्नी का हाथ कसकर पकड़ा और खिड़की से छलाँग लगा दी ,बस पत्नी का हाथ पकड़ कर चीख रहा था हेल्प , ऊँची जगह पर पहुँचा तो सिर्फ एक आदमी मदद को आगे आया मैने बताया कि मेरा बेटा और उसकी मंगेतर अंदर फँसे हैं उनको निक. ालना है मैं मेरी पत्नी और वो अंजान मददगार नीचे एक दूसरे का हाथ पकड़कर वापस गए क्योंकि पानी का बहाव बहुत तेज था , तभी अँधेरे में एक किरण दिखाई दी मेरे बेटे का साया और उसके एक हाथ मे मोबाइल जिसकी टहर्च जो अहन थी और दूसरे हाथ से उसने अपनी मंगेतर को पकड़ा था और वो रास्ता ढूँढ रहा था मैंने कहा हमारी आवाज की दिशा में आए ,थोड़ी देर में वो दोनों हमे नजर आए मगर बीच मे पानी गहरा और बहुत स्पीड के साथ, उस अंजान आदमी की हाइट ऊँची थी इसलिए वो आगे गया मेरा एक हाथ पकड़ कर,मेरी पत्नी ने एक हाथ मेरा हाथ थामा दूसरे से एक लोहे के खम्बे को पकड़ा ,पहले बेटे की मंगेतर को बाहर निकाला फिर बेटे को निकाला ,इस बीच उस अंजान आदमी का बेलेंस बिगड़ा और मेरा उसके हाथ छुट गया वो पानी के साथ बहने लगा लेकिन मेरे बेटे ने मेरा हाथ थामा और मैने कोशिश करके फिर से उसका हाथ पकड़ लिया और उसे भी बाहर खिंच लिया ,इतने में हेलीकहप्टर की आवाज नजदीक पहुँच चूकी थी,उसमें से कमांडो उतरे और हमे हेलीकहप्टर से हहस्पिटल पहुँचा दिया गया , जहाँ हमारी चोटों का इलाज किया गया ,मैने वापिस जाकर दोस्तों को सारे हादसे के बारे में बताया कि किस तरह से ट्रेनिंग ने बचाया ,फिर सभी ने कसम खाई की कोई भी ट्रेनिंग को मजाक में नही लेंगे ,कब क्या काम आए कुछ पता नही .....! ■■

अनीता कपूर की लघुकथायें

अनिता कपूर
(क्यालिफोर्निया अमेरिका)

अमिया

अभी अभी मेहता जी ने ड्राइंग-रूम में घुसते ही चारों तरफ निहार कर कहा.... "रैना जी ड्राइंग-रूम है तो बस आपका....इतना सुंदर, सुसज्जित तथा रख-रखाव वाला, एक एक वस्तु और शो-पीस यहाँ तक फर्नीचर भी लगता है जैसे अभी बोल उठेंगे।"

भर्राई सी धीमी और बुझी सी आवाज में रैना जी ने एक गहरा श्वास लिया और बोले..."कभी तो बोल उठेंगे....सोचकर इसी आस में एक-एक को बारी-बारी से निहारता रहता हूँ। शायद गलती से ही सही, कभी पूछ ही लें ....क्यों रैना जी कैसे हैं...बेटे के पास अमेरिका आ कर खुश तो हैं न?....

"तो आपका जवाब क्या होगा रैना जी?"

"पता नहीं भारत में तो एक बार दादाजी ने अमिया उगाई थी...तो चाचा जी ने उन्हे तंग करते हुए कहा था....पिताजी देखना आपने अमिया बोयी है तो यह ही उगेगी कसैली सी छोटी सी....आम नहीं उगने वाले"।

पर उगे तो आम ही थे मीठे और रसीले। यही तो प्रकर्ति का नियम है।"

सुना था, विदेश में नियम विपरीत काम करते हैं। जैसे यहाँ लेफ्ट हैंड ड्राइव हैं आदि-आदि। फिर भी मैंने यहाँ मीठा आम ही रोपने को भेजा था जो अब आदमी बन गया है अमिया जैसा।"

■■

विसर्जन

"अंकल जी नमस्ते....आप यहाँ कैसे?

आज मैंने सैनी अंकल को बहुत दिनों बाद अचानक यूं देखा तो आगे बढ़कर बुलाये बिना रहा नहीं गया। मैंने इस वर्ष गणेश जी घर में बैठाये थे और पूजा की सामग्री लेने आई थी। अमेरिका में मेरे घ ार से दस मिनट की दूरी पर है बस यह पूजा की दुकान, जहां सब तरह का सामान मिल जाता है।

"सैनी अंकल आप बहुत उदास दिख रहे हैं आज, सब ठीक तो है न?"

"हाँ बेटी सब ठीक ही है"। उनकी उदासी और अकेलापन उनके चेहरे से साफ पढ़ा जा सकता था। और मैं तो वैसे भी उनके बारे में पहले से जानती थी। पत्नी से तलाक हुए दस वर्ष बीत चुके थे। दूरियाँ इतनी बढ़ गईं थी की बेटे की शादी पर भी बेटे और पत्नी ने उन्हे नहीं बुलाया था। बेटे के इस बर्ताव से बस उनका दिल टूट गया था। "अंकल जी आप भारत क्यों नहीं वापस लौट जाते वहाँ भी तो आपके कुछ दोस्त हैं न...शायद उनके साथ वक्त बिताकर आपका अकेलापन दूर हो जाए"। "बेटी वृद्धावस्था में अकेलेपन का चेहरा एक जैसा ही हो जाता है चाहे कोई भी देश हो.....वे सब भी उतने ही अकेले हैं"....यह कहते कहते उनका चेहरा दर्द से ऐंठने सा लगा। मैं सोच में पड़ गयी की उन्हे कैसे सांत्वना हूँ। कुछ देर चुप रह कर अंकल सैनी बोले "सारा परिवार तो इधर है, बिछड़ने के बाद भी कभी-कभार इधर-उधर दूर से देखने को मिल जाता है। फेसबूक पर भी उनको मैंने ढूंढ लिया है। यहाँ सरकार वृद्धों के लिए खास सहूलियते देती हैं तो लगता है हम जैसे अकेले बुजुर्ग यहाँ ज्यादा सुरक्षित हैं"।

बात करते करते मैंने अपनी खरीदारी पूरी कर ली थी। अंकल जी अक्सर यहाँ के स्थानीय मंदिर में भी जाते रहे हैं। वहाँ भी मेरी उनसे अक्सर नमस्ते हो जाती थी। उस समय उनके चेहरे पर हमेशा एक शांति ही दिखती थी। मेरे मुंह से अनायास कुछ शब्द ऐसे निकले जिसको सुनकर उनको जैसे जीने के लिए कोई मकसद मिल गया था। मैंने कहा, "अंकल सैनी, जैसे मैं गणेश जी का कल विसर्जन कर रही हूँ इसी विश्वास के साथ कि, मेरी सारी विपदाएँ गणपती बप्पा ने हर ली हैं और वो मुझे आने वाले साल के लिए आशीर्वाद दे कर जा रहें है। वैसे ही आप हर रोज मंदिर में अपनी सेवा दे कर अपने अकेलेपन का विसर्जन कर दीजिये....काले बादल छँटने लगेंगे।"

■■

ज्योतिष

मानव जीवन के विकास के साथ ही ज्योतिष शास्त्र का भी विकास हुआ है।मानव की जिज्ञासा भरी प्रवृति ने ज्योतिष शास्त्र के बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। साहित्य से इसका गहरा संबंध रहा है।कहा गया है कि ज्योतिषम् नेत्रमुच्यते अर्थात वेद और सृष्टि की जानकारी के लिये ज्योतिष का ज्ञान आवश्यक है।ज्योतिष शास्त्र का अर्थ है, प्रकाशवान पिंडों की गतिविधियों को बताने वाला शास्त्र।वेदों से ही ज्योतिष का उद्भव हुआ है।मुण्डकोपनिषद के अनुसार दो विद्यायें हैं- परा और अपरा।शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष - ये अपरा विद्यायें हैं। व्याकरण वेद का मुख, ज्योतिष नेत्र ,निरुक्त कान, कल्प हाथ , शिक्षा नाक और छंद पैर हैं। ज्योतिष के तीन अंग हैं, सिद्धांत , संहिता और होरा।भारतीय आचार्यों द्वारा रचित ज्योतिष की पांडुलिपियों की संख्या एक लाख से भी अधिक है।आचार्य वराहमिहिर के योगदान को कोई नहीं भूल सकता है। वाल्मीकि और तुलसी ने भी अपनी रचनाओं में ज्योतिष को महत्वपूर्ण स्थान दिया है।आर्यभट्ट, पृथुयश (वराहमिहिर के पुत्र), कल्याण वर्मा, लल्लाचार्य, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त, श्रीधराचार्य, वित्तेश्वर और मुंजाल ने इस क्षेत्र में अपना योगदान दिया और इनकी रचनायें उच्च कोटि की हैं। साहित्य और ज्योतिष का लक्ष्य भी एक ही है, मानव कल्याण। वस्तुतः साहित्य में भाव होता है और ज्योतिष में इन भावों का विश्लेषण तथा भावी परिणामों का आकलन होता है।

डॉ विनय भारद्वाज
संकायाध्यक्ष,
मानविकी, मगध विश्वविद्यालय,
बोधगया तथा ज्योतिषी

दो लघुकथा

पेड-पौधे, आसमान के कागज पर प्रकृति की चित्रकारी हैं

दुआर के सामने,वटवृक्ष और बंसवारि के उस पार नीम का विशाल पेड़ है,बगल में सटा हुआ कनैल और थोड़ी दूरी पर पाड़े चाचा का बेल का पेड़। धीमान अक्सर बेल की पत्तियाँ तोड़ लाता,दादी गुड़ के साथ कूट-पीसकर गिलास में भर देती और वह पी जाता। यह उसके पेट झरने का इलाज है। धीमान का पेट शुरु से कमजोर है और दादी द्वारा यही उसकी दवा है।

दादी वटवृक्ष तले देवालय में पूजा करती और वह नित्य उनके साथ हो लेता। कभी-कभी अकेले भी धीमान देवालय की सीढ़ियों पर जा बैठता और बिना किसी प्रयोजन के आसपास देखता-निहारता रहता। दादी समझती कि वह गुमसुम बैठा रहता है और रोकने की कोशिश करती। धीमान मन ही मन खुश होता,दादी समझ ही नहीं पा रही कि मैं क्या सोच रहा हूँ,क्या देख रहा और अनुभव कर रहा हूँ। धीमान ने कुछ ऐसा सीख लिया है जो दूसरे बच्चे नहीं जानते। सीढ़ियों पर बैठते ही उसे सामने का आसमान दिखता। यह देखना कुछ भिन्न अनुभूति देता मानो आसमान कोई बड़ा सा कागज का टुकड़ा है,उसपर नीम,बेल जैसे कोई आकृति। पीछे बहुत दूर का बगीचा भी कोई आकार लिए उभर आता और धीमान कहीं खो जाता। सीढ़ी पर बैठना,आसमान का कागज होना,पेड़ों का भिन्न-भिन्न आकृतियों में उभरना धीमान अपनी जागती आँखों से देखता और किसी आलोकमय आनन्द में डूब जाता। वह चाहता कि दादी भी उसके इस अनुभव को समझे,समझाना भी चाहता परन्तु समझा नहीं पाता। बहुत सालों बाद उसने पढ़ा,किसी कवि ने लिखा था,पेड़,वनस्पतियाँ,हरियाली आसमान की चादर पर लिखी हुई कविताएं हैं। उसने कहा,"नहीं, आसमान के कागज पर प्रकृति द्वारा बनाई चित्रकारी है, जिसे देखकर भी लोग नहीं समझते।"

■■

पत्र-पेटिका में प्रेम-पत्र

हम दोनों कोलकाता में उस चौड़ी,साफ सुथरी सड़क से गुजर रहे थे जो शीघ्र ही हमें हमारे कालेज तक पहुँचाने वाली थी। ऐसा नित्य होता था,मैं अपने मुहल्ले से मोड़ तक पहुँचता था और रतन लाल चौबे जी उसी मोड़ पर बस से उतरते थे। एक-दूसरे को देखते ही प्रसन्नता छा जाती थी। मौसम कोई भी हो,हमें मोड़ पर मिलना ही था और शेष यात्रा कलियों,फूलों तितलियों और भौंरों को देखते हुए पैदल करनी होती थी। हम बीएड के छात्र थे और शिक्षक बनना चाहते थे। रतन लाल चौबे जी शादी-शुदा,एक बच्चा के पिता थे और कोलकाता में रिश्तेदार के घर रहते हुए ट्यूशन करके जीवन यापन कर रहे थे।

विद्यालय में पहले ही दिन हम दोनों भोजपुरिया की जान पहचान हो गयी और हमारी मित्रता धीरे-धीरे गहरी व प्रगाढ़ होती गयी। यह हमारी बोली और मातृभाषा का प्रभाव था। चौबे जी में बहुत सी विशेषताएं हैं,जल्दी ही मेरी समझ में आ गया। हमारी बीएड की कक्षा में दो-तिहाई,हर वय यानी जवान से लेकर अधेड़ उम्र तक की महिलाएं थीं और चौबे जी की पुतलियों में अद्भुत चमक फैली रहती थी। उनका देखने,मुस्कराने का अंदाज रोमांचित करता था और उनकी टिप्पणियाँ सबको हँसाती रहती थीं। चौबे जी जीवन्त तो थे ही, देखते-देखते सबके प्रिय बन बैठे। कोई-कोई छात्रा उनसे चुहलबाजी भी कर देती और वे मुस्कराते रहते थे।

वे बस से उतरे तो कुछ उदास से लगे और हम दोनों साथ-साथ विद्यालय की ओर चल पड़े। उनके चेहरे की गम्भीरता को देखते हुए मुझे मौन रहना ही उचित लगा। कुछ दूर आगे बढ़ने पर सड़क के किनारे बड़ा सा लेटरबाक्स था,चौबे जी उसके पास रूक गये।

उन्होंने उस लेटरबाक्स को हाथ जोड़कर प्रणाम किया और परिक्रमा करने लगे। तीन चक्कर लगा लेने के बाद उन्होंने जयकारा किया और लेटरबाक्स की ओर मुँह करके खड़ा हो गये। उत्सुकता के साथ पैदल चलते कुछ लोग ठहर गये। भीड़ बढ़ती गयी। दूर-दूर तक गाड़ियों का जाम लग गया।

उन्होंने पाकेट से एक पोस्ट कार्ड निकाला,बहुत भावपूर्ण ढंग से विह्वल होकर देखा,सहलाया और लेटरबाक्स को सम्बोधित करना शुरु कर दिया," भारत सरकार के पोस्ट अहफिस की,हे परम पूज्या पत्र-पेटिका! मैंने अपनी प्राण-प्रिया के चिट्ठी का जवाब इस पोस्ट कार्ड में लिखा है। उसने दुख-दर्द और पीड़ा के साथ अपना प्रेम भेजा है,मुझे मालूम है, मेरे बिना वह कई गुना अधिक दुःसह दुख अनुभव करती होगी। मैं अपना दुख किससे कहूँ? मिलन के सुख भरे दिन और रातों की स्मृतियाँ चौन लेने नहीं देतीं। हे भगवान! किसी भी प्रेमी-प्रेमिका को या पति-पत्नी को ऐसे विछोह के दिन मत दिखाना। कालिदास के मेघदूत की तरह मानते हुए आपको अपनी व्यथा और प्रेम समर्पित कर रहा हूँ। उम्मीद है,मेरा प्रेम मेरी प्राण-प्रिया तक शीघ्र पहुँचा देंगे। यह पत्राचार ही हमारे जीने का सहारा है और आपका ही आसरा है। हे पत्र-पेटिका! मेरी ध र्म-पत्नी,मेरी प्राण-प्रिया बहुत सुकोमल और सुन्दर है। उसमें ही मेरा प्राण बसता है। उसे विश्वास दिलाइयेगा,निराश होने की जरुरत नहीं है,हमारा पुनर्मिलन अवश्य होगा।"

उनकी आँखें भर आयीं, मानो अपना हृदय निकालकर सौंप रहे हों। उन्होंने पोस्ट कार्ड को पत्र-पेटिका में डाला और भावुक मन पीछे मुड़कर विद्यालय की ओर बढ़ चले।

बहुत लोगों को कुछ भी समझ में नहीं आया। उन्होंने सब कुछ अपनी भाषा में कहा था। साथ पढ़ने वाली कुछ छात्राएँ भी खड़ी थीं। लोग मेरी ओर प्रश्न सूचक दृष्टि से देख रहे थे। लगा,हवा,पानी और मौसम में नमी व्याप्त हो गयी है। कुछ को हँसी आ रही थी, कुछ प्रेमानुभूति में डूब-उतरा रहे थे। साथ पढ़ने वाली उनकी प्रिय छात्रा ने मुस्कराकर कहा,"चौबे जी बहुत गहरे प्रेमी हैं, काश------।"

■■

विजय कुमार तिवारी
भुनेश्वर (उड़ीसा)
भारत

सी.एच.बी. इंटरव्यू

राम विज्ञापन आया है, सहायक प्राध्यापक पद हेतु विकास ने कहा।
पद पर्मानेंट है या कॉन्ट्रैक्ट बेसिस पर राम ने पूछा।
कॉन्ट्रैक्ट बेसिस पर विकास ने कहा।
"पर्मानेंट पद होता तो भी क्या फायदा विकास, मेरी हैसियत नही पैसे भरने की।"
"मतलब, मैं नही समझा राम।"
धीरे,धीरे सब समझ आएगा,यह शुरुआती दौर है तुम्हारा।
"राम , मैंने एम . ए. ,एम .फिल.,सेट,पीएच-डी आदि शिक्षा हासिल की है । मैं गुणवत्ता के बलबुते पर सहायक प्राध्यापक जरूर बनूंगा, विकास ने कहा।"
विकास, हमारे पहले भी बहुत से छात्र ने नेट, सेट, पीएच-डी आदि तक शिक्षा प्राप्त की हैं, लेकिन वे सहायक प्राध्यापक नही बन पाए।
आखिर क्यों राम?
वही कारण,पैसा और राजनीतिक पहचान न होना।
पैसा और राजनीतिक पहचान किस लिए? सहायक प्राध्यापक बनने के लिए।
मुझे कुछ भी समझ नही आ रही तुम्हारी बात।
जो है साफ- साफ बता दो राम।
"तो फिर सुनो विकास,सहायक प्राध्यापक बनने के लिए कम से कम पचास लाख लगते है । इसी के साथ विधायक, सांसद की सिफारिश भी। एक-दो कॉलेज में गुणवत्ता के बलबुते पर सहायक प्राध्यापक पद का चयन होता होगा, बाकी सब जगह पैसा और सिफारिश चलती है।"
राम, मैं कहाँ से लाऊं इतना पैसा।
"विकास, मेरी भी परिस्थिति तुम्हारे जैसी है, मैं भी इतने पैसे नही भर सकता । मैं घर और खुद का अपना शरीर बेच दूं तो भी मैं पचास लाख रुपए इकट्ठा नही कर सकता । मां, बाप को मुझ से बहुत उम्मीद है । लेकिन मैं पूरी नही कर पा रहा हूं, इसका सबसे ज़्यादा दुःख है। मैं उन्हें सच बात बताकर और दुःखी नही करना चाहता।"
मेरी भी वही अवस्था है राम। किंतु हम संघर्ष जारी रखेंगे । बदलाव जरूर होगा, आने वाले समय में। वह कॉन्ट्रैक्ट बेसिस के पद का फार्म कब भरना है राम?
फार्म भरने की अंतिम तारीख क्या है ?
दो दिन बाकी है, लेकिन हम जल्द भर डालेंगे राम।
कल ही फार्म भर डालेंगे विकास,लेकिन एक बात कहनी थी।
बताओ राम।
तू मुझे नकारात्मक विचार का कहने की संभावना है।
बता तो सही।
"सी.एच. बी. इंटरव्यू के लिए भी सिफारिश लगती है, यह बात मेरे सुनने में आयी है, सच क्या है मुझे भी मालूम नही।"
राम, सी. एच. बी. इंटरव्यू के लिए सिफारिश, यह सच नही हो सकता। अच्छा। तो फिर हम अच्छी तरह इंटरव्यू की तैयारी करेंगे। पर्मानेंट पद नही तो ना सही लेकिन सी. एच. बी. पद तो हासिल करेंगे विकास।
फार्म भर दिया,देखते- देखते इंटरव्यू की तिथि आई ओर एक जगह के लिए पच्चीस फार्म आए।
राम , इंटरव्यू की तिथि तेरह अगस्त है। तुम्हारी तैयारी अच्छे से हुई है न, विकास ने पूछा।
हां, हुई है देखते है क्या होता है विकास?
इंटरव्यू के दिन कॉलेज में जल्द जाना होगा राम, विकास ने कहा।
कितने बजे विकास?
सुबह आठ बजे।
जी। जरूर।
विकास कॉलेज बढ़िया है । हमें पढ़ाने का अवसर मिला तो हम अच्छी तरह तैयारी करके छात्र को पढ़ाएंगे।
हां, वह तो करेंगे राम।
लेकिन विकास, दो जगह के लिए पच्चीस फार्म है।
हमारी तैयारी है ओर पात्रता भी,तो हमारा ही चयन होगा राम। फार्म चाहे कितने भी क्यों न हो।
विचार करना छोड़ दो राम,अभी तेरा ही नंबर है साक्षात्कार के लिए। बेस्ट ऑफ लक तुझे।
सेवक ने जोर से कहा,"राम शिरवाडकर नामक छात्र है तो इंटरव्यू हॉल में जाए।"
"राम हॉल के दरवाजे के पास गया ओर कहा, अंदर आऊं सर।"
सर ने काजू,बादाम खाते -खाते कहा-" आइए, बैठिए। आपका शुभ नाम?"
राम शिरवाडकर।
आपकी शिक्षा?
एम.ए.,एम फिल,सेट,नेट, पीएच-डी आदि हूं।
अच्छा । आपको कितने साल का पढ़ाने का अनुभव है?
कुछ भी नही सर।
आप में कमियां है शायद।
सर, मुझे मेरी कमियां बताइए, मैं उस में सुधार करूंगा।
"मुझ से जबान लड़ाता है । यही कमियां है तुम्हारी।"
मतलब, मैं नहीं समझा सर।
"तेरा इस कॉलेज में और मेरे पहचान के किसी भी कॉलेज में चयन नही होने दूंगा मैं । समझा तू। निकलो बाहर,हो गया तुम्हारा इंटरव्यू।"
जी सर।
राम बाहर आया ओर जोर से सुकुन की सांस ली।
विकास ने पूछा,"राम कैसा रहा इंटरव्यू।"
अच्छा रहा,राम ने कहा।
विषय संबंधित क्या पुछा राम?
"बहुत कुछ पूछा, तैयारी की थी वह सार्थक हुई।"
विकास तुझे भी बेस्ट ऑफ लक।
आखिरकार इंटरव्यू संपन्न हो गया। सब अपने -अपने

चहकी

घर जाने लगे थे। कैंपस में चर्चा हो रही थी कि यह जगह पहले से मैनेज थी। इस नौकरी के लिए कुछ बच्चों ने विधायक, सांसद, मंत्री आदि की सिफारिश लायी थी, उन्हीं का चयन होना निश्चित है। यह सुनकर राम और विकास निराश हो गए।

राम! तुम ने जो कहा था, वही सच हुआ। जाने दो विकास,हम फिर से तैयारी करेंगे।

''तैयारी करके क्या फायदा राम,वे गुणवत्ता को कहा महत्व देते हैं, वे जाति- बिरादरी,सिफारिश आदि को देखते हैं। उन्होंने मेरे रिसर्च पेपर और सृजनात्मक साहित्य को देखा तक नही। राम हम सहायक प्राध्यापक कभी नही बन सकते।''

ऐसी नकारात्मक बातें मत करो विकास, हमें इन व्यवस्था को बदलना है।

''कैसे बदलेंगे व्यवस्था? शिक्षण संस्था या तो राजनेता की है या उनके पहचान वालों की । वे ही लोकसभा, विधानसभा के सदस्य हैं, शिकायत करें तो किनके पास।''

विरोधी पक्ष के पास।

''सभी की मिली भगत है राम। शिक्षा को उन्होंने व्यवसाय बना रखा हैं। उदाहरण के रूप में जैसे की रयत शिक्षण संस्था, पीपल एजुकेशन संस्था आदि जो आदर्श संस्था थी। उन संस्था के उद्देश्य को, विचार को खत्म किया वर्तमान व्यवस्था ने।''

विकास,हम जैसे सुशिक्षित व्यक्ति ने हार मान ली तो कैसे होगा।

''सही है राम तेरा। हम भ्रष्ट व्यवस्था के खिलाफ अंत तक लड़ेंगे। हमारी जो अवस्था हुई है वैसी आनेवाली पीढ़ी की नही होने देंगे।''

राम, हम सरकार से मांग करेंगे कि सभी राज्यों की शिक्षक भर्ती आयोग के माध्यम से ही हो। जब तक हमारी मांग पुरी नही होती तब तक हम निःस्वार्थ भाव से निरंतर। लड़ते रहेंगे । जब आयोग के माध्यम से सहायक प्राध्यापक पद का चयन होगा, तब शिक्षा का स्तर भी अच्छा होगा। ओर महात्मा फुले, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर , राजर्षि शाहू महाराज, कर्मवीर भाऊराव पाटिल आदि महापुरुषों का शिक्षण विषयक अधूरा सपना पूरा होगा....

■■

• **वाढेकर रामेश्वर महादेव**
हिंदी विभाग,डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर
मराठवाडा विश्वविद्यालय
औरंगाबाद- महाराष्ट्र-४३१००४

जीवन के ६० बसंत मानो पलक झपकते ही बीत गए।अपनी जिम्मेदारीदायो को पूरा करते करते अब जाकर सुधा और कमल अपना एक छोटा सा आशियाना बना पाये थे। ''अपना घर''यही नाम दिया था उन्होंने गृहप्रवेश के दिन अपने घर को।सुधा के तीनो बेटे बहुएं पोते पोती सारे रिश्तेदारों से वो बड़ा सा घर भी छोटा सा लगने लगा था ।फिर बारी बारी सब चले गए और रह गए सिर्फ सुधा कमल और चहकी ।अरे हाँ चहकी इसके बारे मे तो बताना भूल ही गयी मैं। गृह प्रवेश के अगले दिन सुबह जब सुधा वरांडे में झाड़ू लगा रही थी उसने देखा एक गुरैया चुन चुन कर तिनके ला रही है और अपना घोसला बना रही थी।जाने क्यों सुधा को बहुत प्यार आया उस पर बिलकुल उसे अपनी जैसी ही लगी वो ।ऐसे ही तो उसने भी अपना घर बनाया था।उससे घोसला हटाया न गया यद्यपि मुख्य द्वार के बिलकुल सामने से वो दी खता था घर की शोभा में काले धब्बे सा।पर सुधा को गुरैया की चहक भाने लगी ।एक वो और सुधा दो ही बोलते थे दिनभर बाकी तो खामोशी थी कमल को कम ही बोलना पसंद था।रोज सुबह उठना गुरैया के लिए पानी दाना रखना बिखरे तिनको को सवारना जैसे दैनिक दिनचर्या बन गयी थी सुधा के लिए ।एक दो बार कमल ने टोका भी फिर सुधा का लगाव् देखकर वो चुप ही हो गए।सुधा ने गुरैया की मीठी मीठी चहक से मोहित होकर उसका नाम चहकी रख दिया।खूब बातें करती थी वो चहकी से अपने दिल की हर बात जैसे वो सब समझ रही हो।आज जाने क्या विशेष था मुह अँधेरे से ही चहकी की बहुत तेज आवाज सुनाई दे रही थी सुधा डर गयी नंगे पैर भागी अरे कही बिल्ली तो नहीं आ गयी ।पर जब रौशनी डाली घोसले पर तो मानो सारा बदन खुशी से सिहर उठा। दो नन्ही चहकी झाँक रही थी घोसले से ।वो सोचने लगी उफ मातृत्व की खुशी और पीड़ा सामान ही तो है हम मनुष्यों और पक्षियों में।इसी लिए चहकी पीड़ा भरी खुशी से चहक रही थी।अब तो सुधा की व्यस्तता और भी बढ़ गयी परिवार जो बढ़ गया था।दिन में सौ चक्कर लगाना कही बिल्ली ना आ जाए।समय पर दाना पानी रखना।चहकी भी सुधा के प्यार को समझती थी अब तो उसके कांधो और हथेलियों पर बैठ भी जाती थी घंटो सुधा की गोद में खेलती थी।सुधा के मन में कई बार खयाल आया उसने कमल से कहा भी की चहकी का घोसला बिजली के मीटर के ऊपर है हो सके तो मीटर वहां से हटा दो घोसला तो हटा नहीं सकते।कमल ने कहा करवा दूंगा फिर बड़े बेटे का होली पर घर आने का सुन सुधा तैयारियों में जुट गयी , कमल भी व्यस्त हो गए।बेटा बहू बच्चे सब आये।घोसला देखकर बेटा तो बिलकुल ही नाराज हो गया कहने लगा ये क्या मम्मी नए घर पर दाग लग रहा है हटाने क्यों नहीं देती।मैं चुप थी कैसे बताती अपने व चहकी के दिल के रिश्ते को ।कैसे कहती जब तुम सब हमें छोड कर चले गए चहकी ने ही मन को संभाला था।आज सबको जाना था मेरी तरह चहकी भी खामोश थी सुबह से ही लाइट भी आ जा रही थी सब गाडी में सामान रख रहे थे और तभी एक तेज आवाज आई भड़ाम मीटर में से आग निकल रही थी कमल और बेटा उसे बुझाने में लगे थे, सुधा इलेक्ट्रिशिअन को फोन कर रही थी ।बच्चे सहम गए थे ।इलक्ट्रिशन आ गया था ।इश्वेर का शुक्र आग घोसले के आगे नहीं बढ़ी थी ।घोसला ओह्ह्ह सुधा जैसे होश में आई बदहवास भागी आग !!!घोसला !!चहकी !!! ।पर सब खतम हो चुका था।चहकी राख हो चुकी थी।बेटा बोले जा रहा था काट दिया होगा तार चिड़ियों ने और बसाओ घर पर।तभी इलेक्टरीशन बोला भैया घोसले ने पूरा घर बचा लिया।वरना घोसला नहीं घर राख हो जाता।सुधा रो रही थी रोती ही जा रही थी, चहकी ने उसके ममत्व का मोल चुका दिया था ,अपना घोसला राख करके उसका घोसला बचा लिया था।उसने भाग कर चहकी की जली देह को सीने से लगा लिया, कौन कहता है पक्षी प्यार नहीं समझते इंसान चाहे न निभाये पर ये बेजुबान जान देकर भी प्यार निभाते है ।।।आंसू!! पीड़ा!! वेदना!! सुधा और उसकी चहकी ....

■■

डॉ शिप्रा शिल्पी
कोलोन जर्मनी

खूँटे की गाय

"माँ आपने गीता ग्रन्थ कहाँ रख दिया?"
काव्या ने व्याकुल होकर पूछा लेकिन माँ के पास भी कम व्यस्ततायें नहीं रहती थीं सो उसने भी उत्तर नहीं दिया। जब मां नहीं बोली तो काव्या ने मंदिर में उथल-पुथल मचानी शुरू कर दी। अभी काव्या ग्रंथ ढूंढ ही रही थी कि ठाकुर जी के आगे रखी भोग की कटोरी झन्नाकर फर्श पर गिरी और बिखर गई।
"क्या हुआ...? तुम कभी शांत नहीं बैठ सकती ?"
माँ ने गुस्से से कहा।
"मुझे गीता दे दो न! आप देर लगाओगी तब तक वो मर जाएगी।"
"कौन ?" मरने की बात सुनकर माँ को भी धक्का लगा।
"गाय की बिटिया?"
गहरी सांस छोड़ते हुए माँ बेटी के चेहरे पर तैरते भावों को पढ़ने लगी और शांत हो गई।
"माँ,आप गुस्सा हो?"
"नहीं!"
"तो बोलती क्यों नहीं? आपने ही तो बताया था, मरने वाले को गीता सुनाने से वह तर जाता है। मैं गौशाला वाली बछिया को सुनाना चाहती हूँ। बहुत सुंदर है वह।"
"स्त्री को स्वर्ग नहीं मिलता न यहाँ न वहाँ।"
"कुछ कहा माँ?"
"...."
"माँ, आप गीता पढ़कर उसे सुनाओगी तब मैं गंगाजल और तुलसी उसे खिला दूंगी।" रास्ते भर काव्या बोलती चली गई।
"अच्छा चलो, देखते हैं।"
"माँ, गौशाला वाले चाचा जी इसकी दवाई क्यों नहीं करवाते?"
"ऐसी बछियां तो रोज मरती हैं।" मां ने व्यंग्य में कहा।
"क्या२?"
"मतलब लोगों को गाय के दूध से मतलब होता है उसकी फीलिंग से नहीं।" मां ने कहा तो समझाकर लेकिन काव्या समझ न सकी।
"माँ श्लोक तेज पढ़ो न! मैं गंगाजल उसके मुँह में डालती हूँ।"
दोनों गौशाला के एक कोने में बेसुध बछिया के पास विश्वास समेटकर बैठ गयीं। बेटी ने जैसा कहा माँ करने लगी। दोनों तल्लीनता से अपने अपने काम में जुटी थीं कि अचानक काव्या चिल्ला पड़ी।
"माँ! बछिया! इसका कान हिलना बंद क्यों हो गया?"
"मर गई२। चलो अच्छा हुआ। इस संसार से जितने जल्दी मुक्ति मिल जाए उतना ही अच्छा।"
"माँ, अब क्या होगा? गाय किसको प्यार करेगी? देखो उसे वह इधर ही देख रही है।" कहते हुए काव्या की आँखें भर आईं ।
"गाय तो खूंटे से भी प्यार कर लेती है लेकिन गाय कौन करेगा प्यार ये सोचना पड़ेगा।" स्टैंड पर रखी गीता के पन्ने फड़फड़ा उठे थे।

■■

कल्पना मनोरमा
सं. सीनियर एडिटर
बी.२४ ऐश्वर्यम अपार्टमेंट
प्लाट संख्या १७
सेक्टर ४ द्वारका
नई दिल्ली - ११००७५

हम अदने से लोग

देख के निश्छल शिशु-किलकारी
या मैया कोई दुखियारी
भर जाते हैं भाव ही दोनों
हो अल्हड़ता या हो लाचारी
हम तो सदा अभिवादन करते
सबको यथायोग।

कही धूल में खग-स्नान
खेत में खड़ा अड़ा किसान
सोच रहें हैं ईश की इच्छा
कितनी देनी होगी परीक्षा
फिर भी करते तैयारी हैं
जुट कर के मनोयोग।

भाग रहे लिए सपने नयन में
स्वयं से लड़ते रोज जीवन में
गढ़ते जा रहे नए शहर को
दावत देते प्रकृति-कहर को
स्वार्थ सिद्धि में हम भी भूले
रक्षा वाला हटयोग।

अहंकार का फल नहीं खाया
अभिमान ने नहीं भरमाया
नहीं किये कभी किसी से घात
परिश्रम-पूजा करते दिन-रात
तेरा, उसका, सबका मिलना
मानते सुखद संयोग।।

■■

केशव मोहन पाण्डेय
राजापुरी
नई दिल्ली

गजल

१
जब अरमान फलेगा तो।
मन के साथ चलेगा तो।
आँखें जी भर सो लेगी,
सूरज, शाम ढलेगा तो ।
पत्थर भी कतरा-कतरा,
आखिरकार गलेगा तो ।
रिश्ता गिरकर संभलेगा,
गर व्यवहार पलेगा तो ।
होगा सब पर हक सच का
झूठा हाथ मलेगा तो ।
मिलकर, मिल न पायेगा,
मौका दूर टलेगा तो ।

२
कहूँ सच बात तो मुश्किल।
बता दूँ झूठ तो मुश्किल।
किसी के साथ रहकर भी,
छुपा लूँ हाथ तो मुश्किल।
कभी इक जीत के बाजी,
मना लूँ हार तो मुश्किल।
कहीं पहचान वालों से,
रहूँ अंजान तो मुश्किल।
सफर की दूरियों से डर,
करूँ आराम तो मुश्किल।
सभी के साथ अपनों सा,
रखूँ व्यवहार तो मुश्किल।

३
इतने हो बेगाने क्या।
हमसे हो अंजाने क्या।
आँख झुकाये बैठे हो,
रूठे हो दीवाने क्या ।
रुख पर थोड़ा गुस्सा है,
आये हो समझाने क्या।
खट्टे- मीठे जीवन की,
बातें हो पहचाने क्या ।
होश लिए हो रात ढले ,
टूट गए पैमाने क्या ।

■■

• **नवीन माथुर पंचोली**
अमझेरा धार मप्र

बाल कविता

नानी के घर जाना है
दूध मलाई खाना है।
मम्मी की मम्मी है नानी
खुशियों का खजाना है।

नानी लाड़ दिखाती है
मम्मी से हमें बचाती है।
कितनी भी शैतानी कर ले
मेवा - दूध पिलाती है।

नानी सर मे तेल लगाती
रात ढले कहानी सुनाती।
सो जाते जब सारे बच्चे
चादर हमको वही उढाती।

अंटी में बांधे रखती है
चांदी के सिक्के रखती है।
सैर कराने ले जाये तो
वो पैसे खूब लुटाती है।

बिन मांगे सब कुछ देती
लड्डू - पेड़े, हीरे - मोती।
हम बच्चो को प्यारी नानी
आँखों में जैसे हो ज्योति।

नाना- नानी, बाबा - दादी
हम बच्चो की सच्ची थाती।
अपने बड़ों का मान करो
सबको बात है ये भाती।

■■

डॉ शिप्रा शिल्पी सक्सेना
कोलोन , जर्मनी

कवितायें

१
अक्सर इन्सान
दूसरों के कन्धों को
सीढ़ी बनाकर
ऊपर चढ़ता है
और फिर...
सीना तान कर
खुद को
पर्वत समझता है
२.
जब-जब
आस्थाओं की देहरी पर
पाँव धरती हैं आशंकाएं
तब-तब
चटखने लगते हैं विश्वास
बिखरने लगते हैं रिश्ते
और...
कुछ शेष नहीं रहता !!!
३.
हम
नींव के पत्थर हैं
दिखते नहीं
सहते हैं सारा बोझ
इमारत का
खिड़की, दरवाजे, और कंगूरे
ये तो बस ....
इतराने के लिए हैं..
४.
मेरी
कल्पना की उड़ान
फलक से जमीं तक
आँसू से हँसी तक/सारे बंधन,
सारी झिझक तोड़ कर
बह निकली
एक उद्दाम नदी सी !
फिर दौड़ती इठलाती
गिरती पड़ती,
हँसती खिलखिलाती
लिपट गयी जिंदगी से
बेबाक और बिंदास
और जब ठहरी तो
वो कविता हो गयी थी ..

■■

मंजु मिश्रा
सैन फ्रांसिकों बे एरिया

कुछ पंक्तियां बेटियों के नाम

घुटनों चलकर कब बड़ी हो जाती हैं बेटियां
कब अपने पैरों खड़ी हो जाती हैं बेटियां
पिता की प्यारी और माँ की राज दुलारी होती हैं बेटियां

बहुत अच्छा लगता जब जन्म लेती हैं बेटियां
किन्तु-------
एक हूक सी उठती है जब विदा होती हैं बेटियां

इस सत्य में भी तो छिपा एक सत्य
दो घरों के रिश्ते भी निभाती हैं बेटियां
सूना सा लगता है वो घर/जहां नहीं होती चहचाहट
खाली सा भी लगता है वो घर
जहां वधु बनकर नहीं जातीं हैं बेटियां

न होती ये बेटियां
घर में कौन सजता / कौन सँवरता
कोन करता नखरेबाजी

सृष्टि का प्रारंभ हो तुम
नए रिश्तों की नई रीत हो तुम
करती हो सबको समृद्ध
इस जमी पर कल का भविष्य
हो तुम /अगर यह सच है कि बेटा भाग्य है
तो मित्रो--यह भी सच है कि- कि
बेटी सौभाग्य है ,बेटी सौभाग्य है
पूछो कीमत उनसे/जिनको नहीं मिली ये सौगात
जिनको नहीं मिला यह सौभाग्य

सच कहती है यह मनु तुमसे
सुख का आधार है बेटी/जीने का सार है बेटी
सुकर्मों का फल है बेटी

न होती बेटी तो रह जाते
रिश्ते ,घर,परिवार अधूरे
रह जाती यह कायनात अधूरी
बदरंग रह जाती यह सृष्टि

इस लिए कहती है यह
मनु तुमसे/सदैव नमन करो बेटी को
बेटी ही/हम सब की
आन बान और शान है
रिश्तों की जान है

■■

डॉ मीना शर्मा "मनु"

प्रेम

जब लिखूं में गीत कोई,
प्रेम पूरित भाव लेकर!
हो रहे अहसास मन में,
प्रेम मधुरिम साधना है!

रंग भी हैं द्वंद भी हैं,
प्रेम पूरित छंद भी हैं!
हो कठिन जितनी डगर,
प्रेम तो आराधना है!

अब कभी नीरस न हों,
प्रेम पूरित शब्द मेरे!
है यही शाश्वत जगत में,
लिप्त इसमें भावना है!

जब पुलक अहसास होगा,
तो सतत विश्वास होगा!
इस जगत से उस जगत तक,
गूंजती सी कल्पना है!

लहर सागर की निनादित,
झील में है मोंन पल्वित!
दिव्यता का भान देकर ,
कहरहा क्यों अनमना है!

एक मधुरिम रागिनी सी,
हो रही झंकृत ह्रदय में!
दूर चाहे हो कहीं भी,
चित्र ज्यों मन में बना है!

कुछ नहीं इसमें ठिकाना,
दर्द की गहराइयों का!
महक बन दिल में समाया,
प्रेम हर दिन दो गुना है!

ले समाधी लीन रहना,
इस जगत से कुछ न कहना!
प्रेम की माला पिरोना,
अन्यथा सब वर्जना है!

■■

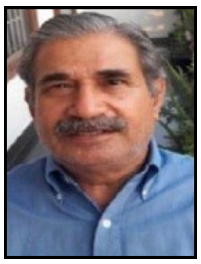

- **जे. पी. रावत**

बाप होने का एहसास

सोचता हूँ
तुम्हें दे दूँ
अपने बाहों का हार
अपना ढेर सारा
प्यार और दुलार ।

रोकता हूँ
आने वाली
वो हर विपदा
जो बढ़ाती है अपना हाथ
तुम्हारी ओर ।

टोकता हूँ
हर उस नजर को
जिसमे आत्मीयता नहीं होती
जो ग्रसित होती है
आत्म कुंठा से ।

बोलता हूँ
उसे हर वक्त
अपना बेटा
सभी कहते हैं
वो तो बेटी है ।

बेटी ही तो
देती है
हर बाप को
बाप होने का एहसास
स्नेह का आभास ।

■■

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
वेव सम्पादक
हिन्दी की गूँज

गजल

१
मन में तेरे चाह नहीं है
हमको भी परवाह नहीं है

खुद से बच कर भाग सके तू
ऐसी कोई राह नहीं है

लिपटेंगे विषधर कितने ही
चन्दन मन है दाह नहीं है

जीवन मेरा प्रेम - शिवाला
सपनों की दरगाह नहीं है

लोग समझ लेते हैं कायर
टेड़ी अगर निगाह नहीं है

वक्त फकीरी जीता केवल
नौकर या फिर शाह नहीं है

गजल कही हमने अनुभव की
करता तू क्यों वाह नहीं है

२
प्रीति मिली जब सच्ची में
गजल कही तब सच्ची में

तुमने हमको याद किया
बोलो कब-कब सच्ची में

इच्छाओं के बोझ तले
लोग गये दब सच्ची में

करके प्यार बने हैं हम
बौड़म - बेढब सच्ची में

दुनिया है झूठी - झूठी
दौड़ रहे सब सच्ची में

खोज रहे हैं बेमतलब
कितने मतलब सच्ची में

दिल ये बहुत धड़कता है
कहती वो जब-'सच्ची में'

- **प्रशान्त उपाध्याय**

गजल

1
इस जहां से बगावत नहीं चाहिए
माफ करना मुहब्बत नहीं चाहिए

जानते हैं इरादे असल आपके
बेवजह की वकालत नहीं चाहिए

ये खुला आसमाँ दे रहा है सुकूँ
ईंट की इक इमारत नहीं चाहिये

दर्द जिसमें मिले सिर्फ बेइन्तहा
एक ऐसी हकीकत नहीं चाहिए

लड़ खड़ाकर उठी है कई बार वो
प्रीति को अब इनायत नहीं चाहिए

2

गिरे जो फूल झोली से उठा दो ना उठा दो ना
गिले शिकवे सभी अपने भुला दो ना भुला दो ना

गया है रूठ जो हमसे मना लें हम उसे चलकर
सदा बसता वही दिल में बता दो ना बता दो ना

जिसे सुनकर महकते थे कभी दिन तो कभी रातें
वही फिर रागिनी हमको सुना दो ना सुना दो ना

तुम्हारे प्यार से ही तो मिली थी जिन्दगी मुझको
मुझे फिर जिन्दगी से तुम मिला दो ना मिला दो ना

कहे अब प्रीति ये तुमसे रहेंगे हम यहाँ मिलकर
सभी दूरी दिलों की तुम मिटा दो ना मिटा दो ना

■■

- **प्रीति चौधरी "प्रीत"**

गजल

गिराते हैं पर वो उठाते नहीं हैं
रुलाते हैं लेकिन हँसाते नहीं हैं

वो आकर मेरे दिल में ऐसे हैं बैठे
कि कहने से भी दिल से जाते नहीं हैं

हरे के हरे हैं सभी जख्म मेरे
दवा उन पे है पर लगाते नहीं हैं

वतन के लिये वीर, दुश्मन के आगे
कटाते हैं सिर पर झुकाते नहीं हैं

बहुत बार उनको बताया, कहा भी
जलाकर दिया फिर बुझाते नहीं हैं

बता दो मुझे बात जो भी हो दिल में
मुहब्बत में कुछ भी छिपाते नहीं हैं

जिन्हें आज तक प्यार करना न आया
वो नजरों से नजरें चुराते नहीं हैं

चलो अब 'प्रणय' उनकी महफिल से चलते
वो आकर भी नजरें मिलाते नहीं हैं

■■

- **लव कुमार 'प्रणय'**

गीत

लाओ गोरों की सेना तुम, ना बाँध उसे कोई है पाया
वो जिया तोड़ हर बेड़ी को, आजाद सदा वो कहलाया

मूँछों पे ताओ अनोखा था, हाँ! गर्व से सीना ठोका था
स्वतंत्रता की औलाद हुआ, उसका अंदाज अनोखा था

हरा का "बलराज" हुआ, वो भगत का साथी खास हुआ
अशफाख बिस्मिल की मेहनत को मिटने से उसने रोका था

तान वो सीना था आया, संग मौसेरे एक वो था लाया
काकोरी मे लूट लुटेरों को, डंके की चोट था कर आया

लालाजी का अभिमान हुआ, सौंडर्स का वो काल हुआ
आजाद सदा आजाद जिया, वो देशभक्ति की था काया

बाँधोगे कैसे सागर को तुम, होंगी हर कोशिश जाया
जो गरज वज्र सा आया वो, अंग्रेजी साशन कंपकपाया

बेबाक लड़ा हर गोली से, आजाद शहीदी को पाया
वो जिया तोड़ हर बेड़ी को आजाद सदा वो कहलाया

■■

- **प्राची चतुर्वेदी रंधावा**

गीत

नव उमंग है उर में छाई
यौवन भरता है अंगड़ाई
पिया मिलन की आस जगी है
मैं राधा, पिय बने कन्हाई।।

मेघ गगन में उमड़ रहें हैं
रिमझिम बदरा बरस रहे हैं
कूक रहे खग विह्वल होकर
सतरंगी धनु है लहराई।।
नव उमंग है उर में छाई
यौवन भरता है अंगड़ाई।।

नयन नीर अब सूख चुके हैं
उम्मीदों के पांव थकें हैं
सुध बुध खो कर राह निरखती
छायी है हिय में तन्हाई।।
नव उमंग है उर में छाई,
यौवन भरता है अंगड़ाई।।

■■

- **डॉ अमिताभ पाण्डेय**
गोरखपुर

परिणय सूत्र का ये गठबंधन

परिणय सूत्र का ये गठबंधन,
दो प्रेम सूत्रों का है मिलन
सूत्र मिलेंगें तो टकरायेंगे भी,
अपने अपने तरीके सही पायेंगें भी,
गाँठों को बंधन न बनने देना
अकड छोडकर, नरम होकर
मिलकर गाँठ सुलझा लेना।
इस गठबंधन को निभा लेना।।

चूडी की खनखन होती है मधुर,
जब हल्के-हल्के टकराती है,
झटके से बज उठे अगर तो,
पल में चूर-चूर हो जाती है।
पायल की रूनझुन खिल उठती,
जब अपने राग पर है थिरकती,
खूबसूरत बेडी बन जाती जब
हर कदम पर उलाहना मिलती।

कानों में लटका भारी झुमका,
जुल्फों के वार सब सह लेता,
उसको थामें उसके पीछे जब,
सहारा बन कोई छिपा होता।

लहराती हुई ये साडी को भी ,
सेफ्टीपिन सँभालकर रखता,
नुकीली चुभती इन पिनों से
कभी-कभी रिश्ता भी सँभलता,
बस सहारा बनना एकदूजे का
गाँठों को प्रेम से कसते रहना
पवित्र मजबूत गठबंधन को
कैंची की नजर न लगने देना।

अकड छोडकर, नरम होकर
मिलकर गाँठ सुलझा लेना।
इस गठबंधन को निभा लेना।।

■■

- **शालिनी गर्ग**

तुम

रुको, एक पल के लिए
शुभरात्रि तो कह दूं मगर
जाने का मन नहीं होता

तुम देर तक जागोगी तो
तबियत बेहाल हो ये मंजूर नहीं
अभी सो जाओ न तुम !

तुम जानती हो मैं देर से सोता हूँ
सुबह जल्दी से उठकर तुम
हरसिंगार के फूलों की खुशबू बनना

हो सकता है मेरी सुबह जल्दी होगी
खुशबू का तो दीवाना हूँ मैं और तुम
जानती हो न तुम्हारी खुशबू कम नहीं !

■■

- **पंकज त्रिवेदी**

गजल

चलते -चलते कुछ नई पगडंडियाँ बन जाएँगी ।
हौंसला रख भय की बातें खुद धुआँ बन जाएँगी॥

वक्त की खींची हुई दीवार को भी भेद कर
कोशिशें करने से इसमें खिड़कियाँ बन जाएँगी ॥

दूरियाँ शैतान ने दुनिया में की कायम हैं जो
आपसी हिम्मत से फिर नजदीकियाँ बन जाएँगी

दूर रख ताजा हवा को दहशतों के ताप से ।
गर्म हो अफवाह की ये आँधियाँ बन जाएँगी ॥

वक्त रहते हर्ष जागो इस तिलिस्मी स्वप्न से ।
गैर के हाथों की ये कठपुतलियाँ बन जाएँगी ॥

■■

- **हर्षवर्धन आर्य**
  दिल्ली, भारत

गुलमोहर

बगिया की दीवार से लग कर उगा गुलमोहर, फूलों से लदा अपने सौंदर्य पर इतरा रहा था तभी बगिया से आती ठहाकों की आवाज ने उसका ध्यान खींचा। उसने देखा रंग- बिरंगे फूल, गुलाब, चंपा, चमेली, गेंदा और सदा बहार आदि सभी एक दूसरे के रंग और सुगंध की प्रशंसा करते हुए बड़े उत्साहित थे। गुलमोहर ने उनकी प्रसन्नता में शामिल होते हुए कहा, सच मित्रों तुम सब बहुत सुन्दर, सुगंधित और आकर्षक हो। सभी ने उपेक्षा भरी दृष्टि उसकी ओर फेंकते हुए कहा, अरे! तुम तो हमारी प्रशंसा करने के योग्य भी नहीं हो, तुम्हारा ना रूप सुंदर है और ना सुगंध। तुम किसी काम के नहीं। गुलमोहर दुखी हो गया तभी गुलाब बोल उठा, तुम सबको पता है कल बड़े बाबा के मंदिर में पूरा श्रृंगार हमसे ही हुआ था। नन्हा मोगरा इठलाते हुए कहने लगा, हम तो सुन्दरियों के बालों में सजते हैं, हमारी सुगंध सबका मन मोह लेती है। गेंदा क्यूँ पीछे रहता कहने लगा, आजकल शादियों का समय है और अपनी सुंदरता की वजह से हम भी बहुत डिमांड में हैं। गुलमोहर बेचारा मुंह लटकाए इन सबकी बातें सुन रहा था, तभी अचानक बगीचे के मालिक के साथ कुछ लोग आए और फूलों को देखते हुए उनके दाम लगाने लगे। मालिक ने सभी कर्मचारियों को बुला कर फूलों को तोड़ने के निर्देश दिए। उसने साथ आए हुए लोगों से रूपये लिए और वहाँ से चला गया। कर्मचारियों ने तुरंत आदेश का पालन किया और हँसते, खिलखिलाते सभी फूल तोड़ कर बांस की टोकरियों में भर दिए। बगिया के मुख्य द्वार पर एक गाड़ी खड़ी थी सभी टोकरियाँ उस गाड़ी में रख दी गई। गुलमोहर ने नम आँखों से अपने मित्रों को विदाई देते हुए कहा, अच्छा ही हुआ कि मैं तुम जैसा ना हुआ। टोकरियों में भी अचानक नमी आ गई थी और गाड़ी चल पड़ी।

■■

डॉ. अन्नपूर्णा सिसोदिया

बचपन के दिन

यकीन ही नही होता कि बचपन जा चुका है .रोज ही बच्चों जैसी हरकतें करता हूँ .ये अलग बात है कि बचपन में लोग जिन बातों को निरा बचपना कहकर भुला देते थे अब उन्हें बचकाना कहकर भी नजरंदाज नहीं करते . तब लगता मैं भले ही अपने भीतर किसी हिस्से में बचपन और बचपने को बचाए हुए हूँ ,पर मेरे आस पास का परिवेश बड़ा और बहुत बड़ा हो चुका है .और क्यूँ ना हो ? मेरे गाँव का नाम ही बडागांव हैं .

पैतालीस साल पहले उत्तर प्रदेश के एक जिले शाहजहांपुर में मेरा जन्म हुआ . मेरा गाँव बडागांव नाम के अनुरूप बड़ा है, और इसे न्यायपंचायत होने का फख्र हासिल है .अगर साम्प्रदायिक तनाव के बीच भी हिन्दू मुस्लिम भाईचारा देखना हो ,छुआछूत के साथ पंडित जी और मुंशी जी को हम प्याला ,हम निवाला देखना हो तो बडागांव को देख लो .

जिस मुहल्ले में हम रहते थे उसे मिनी पाकिस्तान कहते हैं .मेरे घर के दो तरफ मुस्लिम परिवार तीसरी तरफ अग्रवाल साहब और चौथी तरफ अग्रवाल साहब के पैदायशी कारिंदे यादव जी बसे हुए हैं .इन सबके बीच पंडित चन्द्रमोहन अग्निहोत्री वल्द अचलेश्वर नाथ अग्निहोत्री निवास करते हैं .अचलेश्वर नाथ अग्निहोत्री मेरे बाबा (दादा) अंग्रेजों के जमाने के पटवारी थे . बताते हैं कभी चौधरी चरण सिंह उ९प्र९ में राजस्व मंत्री थे .तो पूरे प्रदेश में पटवारियों ने सामूहिक रूप से इस्तीफे दे दिए और चौधरी साहब ने स्वीकार भी लिए .नतीजा यह हुआ कि कई हजार पटवारियों के साथ पं९ अचलेश्वर नाथ अग्निहोत्री भी बेरोजगार हो गये .वह तो भला हो नेहरु जी का जो उन्होंने लंबे समय के बाद उन पटवारियों को दुबारा नौकरी में ले लिया .

अपने अंतिम समय तक बाबा कभी हडताल न करने का मन्त्र ही देते रहे .नौकरी में अपनी वापसी को वे शंकर जी और नेहरु जी की समवेत कृपा मानते थे .इसलिए आपातकाल के बाद जब चुनाव हुआ तब भी हमारे परिवार का वोट कांग्रेस को ही गया था .

गाँव के स्कूल में बने पोलिंग बूथ पर माँ और दादी के पीछे छिपे पांच छ साल के बच्चे से जब वर्दी पहने दरोगा जी ने पूरी मुलामियत के साथ पूछा किसे वोट दोगे? तो .'गाय बछड़े' पर मुहर लगने की बात निश्चित रूप से घर में 'वोट किसे देना है ' का निर्देश सुनकर ही बच्चे के मनोमस्तिष्क पर अंकित हुआ होगा .

बचपन के हमारे मकान के दो भाग थे .एक में बाबा दादी और दूसरे में हम छह जने माता पिता के साथ चार बच्चे रहते थे .आयुक्रम में मेरा क्रम तीसरा था .एक बड़े भाई और एक बड़ी बहन के बाद . पिताजी का आतंक तो केवल पढाई के समय ही रहता था पर बड़े भैया का आतंक २४'७ हम तीनों भाई बहनों के सिर चढकर बोलता था . बड़े भैया को साहित्य में गहरी दिलचस्पी थी .मेज पर सजी उनकी पाठ्यपुस्तकों के नीचे ही उनकी रहस्यमयी लाइब्रेरी थी .जिसका हमे कैसे पता चला यह तो याद नहीं पर चंदामामा और पराग से शुरू कर 'मस्तराम' की मनोहर और मनमोहक कहानियों तक से मेरा अन्तरंग और आत्मीय परिचय कराने में भैया की उस लाइब्रेरी का उल्लेख न

करने योग्य योगदान है .पर मैं यह बात कहे बिना नहीं रह सकता कि आज भी मुझमे लिखने और पढने की किंचित भी ललक बची हुयी है तो उसका श्रेय भैया की रहस्यमयी लाइब्रेरी में किये गये अध्ययन को जाता है .

पिताजी हमारे पहले गुरु भी थे .गाँव के स्कूल में पाकड़ के पेड़ के नीचे टाट पट्टी पर बैठकर हमने शिक्षा ज्यादा प्राप्त की या लोट ज्यादा लगाई (पिताजी के हाथों पिटते हुए) यह मैं आज तक तय नहीं कर पाया .मैं जब भी दर्पण में अपने लंबे कानों को निहारता हूँ तो मुझे विश्वास हो जाता है कि गणेश जी के बड़े बड़े कान हाथी का सिर लगा होने के कारण बड़े नहीं हैं .अपितु भगवान शंकर ने बाल गणेश को पढाते समय यत्न पूर्वक इन कानों को वैसे ही बड़ा किया है जैसे मेरे पिताजी ,मेरे गुरुदेव ने किया है .

मेरी बचपन की यादों में सबसे रंगीन यादें हैं होली की . हमारे गाँव में होली वाले दिन नबाव साहब का जुलूस निकलता है .गधे पर सवार जूतों की माला पहने मस्ती में झूमते, पीते और खिलखिलाते नबाव साहब की सज-धज निराली और दर्शनीय होती है .होली का यह जुलूस दरअसल नबाव की शानो-शौकत की आड़ में अपनी पूँजी और पावर दिखाने का मौका भी होता है .होली का अवसर गली मुहल्ले के शोहदों को अपने छिछोरेपन के प्रकटीकरण का मौका भी उपलब्ध कराता है .नबाव साहब के जुलूस का अभिन्न हिस्सा बने ये शोहदे दूसरे मजहब के शोहदों के सामने जी भर कर होली खेलते हैं और उनके पुरखों को बुरा ना मानो होली है, की सम्पुट लगी चौपाइयों से अलंकृत कर ऐसे खुश होते हैं जैसे कद्दू में तीर मार रहे हों .गोया होली का मौका ना होता तो दूसरे धर्म-मजहब के शोहदों से पहले, अपने मजहब के शांति दूअमनपसंद ,समझदार लोगों द्वारा ही संस्कारित कर दिए जाते. पर होली ने हुडदंग करने का लाइसेंस दिया होता है,इसलिए कोई भी समझदार आदमी, समझदारी की बात कर भांग खाये होने का प्रमाण नहीं देना चाहता .

होली की मस्ती में मस्त होने का अभिनय करने के चक्कर में बहुत बार नैतिकता के भीष्म पितामह भी लाज-शर्म की द्रुपद सुता को निर्वस्त्र होता देख मौन रह जाते हैं .सबके सामने अपना छिछोरपन परोसते और 'बुरा ना मानो होली है' का जयकारा लगाते बहुत से भद्र जन भी होली में अधनंगे विचरते नजर आ जाते हैं .'रंग बरसे भीगे चुनर वाली' और 'खाये गोरी का यार, बलम तरसे' मानो होली का उद्घोष वाक्य बन जाता है .इस सबके बीच पुरानी इमारत की तरह जर्जर काया वाले कुछ बुजुर्ग यह कहते नजर आ जाते हैं द्'अब होली में पहले वाली बात नहीं रही. इसी बीच कानाफूसी सी होती है और फिर यह कानाफूसी शोर में बदल जाती है

-'मेनरोड पर गोली चल गयी' -

फिर कोई आह सी भरता है-

" इस साल भी आखिरकार होली लाल हो ही गयी "

.चार- छह लोगों के सिर फटना, आठ-दस लोगों का आपस में जूतम- पैजार करना और एक दो लोगों का इस मौके पर बरसों पुरानी परम्परा को कायम रखते हुए शहीद हो जाना. हमारे गाँव की होली की विशेषता है .

हमारा गाँव ही क्यों हमारा जनपद मुख्यालय शाहजहाँपुर जिसे हम अपना शहर कहते हैं, इतिहास में अपनी वीरता और बलिदानों के लिए एक खास स्थान रखता है, होली पर एक विशेष परंपरा के लिए पूरे देश में जाना जाता है .यह विशेष परंपरा है 'लाट साहब का जुलूस'. यह कहना मुश्किल है कि 'लाट साहब का जुलूस ' हमारे गाँव में होली के अवसर पर निकलने वाले 'नबाव साहब के जुलूस' का ही बृहद संस्करण है .या फिर हमारे गाँव का 'नबाव साहब का जुलूस' 'लाट साहब के जुलूस का 'लघु संस्करण'. अब ज्यादा प्राचीन कौन है, इस पर अलग से रिसर्च किये जाने की जरूरत है, पर पुराने लोग बताते हैं कि अंग्रेजी राज से पहले जब हमारे यहाँ नबाव का शासन था तो होली के मौके को उसकी ज्यादतियों के खिलाफ गुस्से का इजहार करने के मौके के रूप में इस जुलूस की परंपरा शुरू हुयी .जिसमे चंद रूपयों के लिए गधे पर सवार और जूते खाने को तैयार एक मजबूर इंसान को वह नबावी सम्मान प्रदान कर अपनी भडास निकाल ली जाती थी जो आमतौर पर रोज ही नबाव अपनी रिआया को प्रदान करता था .

समय बदला और अंग्रेजी राज आया तो नबाव की जगह इस सम्मान का सही हकदार 'लाट साहब' को पाया गया और जुलूस का सारा बन्दोबस्त तो पुराना रखा गया बस नाम हो गया 'लाट साहब का जुलूस'.आजादी के बाद तो 'नबाव साहब भी निपट गये और लाट साहब भी' पर बंदरिया जिस तरह से मरे हुए बच्चे की लाश अपने सीने से चिपकाए रहती है, कुछ- कुछ वैसे ही हमारे शहर और गाँव ने नबाव साहब और लाट साहब के जुलूसों को खुद से चिपकाये रखा है .

यह जुलूस जो कभी नबावी और अंग्रेजी शासन के विरूद्ध गुस्से के इजहार का माध्यम रहा होगा, आज दो समुदायों का आपसी द्वेष और नफरत को प्रकट करने का औजार बनकर रह गया है और उस पर तुर्रा ये कि हम अमन पसंद जिले और शहर के वाशिंदे हैं .होली समता और सौमनष्य का पर्वहै.इसमें हास, विलास और उल्लास है ,पर उल्लास कहीं भी और कभी भी बाहर से तो आयातित नहीं किया जा सकता. ऐसे में हमारे भीतर जो अविश्वास की, द्वेष की भावना सड़ांध मार रही है ,उसका नबाब साहब और लाट साहब के जुलूस में लग रहे नारों में व्यक्त हो जाना कोई ताज्जुब की बात नहीं .

जिन लोगों ने हमारे गाँव का नबाव साहब का जुलूस और हमारे शहर का लाट साहब का जुलूस नहीं देखा वे ना तो इसमें लगाये जाने वाले नारों के बिंदास और बेलागपन को समझ सकते हैं और ना ही हमारे शहर के लोगों द्वारा भाषा की समृद्धि में दिए गये योगदान को .

कभी कभी मुझे लगता है कि हिंदी के स्वनामधन्य लेखकों डहद्द राही मासूम रजा और पाण्डेय बेचैन शर्मा 'उग्र' ने जरूर हमारे शहर के 'लाट साहब के जुलूस' को देखा सुना होगा ,और हो न हो वे होली के मौके पर कभी हमारे गाँव तक भी आये हों , क्योंकि उन्ही के साहित्य में प्रयुक्त गयी गालियों की हल्की सी हमारे नबाव साहब और लाट साहब के जुलूस की झलक दिखती है .

उड़ान

इधर व्यंग्य साहित्य में भी हमारे समय के कई बड़े और बहुत बड़े लेखक भी कभी- कभार उसी परंपरा को निभाने की कोशिश करते दीख पडते है.

लेखन में तो नहीं, पर असल जीवन में जरुर हम अपने मुहल्ले के छुटभइयों पर गाली रुपी इस अमोघ अस्त्र का प्रयोग पूरे विश्वास के साथ करते रहे हैं . मुझे आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि मेरी इस प्रयोग धर्मिता की जड़ में लाट साहब और नबाव साहब के जुलूसों का भी कुछ ना कुछ योगदान या प्रेरणा जरूर है .

होली की ही तरह मुझे अपने बचपन के समय के इलेक्शन का दौर बहुत प्यारा है .आज जैसे बेनूर इलेक्शन नहीं होते थे तब .बुरा हो आजकल के 'चुनाव आयोग' का .हमारे जमाने में क्या रस,क्या रंग और मस्ती हुआ करती थी चुनावों में?

लाउड स्पीकर,नारे-पोस्टर सब तो ले गया चुनाव से चुनाव आयोग । नौ -दस चरणों का चुनाव। जिसका अनिवार्य और सर्वाधिक रोमांचकारी भाग होता था, यह समाचार आना दृ "वहाँ बूथ कैप्चर हो गया ,अब बाबा साहब की जीत पक्की ." बाबा साहब हमारे इलाके के एम् पी साहब यानी सांसद थे . बूथ कैप्चरिंग में जो थ्रिल और रोमांच के साथ साथ बक्से और मतपत्रों का लूटा जाना होता था .वह ई वी एम वाले आजकल के इस 'अल्पजीवी चुनाव से कब का गायब हो चुका है . अब कोई हमारे जमाने के थ्रिल और ऐडवेंचर से भरपूर चुन. ावों की कल्पना भी नहीं कर सकता .

बचपन के दिनों में हमारे एक भइया थे (भैया तो अब भी हैं पर वे अब पार्टियों का नहीं अपना प्रचार करते हैं और खुद चुनाव लड़ने की जुगत में रहते हैं) जो कभी इस पार्टी का प्रचार करते थे तो कभी उसका। अरे भाई दल-बदलू नही थे, उनका काम यही था।

भैया कभी दृकभार हमें भी माइक पकडा देते थे. तो हम ऐसे लडखडाते थे जैसे रैंप पर कैट दृवाक करती नई नवेली माडल। भइया अब बाकायदा नेता हैं ,वैसे उनकी परसनैलिटी तो अभिनेता वाली है. और वे हैं भी गजब के अभिनेता। सिल्वर स्क्रीन पर नहीं निजी जिंदगी में। भइया ने चुनाव को बहुत करीब से देखा है ।चुनाव उनकी धमनिओं और शिराओं में प्रवाहित रक्त की तरह है ।

इसे यों भी कह सकते है की भैया के डी एन ए में चुनाव शामिल हो गया है .अब थाना भइया की बांयीं जेब में तो मुस्टंडे दायीं में रहते हैं। लोकल लेवल पर भइया ही न्यायाधीश और भइया की ही गवाही चलती है, और तो और आखिर में हार जीत किसी की हो, भइया की तो ही वाह वाही ही होती है ,क्योंकि उन्होंने हमेशा जीतने वाले का ही साथ दिया होता है

ये तो शेषन काल से पूर्व वाले चुनाव के संपर्क -संसर्ग का परिणाम है कि भइया अपने इलाके के वी वी आई पी हैं .उन पर कितना काला और सफेद तन दृमन दृधन कुर्बान होता ही रहता है .भइया अगर आजकल के चुनावों के भरोसे विकसित ,परिमार्जित और परिवर्धित होते, तो आज भी कुपोषण के शिकार आठवीं फेल बेरोजगार ही होते .

इन्ही खट्टी मीठी यादों के बीच जब मैं बचपन-किशोरावस्था और युवावस्था के बीच की विभाजनकारी रेखा तलाशता हूँ तो अक्सर भटकता ही रह जाता हूँ .बचपन शुरू कब हुआ और खत्म कब ? ठीक ठीक नहीं कह सकता, पर पिताजी का अध्यापन के साथ साथ खेती करने का फैसला एक ऐसा फैसला था जिसने मुझे बुरी तरह प्रभावित किया .पिताजी ने खेती करने का फैसला ,जिस वजह से भी किया हो पर आधे दर्जन भैसों और गायों की मौत .पूस माह की सर्दी में खेतों में पानी चलाना .डेढ़ दो किलोमीटर दूर बाग से लकड़ी का गठ्ठर सिर पर लाने को सुखद स्मृति तो नहीं कहा जा सकता .

मैं कई बार सोचता हूँ कि जो अभाव बचपन में देखे वे क्या वास्तविक और जरूरी थे .एक लेख में उन सब कारणों और घटनाओं का न तो विवरण दिया जा सकता है और न विश्लेषण .किन्तु बचपन में ही ऐसी ही ज्ञात अज्ञात वजहों से एक घोर एकांत उग आया है जो आज भी हरा है पर भरा नहीं .

■■

- **अरविंद पथिक**

रामकिशन जी बड़ी बेचैनी के साथ घर के बरामदे में चहलकदमी कर रहे थें। उनकी बेटी रिया जो कि ४ दिन के स्कूल ट्रिप पर गई थी उसे आज दोपहर तक वापस आना था मगर शाम ढल रही थी और रिया का कुछ अता पता ना था और ना ही उसका फोन काम कर रहा था। मन में बार बार बुरे ख्याल आ रहे थे जिसे वो उसे तेजी से झटक देते थे।

रिया रामकिशन जी और संध्या की इकलौती संतान थी।अति प्यार दुलार में पली रिया के अंदर कभी किसी बात का किसी तरह का कोई घमंड नही रहा। पापा की सुबह की चाय से लेकर रात की दवाई तक का उसे ख्याल रहता था।पढ़ाई लिखाई से वक्त मिलने पर उसकी भरपूर कोशिश रहती थी कि वो मम्मी के कामों में भी मदद करे। आस पास के सभी लोग उसके स्वभाव को लेकर बहुत प्यार करते थे।

रिया का बस एक ही सपना था कि वो पायलट बने और जिस दिन उसकी पहली उड़ान हो उस दिन उस सफर में उसके साथ उसके मम्मी पापा भी रहें।

रामकिशन जी को अपनी बिटिया पर बहुत गर्व था, हर तरह से होनहार उनकी बिटिया में उनकी जान बसती थी... और आज गुजरते वक्त के साथ उनकी जान जैसे निकली जा रही हो। चिंता से तो संध्या भी मरी जा रही थी इसलिए उससे कुछ कहना या पूछना सही नही लग रहा था उन्हें।

पहले भी रिया स्कूल ट्रिप पर जाती रही है मगर इस बार ना जाने क्यूँ उनका हृदय नही मान रहा था। रिया नें उनके गले में हाथ डाल कर कहा 'पापा ऐसे कैसे मैं बन पाऊँगी पायलट अगर आप ऐसे घ ाबड़ाओगे।मेरी उड़ान को अपना आशीर्वाद दीजिये पापा...रोकिये नही।' फिर वो रिया से कुछ नही बोल पाए थे..हाँ जाते जाते ढेर सारी नसीहतें दे डाले थे और ये भी कहा था कि अपना लाइव लोकेशन हमेशा अहन रखना।

जब हृदय एकदम से विचलित हुआ तो वो रिया के स्कूल पहुंचे..स्कूल तो बंद था मगर चौकीदार मौजूद था, जिसने बताया कि बच्चे आ तो गए हैं मगर सभी शहर के

सिटी हॉस्पिटल में एडमिट हैं। ये बात सुनते हीं आशंका से उनका हृदय दहल उठा...वो जैसे तैसे हह्स्पिटल पहुंचे...वास्तव में ट्रिप से लौटते वक्त स्कूल बस का गंभीर एक्सीडेंट हो गया था जिसमें तकरीबन सभी घायल थे...स्कूल प्रिंसिपल खबर मिलते हीं कई एम्बुलेंस लेकर घटना स्थल पर पहुंची थी और सबको यहाँ हह्स्पिटल में एडमिट किया था।पूरे हह्स्पिटल में अफरातफरी मची हुई थी। रामकिशन जी ने संध्या को कुछ भी बताना उचित नही समझा, वो बेड को ढूंढते हुए रिया तक पहुंचे थे, वो बेहोश थी और उसके टांगो पर प्लास्टर चढ़ा हुआ था। बेटी की ऐसी हालत देखकर वो फफक कर रो पड़े। डॉक्टर ने बताया कि रिया के पैरों में मेजर फ्रैक्चर है, हमारे तरफ से पूरी कोशिश है मगर ये भी हो सकता है कि रिया को उम्र भर बैशाखी का सहारा लेना पड़े। ये सुनते हीं रामकिशन जी वही जमीन पर बैठ गए, किसी तरह संध्या को कह्ल किया और सारी बातें बताई..सुनते ही संध्या के हाथ से मोबाइल छूट कर जमीन पर गिर पड़ा।

किसी तरह वो सिटी हॉस्पिटल पहुंची और पति के सीने से लगकर फफक फफक कर रो पड़ी।

बहुत देर बाद रिया को होश आया, मम्मी पापा को सामने देख कर वो रो पड़ी...रोते रोते बोली 'पापा आप नहीं जाने दे रहे थे मगर मैनें हीं जिद्द किया।'

उसे अपने पैरों में भारीपन महसूस हुआ..उसने डॉक्टर की तरफ देखते हुए पूछा 'अंकल मेरे पैरों को क्या हुआ?' डह्क्टर ने सच्चाई छुपाते हुए बस यही कहा 'कुछ नही बेटा बस थोड़ा सा फ्रैक्चर है, जल्दी हीं ठीक हो जाएगा।'

कुछ दिनों बाद रिया हॉस्पिटल से घर आ गई, मगर अभी उसका प्लास्टर कटा नही था। मम्मी पापा सबकुछ भूलकर अपनी बच्ची की देखभाल कर रहे थे।

कुछ दिनों बाद जब प्लास्टर कटा तो उसका एक्सरे देखकर डह्क्टर ने धीरे से कहा कि शायद अब उम्र भर इसे बैशाखी की जरूरत पड़े।ये शब्द रिया के कानों तक भी पहुंचे..वो चीख मार कर रो पड़ी..उसके सारे सपने एक बार में टूट चुके थे।

संध्या की तो हिम्मत नही हुई कि वो कुछ कह सके मगर रामकिशन जी ने खुद को संभालते हुए रिया को बोला...'अरे ऐसे कैसे डॉक्टर के कहने से कुछ हो जाएगा..अभी तो हमें अपनी बिटिया की पहली उड़ान पर जाना है।'

रिया ने रोते हुए कहा 'पापा क्यूँ झूठ बोल रहे हैं, अब ये संभव नही हो सकता..प्लीज मुझे झूठा दिलासा मत दीजिये।' रामकिशन जी ने बिटिया को सीने से लगाते हुए कहा कि 'देख बेटा जब तक माँ बाप जिंदा हों औलाद के लिए कुछ भी असम्भव नही होता।'

वक्त चलायमान होता है और इसी वक्त के साथ रिया की ऑनलाइन क्लासेज, पैरों की फिजियोथेरेपी और मालिश चलती रही। वक्त के साथ साथ पैरों में काफी सुधार नजर आने लगा था। अब रिया खुद से उठकर अपना सारा काम कर लेती थी उसे मम्मी पापा की सहायता नही लेनी पड़ती।

धीरे धीरे कह्लेज भी खत्म हो गया और वो दिन भी आया जब का सेलेक्शन पायलट के रूप में हो गया।

आज रिया की पायलट के रूप में पहली उड़ान थी और वो स्वयं प्लेन के दरवाजे पर रामकिशन जी और संध्या का स्वागत करने के लिए खड़ी थी।मम्मी पापा को आते देखकर वो दौड़ कर नीचे उतर आई अपने उन्हीं पैरो से जिसे डह्क्टर ने ये कहा था कि इन्हें उम्र भर बैशाखी का सहारा लेना पड़ेगा...सहारा तो जरूर लेना पड़ा मगर बैशाखी की नही बल्कि मम्मी पापा के हौसलों और विश्वास का।

रिया रामकिशन जी और संध्या के साथ ऊपर आई और उन्हें बिजनेस क्लास में बैठा कर खुद अपने को-पायलट के साथ केबिन में चली गई...आज उसकी पहली उड़ान थी वो भी अंतरराष्ट्रीय... स्वीटजरलैंड के लिए।

• **रश्मि अभय**
दिल्ली

सोशल मिडिया का मंदिर

'ये लो बाबू, तुम्हारे साठ रुपया' बूढ़े काँपते हाथों से रामदीन ने ग्राहक को बचे हुए रूपये लौटाए और राम कटोरी से बोला, 'चलो आज की बोहनी तो हुई'।

झुर्री वाले पोपले मुँह से राम कटोरी हँस पड़ी । 'हाँ, आज तो मैं दो किलो आटा गूँथ कर लाई हूँ । आज क्रिसमस की छुट्टी है और शनिवार भी है, आज तो मुझे पूरी उम्मीद है कि अपने ठेले पर बहुत ग्राहक आएँगे। तुम देखना आज तो रात तक सब सामान बिक जायेगा सोशल मिडिया का मंदिर' राम कटोरी ने उम्मीद भरी आवाज में कहा ।

'तेरे मुँह में घी शक्कर' कहते हुए रामदीन जोर से हँस पड़ा और हँसते -हँसते उसका ढीला सा चश्मा जमींन पर गिर गया ।

चश्मा उठाते हुए उसने सामने देखा । सामने वाले महल में बहुत लम्बी कतार लगी थी सोशल मिडिया का मंदिर क्रिसमस मनाने लोगों के बड़े-बड़े समूह जमा थे । एक तरफ कॉलेज वाले लड़के-लडकियाँ जमा थे तो दूसरी तरफ लाल रंग के एक जैसे कपडे और टोपी लगाये कई फॅमिली खड़ी थीं। कुछ लड़के तो मोबाइल में गाना बजा कर नाचने भी लगे थे । मार्केट में इतनी रौनक आस पास वाले सभी दुकानदारों के मन में आशा भर रही थी सोशल मिडिया का मंदिर सोशल मिडिया का मंदिर ।जब से महामारी आई है सबका घर खर्च चलना मुश्किल हो गया था ।

शहर के सबसे बड़े महल सिटी सेंटर के सामने वो दोनों पति-पत्नी खाने का ठेला लगाते थे। पहले तो उनका खाना खूब बिकता था पर अब पिछले साल से बिक्री बहुत कम हो गई थी और खर्च भी मुश्किल से चलता था। पिछले दिनों तो दोनों आधे से

अधिक बचा खाना वापिस लेकर गए थे और बड़े दुखी हुए ।

''अरे! बाबा कितने में एक प्लेट देते हो?'' कॉलेज के एक लड़के ने रामदीन को आवाज लगा कर पूछा। '' बाबू, ३६ रूपये में एक प्लेट है और रोटी चावल चाहे कितना भी ले लो। भरपेट।''

'अरे, वाह! दिखाओ तो, क्या-क्या बनाया है?'' लड़का एक-एक बर्तन का ढक्कन हटाकर देखने लगा और अंग्रेजी में अपने फोन में गिटर-पिटर कुछ बोलते जा रहा था। फिर उसने रामदीन और राम कटोरी को ठेले के आगे बुलाया और दो तीन फोटो भी खींचे ।

रामदीन उकता के बोला, 'बाबू कुछ खरीदोगे भी या बस यही करते रहोगे।'

'नहीं, बाबा मुझे भूख नहीं है मैं तो अभी यूटूब मंदिर में जा रहा हूँ । तुम्हारे लिए भी दुआ करूँगा, देख लेना तुम्हारी आज खूब बिक्री होगी ।

'हम्म, बड़ी बिक्री होगी। कहाँ है ये यूटूब मंदिर मुझे भी बताओ। जरा हम भी दर्शन कर आएँ ।'

'रामकटोरी ,ये देखो, ये आजकल के बच्चे, लेना नहीं देना नहीं चले आये टेम खोटा करने।' बडबडाते हुए रामदीन सारे बर्तन फिर से सही करने लगा।

ठंड बहुत थी तो दोनों फिर ठेले के पीछे लगी सिगड़ी के पास बैठ गए और हाथ तापने लगे।

''रामकटोरी आज तो सब महल में पिज़्ज़ा ही खाएँगे, आज न कोई आने वाला देख लईओ। ''

'हम्म' धीरे से बुढ़िया बोली।

अचानक उसने देखा ,पाँच-छह लड़के उनके सामने आ के खड़े हो गये।

"क्या यही है बाबा का ढाबा?' एक स्मार्ट से लड़के ने पूछा।

'हाँ बाबू' बाबा बोले।

"हम सब को एक-एक प्लेट दे दो और तीन प्लेट पेक भी कर दो ।' दूसरे लड़के ने कहा ।

बाबा ने जल्दी जल्दी उनको पेक करके खाना दिया पर आज तो गजब ही हो गया था ।जाने कहाँ कहाँ से लोग आते ही जा रहे थे और दो घंटे में ही उनका सारा खाना बिक गया।

बाबा बुरी तरह थक गए पर उनको कुछ समझ नहीं आया इतने लोग आये कहाँ से?

तभी सुबह वाला लड़का फिर आया और बाबा से पूछने लगा , बाबा , लोग आये कि नहीं ? फिर बर्तन की तरफ देखकर बोला , 'लगता है, दुआ कबूल हो गई । देखो मैंने यूटूब मंदिर में तुम्हारे लिए दुआ की थी।'

बाबा को बस इतना समझ आया कि यूटूब बहुत शक्तिशाली होता है और वहाँ सारी मुराद पूरी हो जाती हैं। उधर सोशल मिडिया में बाबा का ढाबा का विडियो वायरल हो रहा था और लोग बाबा के ढाबे पर पहुँचते रहे ।

■■

शालिनी वर्मा
दोहा कतर

सोनू की समझदारी

किसी गांव में एक परिवार रहता था जिसमे सोनू और मोनू दो बच्चे थे । दोनों जुड़वां थे पर बस जन्म दिन में ही समानता थी बाकि तो हर गुण पूर्व पश्चिम था। सोनू जितना समझदार मोनू उतना ही उल्टा घड़ा कोई सही बात उसके पल्ले ही नहीं पड़ती थी और कामचोरी तो ऐसे थी कि नाक पर मक्खी भी बैठ जाए तो उसे उडाने भी कोई और ही आए । माँ के लाडले तो दोनों ही थे पर कहते हैं ना नालायक बच्चा माँ को ज्यादा प्यारा होता है क्योंकि वो भी जानती है सोनू अपना हर काम करने में स क्षम है चाहे पढाई हो या कमरे की साफ सफाई रखनी हो। बड़ों की मदद करनी हो या और कोई समझदारी का काम हो पर मोनू तो अपने ऊपर भी बोझ ही था हर काम के लिए ओरों के मुँह की तरफ ताकता । ऐसा नही था कि उसे कुछ आता जाता नहीं था । वो हर बात समझता था पर खुद को जरूरत से ज्यादा चालाक समझना, झूठ बोलना किसी की बात न मानना और जिद्द करना उसकी आदत ही बन गई थी । ममता की अंधी माँ तो उसकी इन कमियों को समझ नही पाती थी या पुत्रमोह में समझना नहीं चाहती थी पर सोनू उसकी हर चालाकी को समझता था पर कहता नहीं था। उसे लगता था समय के साथ ये सुधर जाएगा पर सोनू के अन. कूल कुछ नहीं हो रहा था चीजें आगे-आगे बिगडती जा रहीं थी मोनू के झूठ और चालाकियां बढती जा रही थी । कभी वो सोनू की कापियों पर अपना नाम लिख टीचर को दिखा देता और सोनू को डांट पडवाता और कभी घर पर रखे पैसे उठा लेता और सोनू को स्कूल और घर में हमेशा डांट पडवाता । सोनू अगर माँ को बताता तो मोनू रो-रो कर अपने सच्चे होने की दुहाई देता ।अब माँ के लिए तो दोनों ही बच्चे बराबर थे किसे सच्चा माने और किसे झूठा । माँ जो भी कुछ खाने की चीजे लाती मोनू उन्हें चुपचाप चोरी करके कुछ खुद खाता कुछ दोस्तों को खिलाता पर जब माँ घर में पूछती तो कसमें खा कर और टेसुए बहा कर माँ को पक्का यकीन दिला देता कि ये काम सोनू का है । अब सोनू के भी पानी सर के ऊपर हो गया था कैसे भी अब सोनू को माँ की आँखों पर पड़ा ममता का पर्दा हटाना था । उसने एक दिन माँ के पास जा कर उन्हें एक तरकीब सुझाई जिससे मोनू को रंगे हाथ पकड़ा जा सकता था । माँ पहले तो नहीं मानी पर बाद में उसे भी लगा अगर इस उमर में ही मोनू ऐसे झूठ बोल रहा है तो वो उसके भविष्य के लिए ठीक नहीं । माँ ने दूसरे दिन कढ़ी बनाने के लिए पकोड़े बनाए और किचन में रख कर अपने और कामों में व्यस्त हो गई । आदत से मजबूर मोनू चुपचाप किचन में आकर पकोड़े उठाकर बाहर अपने दोस्तों के साथ खेलने चला गया । सबने मजे से पकौड़े खाए और घर लौट आए । सोनू अपने कमरे में पढ़ रहा था माँ जब थोड़ी देर बाद खाना बनाने किचन में आई तो पकौड़े गायब । उसने सोनू से पूछा तो उसने कहा, वो तो पढ़ रहा था तब तक पेट पकड़ कर मोनू अंदर आया तो माँ ने पूछा,'क्या पकौड़े तुमने खाए ? मोनू एकदम बोल पड़ा, मैंने नहीं खाए और पेट पकड़कर आ-आ करता टॉयलेट की तरफ भागा । तभी माँ और सोनू एक दूसरे के हाथ पर ताली मरकर जोर-जोर से हंसने लगे क्योकि अब मोनू की पोल खुल गई थी । माँ ने पकौड़ों में मीठा सोडा ज्यादा डाला था जिन्हें खा कर मोनू सारी रात बार-बार टॉयलेट भागा रहा और अब उसके पास झूठ बोलने के लिए नहीं था ।

■■

• **मीना चंदेल**
बिलासपुर हि. प्र.

ओ साथी संग ना तुम जो होते

ओ साथी संग न तुम जो होते
हमको कुछ भी मिला ना होता
क्या पाते क्या खोते
ओ साथी संग ना तुम जो होते
ओ साथी संग न तुम जो होते

तुमको पाकर हमने जाना
खोना क्या होता है
तुमको पाकर हमने जाना
खोना क्या होता है
हंसते-हंसते अंदर अंदर
रोना क्या होता है
हम पलकों को जाने कब तक
हम पलकों को जाने कब तक
छुप छुप नयन भिगोते
साथी संग न तुम जो होते
ओ साथी संग न तुम जो होते

तुमको पाकर हमने जाना जीवन क्या होता है
तुमको पाकर हमने जाना जीवन क्या होता है
सब न्योछावर करने वाला
वो मन क्या होता है
मन की लड़ियों में हम कब तक
मन की लड़ियों में हम कब तक
गम के गीत पिरोते
साथी संग न तुम जो होते
ओ साथी संग न तुम जो होते

तुमको पाकर हमने जाना प्यार किसे कहते हैं
तुमको पाकर हमने जाना प्यार किसे कहते हैं
दो जिस्मों पर इक सत्ता
अधिकार किसे कहते हैं
बोलो अकेले तुम बिन कैसे
बोलो अकेले तुम बिन कैसे
जीवन नैया खेते
ओ साथी संग न तुम जो होते
ओ साथी संग न तुम जो होते

■■

डॉ. पंकज शर्मा

तेरे सहारे

मेरे भोले बाबा मैं तेरे हूँ द्वारे
मेरी टूटी नैय्या है तेरे सहारे । ।

मेरी नाव का तू पतवार बन जा
गुनाहों को सारे तू अब माफ कर जा
।
मेरी आज नैय्या है तेरे किनारे । ।
मेरी टूटी नैय्या है तेरे सहारे । ।

उज्जैन, काशी का दर्शन करूँगा
चौखट पे तेरी मैं सर को धरूँगा
लगा अब गले मैं हूँ बाहें पसारे । ।
मेरी टूटी नैय्या है तेरे सहारे । ।

चाहत की मेरी परिक्षा न लेना ।
मेरी जिन्दगी को तू अब तार देना ।
मैं आके खड़ा अब द्वारे तुम्हारे । ।
मेरी टूटी नैय्या है तेरे सहारे । ।

मेरे प्यार का सिलसिला अब शुरू है
जीवन का मेरे तू ही तो गुरु है ।
हैं संजय को घेरे अंधेरे ये सारे । ।
मेरी टूटी नैय्या है तेरे सहारे । ।

■■

संजय शुक्ल

पहाड

पेड़ों की पत्तियां झड़ रही
मद्धम हवा के झोकों से
चिड़िया चहक रही
वसंत आया
आमों पर बोर खिले
फूल की मद्धम खुश्बू छाई
टेसू से हो रहे
पहाड़ के गाल सुर्ख
पहाड़ अपनी वेदना किसे बताए
वो बता नहीं पा रहा
पेड़ का दर्द
पत्तियों के जाने का
लोग समझेंगे
बेवजह राइ का पर्वत
पहाड़ ने पेड़ो की
पत्तियों को समझाया
मै हूँ तो तुम हो
तुम ही तो कर रही
वसंत का अभिवादन
गिरी नहीं तुम बिछ गई हो
और आने वाली नव कोपलें
तुम्हारी वंशज
अभिवादन कर रही वसंत का
कोयल की मीठी राग
लग रहा वादन हो
जैसे शहनाई का
गुंजायमान हो रही वादियाँ
गुम हुआ पहाड़ का दर्द
जो खुद अपने सूनेपन को
टेसू की चादर से ढाक रहा
कुछ समय के लिए
अपना तन।

■■

संजय वर्मा "दृष्टि"
मनावर , धार मप्र

तीन रंगों के ध्वज को लेकर,अम्बर तक फहरायें

'बलिदानों की अमर कथा को ,मुक्त कंठ से गायें।'
'तीन रंगों के ध्वज को लेकर,अम्बर तक फहरायें।'

स्वतंत्रता के हवन कुंड में, समिधा बनकर कूदे।
आजादी के सपने पाले,अपनी आंखें मूंदे।
एक मंत्र के उच्चारण ने,मिलकर हुंकार भरी ।
वीरों के विकराल रूप से, प्रभुसत्ता बहुत डरी।
संकल्पों का सिर पर बांधा,तब केसरिया बाना।
बांध मुष्टिका ग्रह त्यागकर,अपना सीना ताना।
राष्ट्र मुक्ति के आव्हान से,सोया भारत जागा।
और गुलामी के बंधन का,बिखरा इक इक धागा।
भारत का इतिहास अमिट है,इसकी अलख जगानी।
भारत के कोने कोने में ,यह गाथा पहुंचानीं।
सकल विश्व को शिक्षा देकर,विश्व गुरु कहलायें।(१)

'बलिदानों की अमर कथा को ,मुक्त कंठ से गायें।'
'तीन रंगों के ध्वज को लेकर,अम्बर तक फहरायें।'

कुछ गुमनाम शहीदों के हम ,करवाते हैं दर्शन,
जिनके बलिदानों से महका,अपना सूना आंगन।
सत्याग्रह में साथ दिया था,सेनापति बापत ने।
पोटी श्री रामुलु, पीर अली ,पूत जने भारत ने।
सत्तावन के संघर्षों में ,जब संख्या थी खासी ।
पीरअली के साथ मिली थी,तब चौदह को फांसी ।
भारत माँ का झंडा लेकर जब मातंगिनी बढ़ती ।
भारत छोड़ो आंदोलन में ,गोरों की गोली चलती।
तारा रानी श्रीवास्तव के , था आंखों में सपना।
हमें सिखाती उनकी गाथा,गोली खाकर बढ़ना।
ऐसी शौर्य पराक्रम भाषा,जीवन मे अपनायें।(२)

'बलिदानों की अमर कथा को ,मुक्त कंठ से गायें।'
'तीन रंगों के ध्वज को लेकर,अम्बर तक फहरायें।'

नेहरु तिलक गांधी लाला,शास्त्री लाल बहादुर
अपना फौलादी सीना ताने, थे पटेल जी आतुर।
रक्त धमनियों का जब खौला,शत्रु को ललकार दिया।
सहन शक्ति ने संयम तोड़ा,बढ़कर प्रतिकार किया।
रक्त बूँद से तिलक सुशोभित,अपनी खड्ग संभाली।
अरि की रक्त पिपासा लेकर, प्रकट हुई महाकाली।
क्रांति समर के महानायक हैं,मंगल पांडेय वीर।
राजगुरु सुखदेव भगत को, न फांसी करे अधीर।
आजादी के परवाने थे, चन्द्र शेखर आजाद।
नेताजी की हिन्द फौज का,करे खून सिंह नाद।
शांति पाठ के साथ जिव्हा पर,क्रांति मन्त्र को लाएं।(३)

'बलिदानों की अमर कथा को ,मुक्त कंठ से गायें।'
'तीन रंगों के ध्वज को लेकर,अम्बर तक फहरायें।'

अपनी सन्तति पीठ बांधकर, बढ़ती लक्ष्मी बाई।
इतिहासों के पृष्ठों में भी, स्वर्णिम जगह बनाई।
चेनम्मा जी बेगम हजरत ,अरु भीकाजी कामा।
कमला नेहरू अरुणा आसफ,तजती अपनी यामा।
कहीं सुचेता कृपलानी थी,लक्ष्मी सहगल दुर्गा।
स्वातंत्र्य के महासमर में , बने फिरंगी मुर्गा।
भगत सिंह का साथ निभाती,अपनी दुर्गा भाभी।
हथियारों को करा मुहैया, भेष बना मायावी।
युद्ध क्षेत्र में कूद पड़ी थी, ले तलवार दुधारी।
अमिट नाम पन्नों में अंकित, वीरवती झलकारी।
वीर पुरूष के संग पूजित हों,भारत की ललनाएँ।(४)

'बलिदानों की अमर कथा को ,मुक्त कंठ से गायें।'
'तीन रंगों के ध्वज को लेकर,अम्बर तक फहरायें।'

विश्व विजेता के सपने को ,पौरुष धूल चटाते।
हम गौरी के अभिमानों को,सत्रह बार मिटाते।
युद्ध भूमि में बलि होने की ,परिपाटी के पोषक।
उसको स्वर्ग भेजना सीखा,जो होते हैं शोषक।
स्वाभिमान की खातिर राणा,घास की रोटी खाते।
स्वामिभक्ति की रक्षा खातिर,चेतक जान लुटाते।
मुगल काल में नहीं डरे थे, छत्र साल बुंदेला।
मारवाड़ की शान बढाता, ,दुर्गा दास अकेला।
कहानी सुनकर बनना चाहते,बच्चे वीर शिवाजी।
जिनकी तलवारों से काँपे, औरंगजेब से काजी।
संकल्पों के सम्मुख पानी, भरती हैं बाधाएं।(५)

'बलिदानों की अमर कथा को ,मुक्त कंठ से गायें।'
'तीन रंगों के ध्वज को लेकर,अम्बर तक फहरायें।'

आजादी के अमर गान को ,कवियों ने भी गाया।
भारत को वैभव दिलवाने, सोया भाग्य जगाया।
माखन जी के अंतर्मन की,कहे पुष्प अभिलाषा।
बुंदेले हर बोलों की जय,सुभद्रा जी की भाषा।
पानी में भी आग लगाते, श्रीधर जी महावीर।
रामनरेश, मैथिली पढ़कर, उठ जातीं शमशीर।
सारे जहां से अच्छा अपना ,गा रहें थे इकबाल।
जयशंकर दिनकर के साथी,नवीन ठोंकते ताल।
प्रेमचंद की अभिनव कृतियां,हैं भारत की थाती।
बंकिमजी की अमर गायिकी,शस्य श्यामला गाती।
राष्ट्रवाद की स्वर लहरी फिर,जिव्हा पर चढ़ जायें।(६)

'बलिदानों की अमर कथा को ,मुक्त कंठ से गायें।'
'तीन रंगों के ध्वज को लेकर,अम्बर तक फहरायें।'

सत्य सनातन परिपाटी के,हम सब हैं गुण गायक।
नीव के ऊपर खड़ी इमारत, भार लिये महानायक।

दन्त ,शावकों के गिनते हैं, खेल खेल में बालक।
दिशा बोध के हम ज्ञाता है , हैं सच्चे अधिनायक।
प्रातः काल में विश्व शांति के, मंत्र यहीं पर गाते।
पुण्य भूमि के आरधन में, देव पुरुष झुक जाते।
पाप पुण्य में परिवर्तन को, नीर यहाँ पर बहता।
विजय मृत्यु पर पा जाता है, महा मृत्युंजय कहता।
अवतारों की पुण्य धरा का, रज कण भी चंदन है।
जो ललाट पर धारण करले, उसका अभिनन्दन है।
भारत माता के मंदिर में, मिलकर अर्घ्य चढायें। (७)

'बलिदानों की अमर कथा को ,मुक्त कंठ से गायें।'
'तीन रंगों के ध्वज को लेकर,अम्बर तक फहरायें।'

■■

डॉ राजीव कुमार पाण्डेय
गाजियाबाद,उत्तर प्रदेश
(भारत)

यही तो है वह युक्ति

प्रेम की हम अलख जगाएँ,
सह-मानव को गले लगाएँ,
सरल भाव से जीवन जिएँ,
सत्य-सुधा का रस पिएँ,
श्रेष्ठता की हर सीढ़ी चढ़ें,
न्याय मार्ग पर सतत बढ़ें,
पर सेवा को बनाएँ धर्म,
शुद्ध होंगे हमारे कर्म,
सोच बड़ी हो, सबल आत्मा,
तभी मिलेंगे परमात्मा,
तभी गा पाएँगे मुक्ति-गान,
तभी मिलेगा मोक्ष-दान,
यही तो है वह युक्ति
जीवन रहते दिलाए मुक्ति!

■■

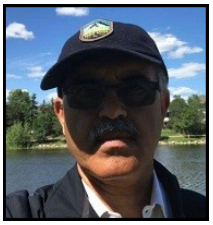

- **अरुण भगत**

नाग डसा ही करते हैं

अहमियत कम हो जाती है,
रिश्तों में दरार आ जाती है,
एक थोडासा संदेह क्या हुआ,
कि जिंदगी नर्क हो जाती हैं।
संभलकर,
फूँक- फूँक कर रखना कदम,
आजकल रिश्ते बारूदी फूटा करते हैं, कोई शिकवा नहीं गैरों से,
अपने ही शूल भेजा करते हैं।
बहुत समझाया यारों ने!
फिर भी,
बार- बार हम गलती किया करते हैं। कितना भी पिलाओ दूध !
नाग डसा ही करते हैं।

■■

प्रो. पंढरीनाथ पाटील "शिवांश"

मैं हिंदी हूँ

एक दिन का पर्व नहीं मैं तो युगों का गर्व हूँ,
बचपन की किलकारी से माँ की लोरी तक,
अलौकिक प्रेम के अनकहे शब्द हूँ।
मां की चिंता हूँ ,पिता का दुलार हूँ,
भाई का आश्वासन ,बहन का संसार हूँ।
मैं एक भाषा नही मैं तो एक परिवार हूँ।
मैं वह संपर्क हूँ जो मन को जोड़ता है,
ह्रदय की धड़कन हूँ, दिलों की झंकार हूँ,
शब्दों के बिना भी मैं प्रेम का इजहार हूँ।
सैनिक का बलिदान हूँ, किसान का खलिहान हूँ,
शहीद की विधवा का अखण्ड स्वाभिमान हूँ।
गुरु का भय हूँ, शिष्य का संशय हूँ,
अतिथि का सत्कार हूँ ,मित्र का मनुहार हूँ,
पर्वो का उत्साह हूँ ,मृत्यु का विलाप हूँ,
भक्त की भक्ति हूँ , परमात्म स्वस्ति हूँ
मैं एक संस्कृति नहीं, संस्कृतियों का समागम हूँ।
विविधता में एकता हूँ, राष्ट्र का मान हूँ,
मैं हिंदी हूँ हिंदुस्तान की शान हूँ।

■■

- **तरुणा पुंडीर 'तरुनिल'**

काली स्त्रियाँ

स्त्रियाँ काली नहीं होतीं
काली हो जाती हैं
तपती रहती हैं
आशाएँ, आकांक्षाएँ
मन की भट्टी में
प्रायः सुलगती रहती हैं
गीली लकड़ियों के साथ-साथ
घण्टों, दिनों, महीनों व सालों-साल
धुँआ-धुँआ हो जाती हैं
आँख खुलते ही
बुहारने लगती हैं राख
चढ़ा देती हैं चूल्हे पर
पुनः अधपके स्वप्नों की तरकारी
खौलते-खौलते जल जाती है
जला-भुना खाती हैं
काली स्त्रियाँ
जन्मजात काली नहीं होतीं
काली हो जाती हैं
प्रतिदिन बढ़ती
उलाहनों की प्रचंड लौ
रक्त की लालिमा
निगल लेती है
कोयला हो जाती है
गुलाबी त्वचा
उपेक्षाओं की
कालिमा से
शेष औरतें मिल
उनका शृंगार करती हैं
चलता रहता है यह कृत्य
उनके जन्म से विवाहपर्यंत
उबटन का यत्न फीका पड़ जाता है
हल्दिया रंग उन पर कभी नहीं चढ़ पाता है
जैसे कि माया का रंग मानव पर
हो जाते हैं वशीभूत
खनकते स्वर्णिम सिक्कों की
अनुगूँज के पीछे चलते हैं
अनुसरण करते हुए
काली स्त्रियाँ
जन्म से ही काली नहीं होतीं
कल्पनाओं के क्षितिज पर
चढ़ती हैं चमकते तारे की भाँति
घूमती फिरती हैं
यकायक टूट जाती हैं
खो देती हैं सम्पूर्ण रौशनी
स्याह हो जाती हैं
स्त्रियाँ काली नहीं होतीं
हो जाती हैं काली
सूर्य की अरगनी पर
कपड़े सुखाते
तपते जेठ की दुपहरी में नंगी एड़ियों से
छत पर कबूतरों की बीट बुहारते
रात हो जाती हैं
काली स्त्रियाँ
जिनके भय से काँपती हैं बलाएँ
लौट जाती हैं जिन्हें देख
द्वार से दुख संताप- व्यथाएँ
काली स्त्रियाँ
सुरक्षा कवच होती हैं
अपने घर-आँगन की खुशियों का
मगर फिर भी नहीं पातीं हैं
तृण- मात्र
सम्मान का सुख अपने लिए
स्वयं असुरक्षा में जीवन बिताती हैं
सौंदर्य धारण किये चेहरे
उन्हें चिढाते हैं
जैसे वह हँसी का पात्र हैं
कुरूपता का अहसास कराते हैं
हँसते हैं उनके श्याम रंग पर
थोड़ा-थोड़ा विष पीती हैं
वह फिर भी जीती हैं
नीले कण्ठ में लिये
कोकिल मिठास

मगर धीरे-धीरे
काल की काली छाया
घेर लेती है
हीन भावना से घिरी हुई
काली स्त्रियाँ

भावनाओं के चश्मे से
जब नहीं देखते रिश्ते उन्हें
जिनके लिए वह अब तक जीती रही हैं
मूँद लेती हैं मुख, फेर लेती हैं नजर
संग होते दुर्व्यवहार की साक्षी
सुन करुण रुदन सरस्वती
ले जाती हैं उन्हें
अनंत यात्रा पर
प्रस्थान कर जातीं
सदैव के लिये 'काली'
देव स्वागत करते
गृह लक्ष्मी आत्मा का
और घर भोगता है
अनंत काल तक घोर शापित जीवन।

■■

• **रश्मि विभा त्रिपाठी**
आगरा, उत्तर प्रदेश

स्त्री

पृथ्वी
अकेली औरत की तरह
सह रही है
जीने का दुख

भीतर से खंखोर रहे हैं लोग
ऊपर से रौंद रहे हैं लोग
कुछ लोग
अपने उन्मादक आनंद के लिये
सजा और संजो रहे हैं - पृथ्वी
जैसा अकेली स्त्री के साथ
करते हैं सलूक

सब देख रहें हैं तहस- नहस
पृथ्वी भी देख रही है
क्रमश
अपना विध्वंस
फिर भी
अनावृत
अपनी ही शक्ति से
कभी अग्नि
कभी वर्षा
कभी तूफान
कभी बाढ़
कभी अकाल से
रचाती रहती है संतुलन
विध्वंसकारी शक्तियों के विरूद्ध
बनाये रखती है अपनी हरियाली
अपनी वर्षा
अपनी शीतलता
अपनी उर्वरता
अपनी पवित्रता
अपनी अस्मिता
एक अकेली पृथ्वी
एक अकेली स्त्री की तरह

■■

पुष्पिता अवस्थी
नीदरलैंड

आजादी के नारों में

अमर शहीदों की कुर्बानी,
सूरज चांद सितारों में।
चरखा खादी और तिरंगा,
आजादी के नारों में।
अंग्रेजों के जुल्मों सितम से,
काँप गई भारत की धरती।
जलियांवाला बाग सुबकता,
रोते गाँव नगर औ बस्ती।
स्वदेशी के गूँजे नारे,
मौसम और बहारों में।
अमर शहीदों.....
दिल्ली चलो खून दो मुझको,
सुभाषचंद्र की थाती है।
आजाद हिन्द फौज के करतब,
सेना रोज दिखाती है।
जय हिंद उद्घोष है जिंदा,
जन मन ओज विचारों में।
अमर शहीदों.....
गांधी की आंधी के आगे,
चर्चिल की न एक चली।
भारत माता के जयकारे,
गूंज रहे थे गली - गली।
सबकी मन्नत हो गई पूरी,
पन्द्रह अगस्त के धारों में।
अमर शहीदों की कुर्बानी,
सूरज चांद सितारों में।।

■■

नरेन्द्र सिंह नीहार
नई दिल्ली

दोहरी संस्कृति

ऊँगलियाँ चबा कर खाने
और संस्कृति बचानें में
कोई तुक नहीं होता !
छुरी-काँटें से खाकर
आधुनिकता के ढ़ोल बजाकर भी
संस्कृति बचाई जा सकती हैय

बशर्ते आपको
हाथ जोड़कर नमस्कार करने
हाथ उठाकर सलाम करने
हाथ हिलाकर 'हाए' करने में
और मुस्कुराकर 'बाय' करने में
कोई सास्कृतिक अंतर महसूस ना हो
ये सारे अभिवादन का जरिया है
मजहबी नजरिया है।

मंदिर में पूजा-अर्चना
मस्जिद में नवाज-अदा
गुरूद्वारे में मथ्था-टेक/या गिरजाघर में प्रेयर
सब अपनी-अपनी आस्था के प्रतीक है
जिस पर तर्क-वितर्क कहाँ तक ठीक है

चाहे सामाजिक समारोह में
खुशियाँ मनाने की घड़ी हो
या शोकागार में बैठकर
दुःख बाँटने का संदर्भ
अलग-अलग तो कारण है
पर मंतव्य एक है
सुख हो या दुःख /पर मतलब एक है

चाहे जैसे परख, इसकी भावना को रख
दोहरी संस्कृति को बागीचे की तरह रख
नये-नये कलमें लगा, उम्दा प्रजाति बना--
अच्छे पहलुओं के डंठल छीलकर
अच्छाईयों का मुँह आपस में जोड़ो
समन्व्य के मजबूत धागों से बाँधकर
अनुकूल परिस्थिति में बढ़ने के लिए छोड़ो तो-

नये संस्कार की कोंपलें जरूर आयेंगी
बेहतरीन प्रतिभा खूब पलेगा-बढ़ेगा!
और आनेवाले कल को
एक उम्दा व्यक्तित्व देगा !!

डॉ कृष्ण कन्हैया
वेस्ट मिडलैंड्स ,
ब्रिटेन

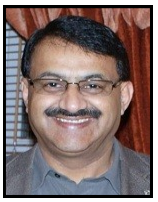

गजानन महाराज

भाद्र शुक्ल की चतुर्दशी,
मनत है गणपति त्योहार।
सवारी प्रभु का मूषक डिंक
मोदक उनका प्रिय आहार ।।

उमा सुत है प्रथम पूज्य,
प्रभु गजानन महाराज।
ऋद्धि सिद्धि संग पधार,
पूर्ण करो मेरे सब काज।

मोदक संग चढ़े जिन्हे,
दूर्वा, शमी, पुष्प लाल।
हे लंबोदर ! सिद्धिविनायक !
आए हरो मेरे सब काल।।

हे ऋद्धि, सिद्धि के दायक,
हे एकदंत ! हे विनायक !
गणेश उत्सव पर पधार,
बनो हमरे सदा सहायक।।

बप्पा गणपति पूजा हेतु,
दस दिवस को आए ।
पधार पुत्र शुभ लाभ संग,
सारी खुशियां संग लाए।।

फूल, चंदन संग अक्षत, रोली,
लिए हाथ जोड़ करते वंदन।
हे गणाध्यक्ष!, हे शिवनंदन !,
स्वीकार करो मेरा अभिनन्दन।।

■■

अंकुर सिंह
हरदासीपुर, चंदवक
जौनपुर, उ. प्र.

घड़ी

टिक-टिक करती घड़ी कह रही
आगे बढ़ते जाना
कितनी भी बाधाएं आयें
मत रुकना घबराना

मौसम बदलें, ऋतुएं बदलें
तुमको नहीं बदलना
तेज धूप में बरसातों में
अडिग तुम्हें है चलना
समय न आता पुनः लौटकर
इसको नहीं गँवाना

व्यर्थ कभी मत समय बिताओ
कीमत इसकी जानो
यदि जीवन में आगे रहना
सदा समय पहचानो
लक्ष्य प्राप्त कर ऊँचे नभ तक
अपनी पहुँच बनाना

बार बार कब इस जीवन में
सबको अवसर मिलता
कहाँ शाख से पुष्प टूटकर
कभी दुबारा खिलता
सदुपयोग कर सदा समय का
अपने स्वप्न सजाना

■■

- **पुष्प लता शर्मा**

ऐ वतन मेरे वतन

मेरे वतन,मेरे वतन ऐ मेरे प्यारे वतन २
तू जान है मेरा,पहचान है मेरा
झुकने ना पाए सर कभी ईमान है मेरा ,
धरती पर सबसे सुंदर जहान है मेरा

भारत ही मेरी आन है ,भारत ही मेरी शान है
दिल में मेरे बहने वाला ,लहू की तू ही धार है
इश्क है तुझी से,तू ही मेरा महबूब है
धड़कनों में बसने वाला साँस-साँस तू ही है

जुनून मेरा तू ही है ,सुरूर मेरा तू ही है
जज़्बात से भरा हुआ अन्दाज मेरा तू ही है
मेरा कतरा-कतरा तेरे लिए,काम गर आ जाए
मेरी रूह तुझमें मिलकर सुकून से सो जाए

आबाद रहे तू ,आबाद रहे तू
इस जहाँ से उस जहाँ तक गुलजार रहे तू
मिट्टी मेरे वतन की,मिट्टी की देह मेरी
सो जाऊँ मैं लिपटकर जब नींद आए पूरी

जर्रा-जर्रा मेरा तुझमें ही मिल जाए
और जन्म हो दुबारा तो धरती यहीं पायें
जिगर में देश मेरा,तिरंगा फहरायें
देश पर जब आए,तो देश ही बचाए सस

मेरे वतन मेरे वतन २.

■■

- **निकिता कुसुम तिवारी**

माँ

तुम्हारे शौर्याशीष का
प्रतिफल अशेष
भरत पुत्र का योगवृन्द
कीर्तिमयी हुआ धरा पर
शकुंतला माँ का
वैभव वेश।
अनंत अखण्ड शौर्याशीष
माँ कौशल्या का
राम प्रताप अनंत
खण्डित हुआ आततायी रावण
मोहपाश का कैसा अंत
कैकयी रोई जीवन भर
अमर हुआ भरत का भातृप्रेम।
श्रवण का अनंत वंदन पितृप्रेम
माँ ज्ञानवंती का शौर्याशीष ही
अखंड अशेष।
देवकी यशोदा के कृष्ण अवतार
कंस कपटी का किया सत्यानाश
विषधर का फन कुचला
गिरधर का ताज, क्षितिज गीता शौर्यासार
माँ तेरा शौर्याशीष महान।
महामाया माँ का जाया
महात्मा बुद्ध जो कहलाया
कर सत्य की खोज
मानवता का परचम
विश्व में लहराया
धरा पर नहीं कहीं
ऐसा शौर्याशीष माँ का
जिसने ईश्वरीय सत्ता का
मर्म पहचाना।
अहिंसा का धर्म
अशोक का कर्म
उनका यशधन
माँ शुभाद्रंगी का ही
शौर्याशीष।
शौर्याशीष का तेजस्वी पुंज
माँ जीजा बा का शिवा
जीत से जिनकी प्रीत
मिटती गई सदा द्वेष की खीझ।
माँ का शौर्याशीष ही
देखो इतना बलवान
जीवन हित मे दे गईं
पन्ना माँ पुत्र बलिदान।
माँ भागीरथी सापरे ने जन्मी
जोश की ज्वाला
शौर्यगाथा रच गईं लक्ष्मीबाई
क्या दुनिया में हैं ऐसी कोई अबला।
जयवंताबाई का शौर्याशीष अनंता,
महलों का त्याग
घास फूंस का बिस्तर और खाना,
वीर प्रताप महाराणा
लिख गये अमिट वीरता की गाथा।
माँ प्रभावती ने जन्मे थे सुभाष बोस
जगाया जिसने धरा पर सोया जोश
गाई थीं कहानी आजादी की
माँ तेरा यह अमर शौर्याशीष।
भगत सिंह की कुर्बानी
माँ का ही तो शौर्याशीष
राष्ट्र वंदन को
हंसी खुशी पाया जो
फांसी का ठौर
दुनिया में अब कौन सी माँ
.....विद्यावती कौर।
बापू का सत संदेश
बताओ कौन नहीं देश
माँ पुतलीबाई तेरा शौर्याशीष अशेष।
सदा सदा
माँ का शौर्याशीष
अशेष अशेष.....।

■■

• **राकेश छोकर**

पर्यावरण प्रदूषण

हम प्रकृति पूजक के वंशज हैं,
क्यूँ हम अपनी प्रकृति को ही प्रदूषित किये जा रहे हैं,
वनों में रहने वाले हमारे पूर्वज हैं,
क्यूँ हम उनके घरोंदों तक को रौंदे जा रहे हैं,
नदियों में देवी-देवता बसते हैं,
क्यूँ हम उसमें भी अघुलनिये तत्व घोले जा रहे हैं,
अम्बर में हमारे भगवान बसते हैं,
क्यूँ हम उसमें अब जहर घोले जा रहे हैं,
राम भक्त हनुमान के पिता कष्ट में हैं,
क्यूँ हम उनको नशापान को मजबूर किये जा रहे हैं,
मतस्य की कृपा से, पुनः जीवन स्थापित हुए हैं,
क्यूँ हम उनके घर को इतना प्रदूषित किये जा रहे हैं,
हमारी नस्लों को आगे भी जाना हैं,
क्यूँ हम उनकी धरती को इतना तबाह किये जा रहे हैं,
उन्नति में अवनती कर रहे हैं,
क्यूँ खुद को तिल-तिल कर मिटाये जा रहे हैं,
भविष्य की तलाश कर रहे हैं,
पर क्यूँ वर्तमान को चौपट किये जा रहे हैं,
उन्नति में अवनती कर रहे हैं,
क्यूँ हम धरती को इतना दोहे जा रहे हैं,
हमारी नस्लों को आगे भी जीना हैं,
क्यूँ नहीं, हम उनके लिए प्रकृति को संवारते जा रहे हैं?
दोहन किये जा रहे हैं,
दोहन किये जा रहे हैं।

■■

• डॉ. इ. गौतम सागर

मन के भीतर बैठ जुलाहा

मन के भीतर बैठ जुलाहा
भावों के धागे है बुनता।

आढ़े टेढ़े उलझे सुलझे
धागे कितने रंग-बिरंगे
कोई कैसा कोई कैसा
कोई किसके साथ जंचता
अपने मन से मेल मिलाता
और किसी की कब है सुनता

मन के भीतर बैठ जुलाहा
भावों के धागे है बुनता।

कौन सा ताना कहाँ जुड़ेगा
कौन सा बाना कहाँ खिलेगा
रिश्तों का हर ताना बाना
कितनी बार है बनता मिटता
टूटने की पीड़ा भी सहता
घुट घुट कितने सपने गुनता

मन के भीतर बैठ जुलाहा
भावों के धागे है बुनता।

नित नूतन करने की सोचे
मन ही मन कितना है भुनता
उलझे धागे को सुलझाता
नये कपास के फूल है चुनता
बैठ अकेले झेल झमेले
अपने ही सपनों को धुनता

मन के भीतर बैठ जुलाहा
भावों के धागे है बुनता।

■■

• डॉ प्रीति समकित सुराना

बुद्ध संदेह

समझो मित्र हरेक दुश्मन को अपनों सा व्यवहार करो।
जो दुर्गुण हैं अपने भीतर, बस उनका संहार करो।

सुख-दुख हैं मेहमान सरीखे इक आता, इक जाता है,
जो आ जाए, मीत समझकर बस उसका सत्कार करो।

हार में सुख अनुभूति जो होती, जीत में वो तो दुर्लभ है,
फूल ही फूल नहीं जीवन में, कांटों से भी प्यार करो।

अपनों ने आघात किया जब, साथ दिया तब गैरों ने,
यह है जग की रीत निराली, इससे मत इंकार करो।

कुछ न कहे पर मां बच्चे की चाहत खूब समझती है,
ममता की भाषा है अपनी इसको भी स्वीकार करो।

लोग मखौल उड़ाएंगे सुन, 'बाबा' तरस न खाएंगे,
सबके आगे मत तुम अपनी पीड़ा का इजहार करो।

■■

लक्ष्मी वंदना

खड़ा है कगार पे विनाश के समस्त विश्व,
भोले भाले प्राणियों पे अत्याचार हो रहा।
शोध हो रहे हैं उपचार के नवीन नित्य,
भीषण बीमारियों का भी प्रहार हो रहा।
मातु तेरी कृपा का प्रसाद चख लेता जोकि,
पागल तुरंग पे वही सवार हो रहा।
हिंसा उग्रवाद की फसल बोने वाला खुद,
काट रहा किंतु नहीं शर्मसार हो रहा।।

प्यार सदाचार जैसे मानवीय मूल्य आज,
हो गए तिरोहित पुनः प्रदान करदे।
घोर संकटों के चक्रव्यूह में फंसा समाज,
मुक्त हो तुरंत इसका निदान करदे।
धनधान्य देकि, सुख-शांति आए जीवन में,
इतना विवेक का भी प्रावधान कर दें।
भेदभाव ईर्ष्या-द्वेष घृणा की बुझा के आग,
दीप प्रेम के जला प्रकाशमान करदे।।

■■

बाबा कानपुरी

दोहे

चाहे घर में दो जने, चाहे वो हों दस पांच।
रिश्तों में दिखती नहीं, पहले वाली आंच ।।

घर बंटा, देहरी बंटी, बंटे प्यार-विश्वास।
एक-एक कर सब बंटे, हंसी, खुशी, उल्लास।।

रिश्ते सब 'इन लह्' हुए, क्या साला, क्या सास।
पडी गांठ-पर-गांठ है, गायब हुई मिठास।।

हर रिश्ते की नींव की, दरकी आज जमीन।
पति-पत्नी भी अब लगें, जैसे भारत-चीन।।

न ही युद्ध की घोषणा, और न युद्ध-विराम।
शीत-युद्ध के दौर से, रिश्ते हुए तमाम।।

रिश्तों में है रिक्तता, साँसों में संत्रास।
घर में भी अब भोगते, लोग यहाँ वनवास।।

'स्वारथ' जी जब से हुए, रिश्तों के मध्यस्थ।
रिश्ते तब से हो गए, घावों के अभ्यस्त।।

अब ऐसे कुछ हो गए, शहरों में परिवार।
बाबूजी चाकर हुए, अम्मा चौकीदार।।

माँ मूरत थी नेह की, बापू आशीर्वाद।
बातें ये इतिहास की, नहीं किसी को याद।।

समकालिक संदर्भ में, मुख्य हुआ बाजार।
स्वार्थपरता बनी तभी, रिश्तों का आधार।।

क्यों रिश्ते पत्थर हुए, गया कहां सब ताप।
पूछ रही संवेदना, आज आप से आप।।

■■

डॉ. रामनिवास 'मानव'
५७१, सैक्टर-१, पार्ट-२,
नारनौल-१२३००१ (हरि.)'

हम है हिंदुस्तानी

रंग बिरंगी धरा हमारी, ओढ़े चूनर धानी।
भारत के बच्चे लिखते हैं , इसकी अमर कहानी।
हम हैं हिंदुस्तानी, हम हैं हिंदुस्तानी।।

अमरीकन तोपे हैं तानी, रसियन गोले वाली।
इजरायली ड्रोनों का बेड़ा, है रफेल बलशाली।
इंग्लिश वाली बंदूकों से, होती मारा मारी।
शत्रु हमारे बाहू बल से, मांग रहा है पानी।
हम हैं हिंदुस्तानी, हम हैं हिंदुस्तानी

अम्बर नापा कितना ऊंचा, सागर कितना गहरा।
मंगल पर है खोजा जीवन, सूरज पर भी पहरा।
नए नए रहकेट मिशायल, लखलख दुनियां हारी।
इसरो व डी आर डी ओ से, है सबको हैरानी।
हम हैं हिंदुस्तानी, हम हैं एफसी।

यहां भाईऋभाई से दिखते, मिलते केवल तन से।
लड़ते हैं सत्ता की खातिर, पाते सीटें जन से।
पर सबसे पहले हो भारत, रहती कोशिश जारी।
विश्व पटल पर आलोकित हो, ऐसी मन में ठानी।
हम हैं हिंदुस्तानी, हम हैं हिंदुस्तानी।।

■■

डॉक्टर जयप्रकाश मिश्र
गाजियाबाद (उ० प्र०)
भारत

सावन की इंद्रधनुषी रंग

सावन की इंद्रधनुषी रंग सजाना जानती हूं मैं
बनकर बूंद को पहली, धरा को भिगोना जानती हूं मैं
ओढ़ के मै लहरिया , लेकर तीज के सब रंग
वह बिंदी चूड़ियां और मेहंदी रचाना जानती हूं मैं
सावन की इंद्रधनुषी रंग सजाना जानती हूं मैं
बनकर बूंद को पहली धरा को भिगोना जानती हूं मैं

घेवर मालपुए है, और बने आम रस के मिष्ठान
खिलाकर प्यार से सबको, दिल में बस जाना जानती हूं मैं
सावन की इंद्रधनुषी रंग सजाना जानती हूं मैं ...

वो पीड़ा राधा के मन की, वो बिरहा नीर दुल्हन के
के बनके गीत कान्हा के , बहलाना जानती हूं मैं
सावन की इंद्रधनुषी रंग सजाना जानती हूं मैं ....

हो कांवरिया का गंगाजल या जन्म हो बाल गोपाला का
भक्ति के लेकर गहरे रंग , दिलों को रंग जाना जानती हूं मैं
सावन की इंद्रधनुषी रंग सजाना जानती हूं मैं ...

धरा की प्यास है बुझती कृषक की आस है जगती
सावन की मंद फुहारों सी डाड्स बधाना जानती हूं मैं
सावन की इंद्रधनुषी रंग सजाना जानती हूं मैं ....

मेलो पर छाई है रौनके झूलो पर झूलती खुशियां
योवन के रंग ये प्यारे, पिरोना जानती हूं मैं
सावन की इंद्रधनुषी रंग सजाना जानती हूं मैं ....

■■

वंदना खुराना

साथ दे दो चलो जीत हम जाएंगे

वक्त की आंधियां आओ सह लें चलो
लड़खड़ाते कदम फिर संभल जाएंगे
आओ हम ही चलो आज झुक जाएंगे
टूटते रिश्ते फिर से संभल जाएंगे..।।

रिश्तों के खेत में हो उपज प्रेम की
खुशियों के उर्वरक से ही हरियाली हो
काट लें आओ मिलकर फसल प्रेम की
मन के खलिहान फिर से संवर जाएंगे..।।

जो कभी थे हमारे वो अब क्यों नहीं
प्रीति सच्ची थी पहले तो अब क्यों नहीं
आओ छोड़ो शिकायत खतम करते हैं
आज फिर पहले जैसे निखर जाएंगे..।।

अपनों से खेद ज्यादा उचित भी नहीं
रख लो मत भेद मन भेद फिर भी नहीं
अपनों से जीत जाना भी इक हार है
हार मानो चलो एक हो जाएंगे..।।

सच्ची निष्ठा प्रतिष्ठा सदा प्रेम से
जीवन में बस प्रगति अपनों के साथ से
एक जुटता से ही मिलता संबल सदा
साथ दे दो चलो जीत हम जाएंगे..।।
साथ दे दो चलो जीत हम जाएंगे..।।

■■

विजय कनौजिया
अम्बेडकर नगर (उत्तर प्रदेश)

एक है वंदना

वंदना एक खूबसूरत बदकिस्मत लड़की....अपने घर की तीसरी पुत्री..उससे पहले भी दो और पुत्रियाँ ...संयोग से वंदना के जन्म से ही पिता को व्यापार में घाटा होना शुरू हो गया । बुजुर्गों का अंधविश्वास शुरू हो गया ओह ! तीसरी लड़की है यह तो होना ही था....यही से शुरू होती है वंदना के दुर्भाग्य की कहानी... आमतौर पर माना जाता है कि जैसा बच्चे को लेबल करते हैं वह अवचेतन में वैसा ही सोचता है और धीरे-धीरे वैसा ही स्वयं को समझने लगता है । यही वंदना के साथ भी हुआ ।

वन्दना चार भाई-बहनों में तीसरे नम्बर की और उसके बाद भाई.... वह तो जैसे प्यार की हकदार ही नहीं थी । यद्यपि उसे भाई दृ बहनों की तरह सब जरूरत की चीजें मिलती पर प्यार पर उसका हक नहीं था ,खासकर माँ के प्यार का । घर में गरीबी पैर पसार चुकी थी..... ऊपर से सबकी पढ़ाई का बोझ....जब-तब उस पर माँ का गुस्सा निकलता । तेरे पैदा होते ही सब उजाड़ हो गया..उसे यह सुनाया जाता । वन्दना बचपन से ही स्वभाव की बहुत अच्छी थी द्य अक्सर शांति से सब आरोप सहती.... पर वह भी इंसान ही तो थी द्य जब उसे इन तानों पर गुस्सा आता और वह उसे दिखाने की गलती करती तो उसकी ही पिटाई होती । कई बार वह घर की सीढ़ियों में बैठकर देर रात तक रोती थी । यह देखकर मैं बहुत दुखी होती । उसे सांत्वना भी देती । पर वह तो उसके लिए पर्याप्त नहीं थी । जब तक बच्चे को अपने माता-पिता का प्यार भरा स्पर्श न मिले उसके लिए किसी और का स्पर्श विशेष मायने नहीं रखता । मेरे पास बैठते ही वह बिलख-बिलख कर रोती । उसके साथ मैं भी आँसू बहाती...पर कर कुछ नहीं सकती थी । बी.ए. पास करने के बाद उसकी एक व्यापारी के लड़के से शादी तय हो गई । कपड़ों के व्यापारी थे ..जैसा कि मैंने पहले भी लिखा कि वंदना सांवली खूबसूरत ,सांचे में ढली ५ फुट ४ इंच लम्बी तन्वंगी युवती थी । बिना दहेज के इतने बड़े परिवार में शादी...घर में सब बहुत खुश थे...वंदना भी कम खुश नहीं थी । उसने विवाह से पहले एक दिन हंस कर भी कहा था कि अब तो असैनी (बदकिस्मत) का ठप्पा भी खत्म हो जाएगा । घर की दुत्कारों से निजात पा जाऊँगी । लड़के वाले मर्सीडीज में बैठकर आये थे । लड़का भी ठीक था...हमारे यहाँ एक कहावत है - घी की लड्डू टेढ़े भी भले...उस हिसाब से लड़का अच्छा था । वंदना के नसीब जाग गये यह देखकर मुझे काफी तसल्ली हुई । उसकी शादी बिना दहेज की थी सो सब कुछ साधारण ही दिया गया । वंदना ट्यूशन करती थी सो उसके पास कुछ रुपये थे । पहली बार वह जिद करके ब्यूटी पार्लर गई । दुल्हन के रूप में उसका चेहरा चमक रहा था । उस दिन उसे देखकर मुझे स्मिता पाटिल और शबाना आजमी की याद आई थी।

वंदना का दुर्भाग्य उसका पीछा कहाँ छोड़ने वाला था । एक महीने में ही पता लग गया कि उसका पति मिर्गी का मरीज था ऊपर से शराबी भी.....जिस बिना दहेज की शादी का गुणगान करते उसके पिता जी नहीं थकते थे...उसका रहस्य समझ में आया...इस छलावे में वंदना की सास, जेठ, ननद सब भागीदार थे । सास को उसकी तकलीफ देखकर शायद तरस आता था या अपने पाप का पश्चात्ताप था उसने वंदना को बहुत जेवर दिए ... उसको खुश करने का प्रयास भी करती । किसी भी औरत को यदि धोखे में रखकर शादी की जाए तो क्या वह जेवर पाकर खुश रह सकती है ? माँ से तिरस्कृत वंदना ने हालात से समझौता किया । पर वह अन्दर से टूट चुकी थी ... सपोर्ट के नाम पर एक बहन साथ देती थी पर वह तो काफी नहीं था । वंदना तो हर पल मर-मरकर जी रही थी । पहली संतान लड़की हुई.. बहुत प्यारी... वंदना अपना दुःख जैसे भूल गई बच्ची के साथ मस्त रहती...पति ने भी बेटी का स्वागत किया....पर टूटी हुई वंदना को प्लूरिसी ने आ दबोचा । पति शराबी ऊपर से मिर्गी का मरीज...घरवालों के रहमो करम पर इलाज हुआ... उसके बाद फिर दो लडकियाँ और एक लड़का...वंदना के चार बच्चे... पति का साथ बच्चे पैदा करने तक सीमित था...वंदना किस दुःख में जी रही है इससे उसका लेना-देना ही नहीं था । डायबटीज के कारण उसके आगे के दो दांत भी गिर गए थे । एक खूबसूरत सुघड़ लड़की का ऐसा हाल होगा इसकी तो कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। वंदना को अपने बच्चे पढ़ाने थे । उसने उन्हें पढ़ाया भी । पति को देखती तो सोचती थी...न जाने कब मेरा इनका साथ छूट जाए । अभी तो व्यापार से पैसे मिल जायेंगे...इनके जीते जी इन लड़कियों की शादी हो जाए...पर उसका ऐसा सौभाग्य कहाँ था ? पति को एक दिन सड़क पर ही मिर्गी का दौरा पड़ा और वे वहीं प्राणहीन हो गये । वे तो पहले से ही चिंता मुक्त थे पर उसे और भी चिंता के अंधकार में भटकने के लिए छोड़ गये । जिस दीवार के सहारे उसे घर खर्च मिलता था वह तो टूट चुकी थी । पति जिंदा थे तो उनके घर आने की इन्तजार में उसने आंसुओं से खिड़कियों को भिगोया था...कई बार आधी रात को नशे में धुत्त उसके पति को कोई शराबी दोस्त घर छोड़ जाया करता । वंदना अपनी लाचारी पर बिलख-बिलखकर रोया करती थी । काश ! वह शिवानी की नायिका कृष्णकली की तरह कभी हारना या झुकना न सीखती । पर खुद को अभागिनी समझने वाली तो हथियार डाल चुकी थी । व्यापार से अपर्याप्त धन राशि देकर उसे ससुराल वालों ने मंझधार में छोड़ दिया... चार बच्चे...रहने को दो कमरे और कुछ पैसा और जेवर उसके पास रह गया.... सास भी चल बसीं..अब उसकी ओर से बोलने वाला कोई नहीं था....पिता अपनी औपचारिकता निभाकर चले गये । उनके पास कुछ था भी नहीं सिवाय अपनी मजबूरियों के... अक्सर सोचती हूँ वे वन्दना के सर पर हाथ रखते ,प्यार भरा स्पर्श करते तो सम्भवतः उसे एहसास होता कि माँ-बाप तो अपने हैं ।

वन्दना ने अपने तीनों बेटियों को स्नातक कराया । तीनों ट्युशन करती थीं । खाने -पीने का गुजारा चल रहा था । पर वन्दना की ससुराल में सबको उनकी शादी करवाने की जल्दी थी । कमजोर माँ की सन्तान थीं...काम से ज्यादा उन्होंने भी शादी को महत्त्व दिया ...चंदे से तीनों की शादी हो गई । बेटियाँ खाते-पीते घर में गई उनकी ओर से वंदना बेफिक्र हो गई थी । जेवर बेचकर लड़के को मैकनिकल इंजिनियर बना दिया.... संतोषी वंदना संतुष्ट हो गई । उसकी नौकरी लग गई घर के गुजारे लायक तनख्वाह उसे मिलने लगी । अभी दुर्भाग्य ने साथ न छोड़ा था.....अबकी बार ब्रैस्ट केंसर ने उसे आ दबोचा.... चुपचाप होम्योपैथिक इलाज कराती रही.....बेटे की इतनी

आमदनी नहीं थी कि इलाज किया जा सके ....फिर से चंदा इकट्ठा किया गया । पहले डायबटीज पर नियंत्रण पाना था । बहनों ने मिलकर जबरदस्ती उसका ऑपरेशन और कीमो कराया । अब वह फिर संतुष्ट होकर जीवन जीने लगी.....अब एक और दुर्भाग्य .....उसकी आँखों से बहुत कम दिखने लगा । लोगों के कपड़े सीकर वह घर खर्च के लिए रुपये इकट्ठा करती थी अब अपने कपड़ों में बटन लगाने लायक भी नहीं रही । समाचार पत्र पढ़ने की शौकीन वन्दना अब किसी के फोन नम्बर नहीं देख पाती है । बहुत बार भगवान् से पूछती हूँ कि वंदना का क्या कसूर था जो उसे जीवन का सफर इतने दर्दनाक तरीके से तय करना पड़ रहा है....क्या उस संतोषी को हँसने का खुश रहने का कभी भी हक नहीं था ? कहते हैं १२ साल बाद तो घूरे के भाग भी जग जाते हैं क्या वंदना घूरे से भी गई बीती है ? सच में मुझे भगवान् से शिकायत है । वंदना हमेशा मेरे दिमाग में छाई रहती है । आज उसके बारे में लिखते समय मेरे आँसू मेरी लेखनी को धुंधला कर रहे हैं । विद्वान् जन कहते हैं कि जो हम चाहते हैं वही हम बोले और सोचें । उससे जो तरंगे मिलेंगी वे भगवान् जरूर सुनता है । मैं तो हर दिन दिल की गहराइयों से कहती हूँ ...वंदना तू खुश रहे...बहुत खुश रहे...वंदना कोई गैर नहीं मेरी चचेरी बहन है । इसे लिखते समय लेखनी को विशेष परिश्रम नहीं करना पड़ा, सब कुछ स्वयं ही सहज रूप से लिखता गया ।

■■

- **चित्रा गुप्ता**

एक अदद हाथ

किसी तरह की अपेक्षा ही
जब न बची हो रिश्तों में
कुछ भी न हो एकमुश्त
सब थोड़ा-थोड़ा किश्तों में
दूर दूर तक जहाँ नजर जाए
सब वीराना नजर आता है
अकेला होने से, अकेले होने
का दुख ज़्यादा सताता है
रात जो कटी हो करवटें
बदलते और घडी ताकते
चेहरे पर पड़ती धूप को जब
सुबह अपने हाथों से ढांकते

उस लम्हा बस जरुरत है
मात्र एक अदद हाथ की
खालीपन को चीरते हुए
बस किसी के साथ की /वो जो छोड़ रहा है धीरे धीरे
उसे जीवन में वापस लाना है
किसी के जहन में है अभी वो
ये कैसे कर उसे बतलाना है
कोई तो जीने की वजह हो /कोई अनजानी सी चाहत
दो बोल गर कोई बोले मीठे
मिले दिल को सुकूं और राहत /किसी का हो फिर इंतजार
किसी का तो उसे दीदार हो
कोई तो अपना समझा किये/किसी को तो वो प्यार हो
लम्हे

मुझे छोटे-छोटे लम्हे
समेटने का जूनून है/भले न बड़ा न महंगा
थोड़े में ही सुकून है
बच्चे की नादानी/मासूम से सवाल
बाग में खिले फूल
अतरंगी सा ख्याल /दोस्तों के संग मजाक
अजनबी की मुस्कान
महबूब की शिकायत/कभी मौसम मेहरबान
किसी खास की याद
माँ की प्यारी थपकी/पापा की वो हिदायत
संडे दोपहर की झपकी
मेसेज का तुरंत जवाब/कहीं न्योता मिल जाना
पिक्चर में कुछ देखकर
आंखों का भर आना/वो बीते सुहाने किस्से
देखी हसीन वादियाँ
पुराने फोटो का मिलना/परिवार की शादियां
पहली लिखी कविता
उनसे वो नजरें चुराना/अपने शहर की यादें
कुछ खोया मिल जाना
स्नेह से मिला तोहफा/बातों से निकली बात
समुद्र किनारे टहलना
डाल कर हाथों में हाथ/लम्हा लम्हा जोड़ कर
इस जीवन को पिरोना
कुछ बड़े की चाहत में
छोटा छोटा क्यूँ खोना

■■

विश्वास दुबे
नीदरलैंड

अनशन

गाँव में चौपाल पर व्यवस्था के खिलाफ अनशन चल रहा था। प्रधान पद के पराजित उम्मीदवार ने बहुत सारी समस्याओं को लेकर अनशन करने का फैसला लिया था।
पूरे गाँव में घूम-घूमकर इस समय के वर्तमान प्रधान की व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक बुराइयाँ करते हुए चन्द्रप्रकाश जी आखिर में चीपाल के पास बने चबूतरे पर जाकर बैठ गए।

चन्द्रप्रकाश जी के साथ उनके कुछ अन्य साथी भी थे जो समय समय पर जिन्दाबाद का नारा लगाते रहते थे गाँव में यह बात जंगल में आग की तरह फैल गई।
क्या बूढ़े, क्या बच्चे, क्या जवान सभी चौपाल की तरफ बढ़े चले जा रहे थे। सब की चाहत यही थी कि जैसे तैसे चन्द्रप्रकाश जी की माँग पूरी हो जाये ।

होते-होते यह समाचार प्रधान जी के कानों तक पहुँचा। सबसे पहले उन्होंने अपने सलाहकारों से मंत्रणा की और चल पड़े अनशन स्थल की ओर । जाकर देखा तो वहाँ इकट्ठे लोगों में बच्चों की संख्या अधिक दि खाई पड़ी।
प्रधान जी ने चन्द्रप्रकाश जी से हाथ मिलाने के बाद उन्हीं के पास बैठ गए।
और बातों-ही-बातों में बोले-
"भाई आपके घर के पास वाला खाली स्थान अब तक तो आपके पास ही था पर अब उसका पट्टा नवीनीकृत करना पड़ेगा। हम तो सोच रहे थे आपके ही पास रहे। और शासन ने एक उपप्रधान बनाने की योजना बनाई है। आपसे बेहतर इस पद के लिए कोई हो नहीं सकता।" श्याम बिहारी बोले जा रहे थे व चन्द्रप्रकाश के तेवर ढीले पड़ते जा रहे थे।

अन्त में श्याम बिहारी ने कहा- 'पिछले साल आपने ठेका लेकर नालियाँ बनवाई थी, और उसी साल भयंकर सूखा पड़ा था आपने पिछले दस्तावेजों में लिख रखा है कि अचानक आई बारिश में २८ बोरी सीम. ेंट बह गई जबकि बारिश तो पिछले साल आई ही नहीं और इस तरह आपके द्वारा बनाई गई नालियां भी ४ महीने में ही टूट गई इसके इं. क्वायरी चल रही है हर देखता हूं मैं बेहतर क्या कर सकता हूं आपके लिए।

■■

डा जय शंकर शुक्ल
नई दिल्ली
भारत

डा नैना

खट ..खट अस्पताल की सीढियां चढती ..डॉ नैना..
रोगियों की आस..परिजनों का विश्वास ..
वे मात्र कुशल स्त्री रोग विशेषज्ञ ही नहीं थी बल्कि अपने मीठे बोल ..अनमोल सुझाव ..जरुरतमंदों की रुपये-पैसे ..हरेक प्रकार से मददगार..सबके बीच लोकप्रिय थीं.उसी बीच नर्स हाथ में मिठाई का डिब्बा लेकर आई," मैम ,सबको दे दिया..आप.."
"मैं ले लूंगी.."उन्होंने लंबी सांस भरी ..आपरेशन बहुत जटिल था ..जच्चा-बच्चा को सुरक्षित देख डॉक्टर नैना के मु खमंडल पर अनोखी आभा खेल गयी..
" मैम ,एक बात पूछूं.."
"पूछो.."
"आप किसी भी कन्या के जन्म पर मिठाई क्यों बंटवाती हैं वह भी अपने पैसों से.."
"क्योंकि कुछ घर वाले बेटी के जन्म को अभिशाप मानते हैं ... जैसा कि मेरे जन्म पर.."
फिर तो परतें खुलती गई ..एक अदद बेटे के आस में अपने माता-पिता की आठवीं संतान डॉ नैना.."मां बेटी जन्मते ही ची खकर बेहोश हो गयी थी ..पिता ने सिर धुन लिया था ..इससे इतर मेरी बडी बहनों ने इस गुडिया को हृदय से लगाया.. पालन-पोषण किया.."
समय पंख लगाकर उड़ता गया...और आज मैं अपने परिश्रम . .बडों के आशीर्वाद से डॉक्टर बनी हूं...साथ ही मेरे माता-पिता भी मेरे साथ ही रहते हैं..एक बेटे और एक बेटी की मां हूं..क्या बेटा और क्या बेटी ..संतान स्वस्थ ..परिवार सीमित हो न कि बेटा और बेटी.."
" जी,मैम.."
"आज हम सातों बहनें समाज के सामने उदाहरण हैं ..चाहे पारिवारिक सुख -शांति हो या नैहर -ससुराल में ताल-मेल.."
माता-पिता ,सास-ससुर की वृद्धावस्था में देख-भाल ..
आज माता-पिता कहते नहीं थकते.."कमतर नहीं हैं बेटियां.."
बस उन्हें रोको मत उडान भरने दो..

■■

डॉ उर्मिला सिन्हा
(रांची)
भारत

आत्मविश्वास

अवरोधों को राह के चुन चुन करिये पार।
हिम्मत, साहस, ऊर्जा तुझमें भरी अपार।

मिलने को मिल जाऐंगे, बने सहारा लोग।
लेकिन कुछ दिन बाद ही, ऐसा दिखेगा योग।
वो तो एक शाप थे, समझा जिन्हें उपहार।
हिम्मत, साहस, ऊर्जा तुझमें भरी अपार ।

खुद ही को पहचान ले, मत बन तूं अनजान।
अक्षत ऊर्जा का तुझे, मिला गजब वरदान।
कभी नहीं तूं पाएगा, फिर जीवन में हार।
हिम्मत, साहस, ऊर्जा तुझमें भरी अपार ।

मुश्किल लगता है मगर, होता है आसान।
सर्वप्रथम तूं त्याग, ये कठिनाई का भान।
मंजिल मुस्कराएगी, देख तेरा व्यवहार।
हिम्मत, साहस, ऊर्जा तुझमें भरी अपार ।

अंधियारे से लड़ने को, बन जा दीपक खास।
सूरज सा चमकाएगा, तुझे तेरा विश्वास।
दुनिया पूजेगी तुझे, समझ सपन साकार।
हिम्मत, साहस, ऊर्जा तुझमें भरी अपार ।

■■

डॉ मीनू पाण्डेय नयन

भोजपत्रों को कुरेदा जा रहा है

अब समय बदला है अब परिवेश बदला
चित्र की व्याख्या चारित्रिक भेष बदला
अंक को खुद तर्क पे चढ़ना प्रायोजित
कनक अब बढ़ कर कसौटी जा रहा है
भावना तो ठीक लेकिन भाव खातिर
भोजपत्रों को कुरेदा जा रहा है ।

दारूणी की खोज में लिपटा मनिषी
पर दवा जब चाहिए तब मौन था वह
आज सागर से उठा जल सिंचता कल
आग की लपटों से पुछा कौन था वह
शाख खुद से आज बाजु बंद करके
कस कमर धुंधी समर का गा रहा है,
भावना तो ठीक लेकिन भाव खातिर
भोजपत्रों को कुरेदा जा रहा है ।

धर्म का चिंतन हो या धर्मान्धता हो
नौनिहालो में हलाहल घोलता अब
जेष्ठ हो काबिज भला सिंघासनों से
भेद की भाषा ही भरकस बोलता अब
जो अंगीठी चल पड़ी थी भेट भरने
आज उससे घर जलाया जा रहा है ,
भावना तो ठीक लेकिन भाव खातिर
भोजपत्रों को कुरेदा जा रहा है ।

कल्पना के पार बैठे नात रिस्ते
दृश्य ध्रुव गर आंकना है आप को
स्वान देखो मुक्त विचरे पाकशाला
चौखटों की नेमदारी बाप को ।
अब गरुड़ में व्याल का भी खौफ उपजा
लोमड़ी को भय कि इंसा आ रहा है ।
भावना तो ठीक लेकिन भाव खातिर
भोज पत्रों को कुरेदा जा रहा है ।।

■■

सन्नी भारद्वाज
भभुआ, बिहार

शरीफ आदमी

शरीफ आदमी यूँ तो हमेशा ही शरीफ होता है , पर कभी कभी इतना बुरी तरह से शरीफ होता है कि शराफत भी शर्माने लगती है। वह हर समय शराफत से पेश आता है। वह जितनी शराफत से मन्दिर जाता है उतनी ही शराफत से वेश्यालय।

वह अपने बच्चों से इतनी शराफत से पेश आता है कि बच्चों को शक होने लगता है कि यह वाकई हमारा बाप है कि नहीं। पत्नी इसकी शराफत से तंग आकर एक दिन घर छोड़कर चली जाती है। यह शराफत से उसे जाते देखता रहता है। ये पत्नी को छोड़ सकता है , पर शराफत नहीं छोड़ सकता।

ये हर काम शराफत से करता है। रिश्वत भी इतनी शराफत से लेता है कि देने वाला तयशुदा रकम से हजार पाँच सौ ज्यादा दे देता है। सोचता है , बड़े बाबू कितने शरीफ हैं ।

ये रिश्वत को रिश्वत की तरह नहीं , ईश्वर के प्रसाद की तरह लेते हैं। प्रसाद ग्रहण न करना ईश्वर का अपमान है। सत्यनारायण की कथा में राजा द्व ारा प्रसाद ग्रहण न करने के परिणाम ये जानते हैं , अतः कभी मना नहीं करते , बल्कि प्रसाद देने वाला भूल जाये तो उसे शराफत से याद भी दिला देते हैं।

ये एक तो प्रेम करते ही नहीं क्योंकि लोगों से सुन रखा है कि शरीफ आदमी प्रेम के पचड़े में नहीं पड़ते और अगर करते भी हैं तो इतनी शराफत से कि प्रेम का प्रोडक्ट मार्केट में आने पर ही लोगों को पता चलता है कि जनाब प्रेम भी कर चुके हैं।

ये महिलाओं को इतनी शराफत से ताकते हैं कि बेचारी शर्म से मुँह छुपा लेती हैं।

ये किसी की उधारी तब तक नहीं चुकाते जब तक कि देने वाला शराफत से तकादे न करने लगे।

ये झूठ भी बोलते हैं तो इतनी शराफत से कि सच को दौड़ लगाने में ही भलाई दिखती है।

ये सिनेमा हह्ल में अमर्यादित दृश्य पर लोगों को सीटी बजाते देख उन पर लानत भेजने लगते हैं और घर आकर बड़ी शराफत के साथ नीली फिल्म दे खते हैं।

किसी भी परिस्थिति में ये शराफत का दामन नहीं छोड़ते। शराफत ने बहुत कोशिश की इनका साथ छोड़ने की , पर इन्होंने उसे छोड़ने नहीं दिया।

ये किसी के घर मातमपुर्सी के लिए जाते हैं तो शराफत का इतना गाढ़ा पाउडर लगाकर जाते हैं कि लोगों को लगने लगता कि इनके घर भी कोई गमी हो गई है और वे अपना दुःख भूलकर इनको सांत्वना देने लगते हैं।

कोई भिखारी इनके घर भीख मांगने आता है पर इनकी शराफत देखकर दस का नोट यह कहते हुए इनके हाथ पर रख देता है कि बाबू जी इन पैसों से चाय पी लीजिएगा , मुझे शांति मिलेगी और ये उसकी भावनाओं का आदर करते हैं।

ये खाना भी इतनी शराफत से खाते हैं कि रोटियों को पता ही नहीं चलता कि उन्हें खाया जा रहा है।

इनकी शराफत देखकर लोग कहने लगे हैं कि यार कुछ भी हो ये साला है बहुत शरीफ।

■■

• **रामस्वरूप दीक्षित**
सिद्ध बाबा कॉलोनी
टीकमगढ़ ४७२००१

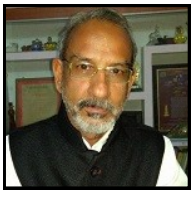

हर रिश्ते का है मान बडा

‘‘ ये बंधन है इक डोरी का,
और आशाओं का सागर है,
हर रिश्ते का है मान बड़ा,
हर साँस पे जान न्यौछावर है।।

हम रखेंगे हर मान यहाँ,
हर रिश्ते की पहचान यहाँ,
भारत जैसी कोई भूमि नहीं,
इतने व्रत, त्योहार कहाँ,
हर धर्म को मान दिया हमने,
भारत की करती शान बयाँ,
दूर देश में बसते हम,
पर अपने देश की आन महान,
इस आन पे बलिहारी कितने,
कितनों ने खून बहाया था,
बहनों की आन रखी हर दम,
चाहे रक्त से हाथ सजाया था,

राखी की इस डोर की बहना,
हम सौगंध उठाते हैं,
तुझ पर आँच न आने देंगे,
तेरी कसम हम खाते हैं,
जब तक साँस चलेगी अपनी,
न आँचल कभी मैला होगा,
तेरे भाई के यश जैसा ही,
तेरा यश फैला होगा,
तेरी चूनर धवल रहे बहना,
बस ये अरमान सजाया है,
इतिहास के पन्ने कहते हैं,
इस रिश्ते का है नाम सवाया है,
बहनों की रक्षा की खातिर,
भाई ने शीश कटाया है।।

ये बंधन है इक डोरी का,
और आशाओं का सागर है,
हर रिश्ते का है मान बड़ा,
हर साँस पे जान न्यौछावर है।।’’

■■

डॉ मीनू पाराशर ‘मानसी’
कतर

संवेदनाएं

सब कुछ बदल सकते हो,
खरीद सकते हो,
लेकिन मेरी संवेदनाएं नहीं !

पर सुन लो ये भी कि,
मेरी संवेदनाऐं इतनी कमजोर नहीं,
कि हर बात पे बिलखें !

पर सिसकतीं जरूर हैं ....

हाँ, सिसकतीं जरूर हैं
जब किसी मासूम को
सिर्फ उसकी पैदाइश के कारण मारा जाता है !
जब कोई मरता है क्योंकि वो,
वो खाता है जो तुम्हें पसंद नहीं !
जब कोई सहता है क्योंकि
उसका विश्वास अलग है तुम्हारे तरीकों से !

सच कहो क्या ये इतनी बड़ी बात नहीं,
कि बवाल किया जाए ?
क्या सबको नहीं जीने का हक दिया जाए ?
मेरी संवेदनाऐं हमेशा सिसकतीं है,
हमेशा सिसकतीं हैं,
जब कहीं अन्याय होता है !
क्योंकि कोरी सोच का न कोई जात न धर्म होता है!

कोने में बैठ के सुबकतीं हैं,
डरती है अँधेरे से अपने ही मुहल्ले में !

बस अब बहुत हुआ.....

बख्श दो,
बख्श दो,
हर बात को मजहबी जामा पहनाना !
रोको इस खून को बेवजह उबलने से,

और,
और,

रोक लो सिसकियों को बिलखने से२
रोक लो सिसकियों को बिलखने से ...

कागज पे फुदकती गिलहरियाँ
कुछ फुदकती गिलहरियाँ
रख छोड़ी हैं कागज पे२

गर हाथ आए तो पकड़ लेना
पुचकार लेना, सहला देना२
दाना देकर बहला लेना२

पर देखो२
बंद नहीं करना
जब्त नहीं करना
पिंजरे में मत रखना
मर जायेंगी ये वरना२

रहने देना आजाद२

क्योंकि ये आजाद ही फुदकती हैं २
ये आजाद ही ठुमकती हैं २

बड़े जतन से मना कर, रिझा कर,
दुनिया की उलझनों से छुपा कर,
काली परछाइयों से बचा कर,
लायी हूँ इन्हें यहाँ फुसला कर,

इन्हें निहार लेना दूर से,
'डोर' से पर नहीं बांधना,

पकड़ पाओ अगर....
तो पकड़ लो...

कुछ फुदकती गिलहरियाँ
रख छोड़ी हैं कागज पे२

■■

• **योजना शाह जैन**

SHARE YOUR HUMANITY
(A Global Platform)

हमारे समाज में वृद्धों की सेवा

श्री इन्दरजीत शर्मा जी के पिता पंडित तिलकराज शर्मा के पिता यानि इन्दरजीत जी के दादाजी बहुत ही सरल व प्रेमी व्यक्ति थे। जिस प्रकार उनकी सेवा तिलकराज जी ने की , उसी प्रकार से उन्ही के पदचिन्हों पर चलते हुए तिलकराज जी की सेवा इंदरजीत जी ने की। इंदरजीत जी का कहना है कि बुजुर्गों की सेवा भगवान की सेवा होती है। जब माता पिता ने हमारी सेवा की तो हमारा भी फर्ज बनता है कि हम उनकी सेवा करें। स्कूल से ही माता- पिता की सेवा का पाठ पढ़कर उनकी सेवा की तरफ उनका झुकाव हुआ।

इंदरजीत जी का कहना है , '' 80 साल के वृद्ध पिता जी के साथ ऐसा जुड़ाव हुआ कि उन्हें हमारी तरफ देखते हुए मुझे पता चल जाता कि वे पानी मांग रहे हैं। एक बार तो मैं उनके साथ 27 दिनों तक अस्पताल में रहा। उनके पूरी तरह से ठीक हो जाने यानि स्वस्थ हो जाने के बाद ही मैं घर आया। एक प्रकार से मेरे लिए सबसे बड़ा व्यापर यही था कि पिताजी जल्द स्वस्थ हो जाएं।

मेरे पिता जी गौ की बहुत सेवा करते थे। उनके द्वारा पाली गई गायों से आज भी मेरे यहाँ गायें हैं। हम गायें बेचते नहीं हैं। मैं जब विदेश में था ,तब मुझे अहसास हुआ कि मेरे पूज्य पिता जी जाने वाले हैं। मैं जब दिल्ली आया तब वे मेरी गोद में स्वर्ग को गए। आज हम पिता जी के आशीर्वाद से ही सम्पन हुए हैं। आज हमारे बच्चे भी देखते हैं कि माता - पिता की सेवा करो तो सब कुछ मिलता है। हमारे बच्चे भी हमारा बहुत ख्याल रखते हैं , उनमे अच्छे संस्कार समाहित हो गए हैं।

मेरे पिता जी ने एक चौरिटबल डिस्पेंसरी खोली थी , वह आज भी हम चला रहे हैं बल्कि अब तो हमने उसके बगल में एक फिजियो थेरेपी केंद्र खोल रखा है। हमने अपने पिता जी से प्रेरणा लेते हुए एक वृद्ध सेंटर का भी निर्माण करवाया हुआ है, जिसमे आज 250 वृद्ध जन हैं। इनमे 50 जन तो बहुत संपन्न घरों से हैं। और सक्रांति पेन्शनधारी है। शेष वृद्ध जान कम संपन्न घरो से और अल्प पेंशन धारी हैं। ये वृद्ध जन इस सेंटर पर खुशहाल जीवन व्यतीत करते हैं। ये प्रतिदिन रामायण पाठ , भजन -कीर्तन और हर शनिवार को हवन करते हैं। ये साल में एक या दो बार दिल्ली से बाहर भ्रमण पर भी जाते हैं। उन्हें नेपाल सरकार द्वारा वृद्ध नागरिक सम्मान भी प्राप्त हो चुका है। यहाँ , केंद्र पर साल में दो बार प्रीती भोज का आयोजन होता है। यहाँ विभिन्न राजनितिक पार्टियों के नेतागण भी बुजुर्गों के आशीर्वाद लेने आते हैं।

हमारी तरफ से एक और कल्याणकारी कार्य किया है रहा है। वह कार्य , गरीब तबके के बच्चों को निशुल्क शिक्षा देना है। इस कार्य के लिए हम ने दो अध्यापक रखे हैं। हमारे पिता जी ने हरिद्वार में 6 कमरों की एक धर्मशाला बनवाई हुयी है। उसमें वृद्ध लोग जब भी जा कर ठहरते हैं तब उनके खाने -पीने की व्यवस्था हम ही देखते हैं। उनको वहां किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं होने दी जाती है। मेरी वर्तमान समय में जो भी प्रगति हुयी है , मेरे पिता जी के आशीर्वाद से ही है।

हमने अपने पिता जी का सामान अभी भी सहेज कर रखा हुआ है। लगता ही नहीं कि वे अब इस दुनिया में ही नहीं है। उनके स्वर्गलोक वासी होने के पश्चात् हमने उनकी याद में एक लाइब्रेरी स्थापित की है। जिसमे धार्मिक पुस्तकें और समाचार पत्र -पत्रिकाएं पढ़ने के लिए लोग आते रहते हैं। यहाँ पंद्रह से बीस लोग एक साथ बैठ कर पढ़ सकते हैं। आज हम जिस प्रकार अपने पिता जी की करके उनका आशीर्वाद प्राप्त कर आगे बढ़ रहे हैं , यह देख कर अन्य लोग भी अपने पिता जी की सेवा करने का पुनीत कार्य कर रहे हैं।

हमने अपनी माता जी की भी खूब सेवा की है। हम अपने हाथ से खाना खिलाते थे। सभी कुम्भ पर्व पर उन्हें ले जाकर स्नान कराते थे। उनकी जहाँ भी जाने की इच्छा होती थी , हम उन्हें खुशी - खुशी ले कर जाते थे। वह सबसे कहती थीं कि उनका बेटा सोना है। माता जी भी हमारी गोद में ही स्वर्ग को गई। माता जी के स्वर्गवासी होने के पश्चात् हम अपनी सासू -माँ को ले आए। उनकी भी हमने खूब सेवा की। उनका सानिध्य तीन -चार साल ही रह पाया।

बुजुर्गों की सेवा करने में मुझे बहुत आनन्द आता रहा है। एक बुजुर्ग थे , मुरारी लाल त्यागी। उनकी सेवा का भी मुझे मौका मिला। उन्होंने मुझे बहुत आशीर्वाद दिया था। यह आशीर्वाद मैंने महसूस किया कि पैसों से नहीं खरीद जा सकता। मैंने कुछ बुजुर्गों को सम्मानित भी किया है। अमरीका में श्रीमती मान कौर 104 साल की थीं जो 26 मील की मैराथन दौड़ की धाविका थीं। उन्हें मैंने सम्मानित किया। यही नहीं 107 साल की उम्र सरदार फौजा सिंह दुनिया में तेज धावकों में से थे , उन्हें भी मैंने सम्मानित किया है। लश्कर सिंह की उम्र इस समय 100 साल हो रही है। ये अमरीका में होमियोपैथ के डहक्टर हैं। इन्हें भी मैंने सम्मानित किया है। इन्हें रु 11000/- नकद ,शहल ,पगड़ी और मैडल दिया गया।

आज समय बहुत बदल गया है। लोग बुजुर्गों की सेवा करने से कतरा रहे हैं क्यूंकि उन्हें धन की कमी महसूस होती है। अब भला धन बचा कर आशीर्वाद ले पाने से वंचित रह जाते हैं तो यह बुद्धिमानी तो कही नहीं जा सकती। वैसे भी सेवा हर व्यक्ति के भाग्य में नहीं होती। ज्यादातर बुजुर्ग तो अपने जीते जी अपनी सम्पत्ति बच्चों के नाम कर देते हैं तब भी वे संताने उनकी सेवा नहीं करती। ऐसे बुजुर्ग समाज में बहुत ही कष्टप्रद जीवन जीने को बाध्य है। मेरे द्वारा एक बुजुर्ग को खाना दिया जाता था। उनके बेटे कहते थे कि मेरे पिता आपकी वजह से हमारा कहना नहीं मानते कृपया आप मेरे पिता जी की किसी प्रकार की भी मदद न करें। मैंने कहा कि आप अपने पिता को समय पर खाना ि खलाओ , हम उन्हें खाना खिलाने की मदद करने नहीं आएंगे। अब वे अपने पिता जी को समय पर खाना खिलाने का पुनीत कार्य कर रहे हैं।

हमारे अपने बुजुर्ग केंद्र पर वृद्धों को खुला आमंत्रण है। कोई भी बुजुर्ग यहाँ आ कर रह सकते हैं , जिनके बच्चे उनकी सेवा नहीं करते। उनको यहाँ पर रहने की मुफ्त सुविधा है , दवाई,भोजन सब कुछ मिलेगा। पेट साफ करने की दवा और त्रिफला आदि की गोलियां भी निःशुल्क दी जाती है। मैं अमरीका में भी बुजुर्गो की सेवा करता हूँ। उनकी फोटो पगड़ी बांध कर सहजता रहता हूँ। उनसे बातचीत की कई वीडियो भी है। एक बुजुर्ग ने अपने वीडियो में कहा है कि उनके बेटे नालायक है ,वे उनकी सेवा -सुश्रुषा नहीं करते।जब वे स्वर्गवासी हो गए तो पता चला , उनके बेटों के पास उनके गुणगान के लिए फोटो तक नहीं थी।

मृत्यु के पश्चात् तो ज्यादातर लोग अपने पिता का गुणगान करते ही है। जब उन्हें पता चला कि उनके पिता जी की फोटो मेरे पास वीडियो में है तो वे उसे लेने चले आये। परन्तु वह वीडियो तो ऐसी निकली जिसमे वे उन्हें सेवा न करने पर भला - बुरा कह रहे थे। बहरहाल वे फोटो फ्रेम करने के वास्ते वीडियो ले गए।

एक बुजुर्ग को ठण्ड के मौसम में बहुत ठंडी लगती थी। उनके पास जैकेट नहीं थी। उनके बेटे भी उनकी जैकेट नहीं दे पाए। मैंने उन्हें एक नयी जैकेट खरीद कर दी। वे खुश हो कर अपने बेटों से बोले , '' देखो इंद्रजीत मेरे लिए इतना अच्छा जैकेट लाया है अब तुम लोगों को जैकेट देने की जरुरत नहीं है। बुजुर्गों के इस सम्मान के ही फलस्वरूप मुझे ब्रिटिश पार्लियामेंट में अमरीकन सरकार ने सम्मानित किया है। इसके अलावा नेपाल सरकार और सैंकड़ों सोसाइटियों ने भी मुझे सम्मानित किया है।

लगभग 50 हजार पुस्तकें मैंने अमरीकन गवर्नम. ेंट को दान में दी है। ये पुस्तकें भारतीय संस्कृति के गुणगान वाली थीं। वे आज भी सरकारी लाइब्रेरी में जान कल्याणार्थ रखी हुयी है।

आज समय बदलता जा रहा है। वर्तमान पीढ़ी अपने माता - पिता की सेवा नहीं कर रही है। इसे देखते हुए ही मैंने बुजुर्गों के लिए सुविधा प्रदान की है। उनके लिए मनोरंजन केंद्र स्थापित किया है। जहाँ उनकी बेसिक जरूरतें पूरी करने की पूरी कोशिश की जाती है। वे दिन भर यहाँ आ कर प्रसन्नचित रहते हैं। विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में व्यस्त रहते हैं। सच बात तो यह है कि आर्थिक समस्या से जूझते परिवारों में बच्चे अपने माता - पिता पर ध्यान नहीं देना चाहते बल्कि वे अपने स्वयं के बच्चों की सेवा करने पर ज्यादा बल देते हैं। शायद उनको यह नहीं मालूम कि सेवा का संस्कार बच्चे अपने माता - पिता से ही सीखते हैं। जब बच्चे यह देखेंगे कि उनके माता - पिता अपने माता - पिता की सेवा नहीं कर रहे हैं तब बड़े हो कर वे भी स्वयं उनकी सेवा से मुँह मोड़ लेंगे।

मेरे इस वृद्ध मनोरंजन केंद्र पर 15 अगस्त और 26 जनवरी को बुजुर्गों के सर पर पगड़ी बांध कर उनको सम्मानित किया जाता है। यहाँ झंडा भी उनके कर -कमलों से फहराया जाता है। किसी भी नेता या मंत्री को यहाँ झंडा फहराने को नहीं बुलाया जाता है। इस से सिद्ध होता है कि सामाजिक उत्थान के लिए हमारे समाज में वृद्धों की सेवा - सुश्रुषा बहुत जरुरी है। इनके स्वस्थ व प्रसन्नचित रहने पर ही हम प्रगति के पथ पर आगे बढ़ सकेंगे ,सदैव फूले - फलेंगे।

इन्दरजीत शर्मा
संरक्षक
हिन्दी की गूँज

मेघ की पाती भू के नाम

लिख कर भेजी मेघ ने, पाती भू के नाम ।
साज बाज के साथ में, आएंगे घनश्याम ।
आएंगे घनश्याम, तपन सारी हर लेंगे ।
अमृत रस की धार, झूम कर फिर बरसेंगे ।

कह 'कोमल' कविराय, हृदय में धीरज रख कर ।
अंग अंग में तृप्ति, तृप्ति आऊंगा लिख कर ।

आओ श्यामल मेघ प्रिय, स्वागत बारम्बार ।
हरित दूब पिक मधुर स्वर, गाए मंगल चार ।
गाए मंगलचार, पधारो स्वागत वंदन ।
करो जगत कल्याण, तुम्हारा है अभिनंदन ।
कह 'कोमल' कविराय, और मत तुम तड़पाओ ।
है स्वागत सत्कार, मेघ तुम जल्दी आओ ।

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'

व्याख्याता हिन्दी
अशोक उ मा विद्यालय, लहार
जिला - भिण्ड (म प्र)

कवितायें

१)
ज्ञान की गंगा/बांटती है प्रकाश/बिना भेदभाव के।
जिज्ञासुओं को /करती रहती है
तृप्त और संतुष्ट।।

(२)
बांटिए प्यार
आएगा लौट कर
मूल, सूद सहित।
नफरत भी
नहीं भूलती राह
करती है वापसी।।

(३)
सरसों खिली
झूमने लगे गेहूं
उसके आस पास।
याद आ गया
तुम्हारा संवरना
हंसना भी हौले से।।

डॉ. मृदुल शर्मा
आलमबाग, लखनऊ-२२६००५

शोध प्रविधि

प्रस्तावनाः

मनुष्य एक समाज मनुष्य एक जिज्ञासाशील प्राणी है। अपनी जिज्ञासा प्रवृत्ति के कारण वह समाज व प्रकृति में घटित विभिन्न घटनाओं के संबंध में विभिन्न प्रश्नों को खड़ा करता है और उसमें उन प्रश्नों के उत्तर ढूंढने का प्रयास करता है। स्पष्ट है कि किसी क्षेत्र विशेष में नवीन ज्ञान की खोज या पुराने ज्ञान की खोज या पुराने ज्ञान का पुनरीक्षण अथवा दूसरे तरीके से विश्लेषण कर नवीन तथ्यों का उद्घाटन करना शोध कहलाता है ।यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें तार्किकता योजनाबद्धता एवं क्रमबद्धता पाई जाती है।ऐसे में नवीन तथ्यों की खोज के लिए कई तरह की शोध प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है।

शोध प्रविधिः

शोध प्रविधि को अंग्रेजी में रिसर्च मेथाडोलहजी कहा जाता है।शोध प्रविधि शोध विधियों का अध्ययन है ताकि शोध समस्या को हल किया जा सके ।यह सीखने का विज्ञान है। इसके माध्यम से अनुसंधान को व्यवस्थित रुप दिया जाता है। यह अनुसंधान की धारा में लागू विधियों के कठोर विश्लेषण को संदर्भित करता है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि निकाले गए निष्कर्ष मान एवं विश्वसनीय हो। शोधकर्ता विभिन्न चरणों का अवलोकन करता है जो अध्ययन के दौरान शोधकर्ता द्वारा नियोजित विधियों के पीछे तर्क के साथ-साथ समस्या को समझने में उसके द्वारा चुने गए हैं। यह किसी विशेष शोध विधि या तकनीक का उपयोग करने का कारण भी स्पष्ट करता है ताकि प्राप्त किए गए परिणामों का मूल्यांकन स्वयं या किसी अन्य पक्ष के द्वारा किया जा सके।

अतः हम कह सकते हैं किः

- शोध प्रविधि उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संरक्षित पूर्ण दृष्टिकोण है।
- शोध प्रविधि एक पद्धति है जिसका उपयोग
- शोध समस्या को हल करने के लिए किया जाता है।
- शोध प्रविधि विभिन्न तकनीकों को सीखने से संबंधित है जिन्हें प्रयोग परीक्षण या सर्वेक्षण के प्रदर्शन में नियोजित किया जा सके।
- शोध प्रविधि उचित समाधानों को लागू करने की इच्छा रखती है जिसमें समाधानों का पता चलता है।
- शोध प्रविधि विश्लेषण का विज्ञान है जिसके माध्यम से अनुसंधान को उचित रूप से आयोजित किया जाता है।

शोध प्रविधि के प्रकारः

१. अंतरानुशासन शोध प्रविधि।
२. पाठाआलोचनात्मक शोध प्रविधि।
३. तुलनात्मक शोध प्रविधि।
४. ऐतिहासिक शोध प्रविधि।

१.अंतरानुशासन शोध प्रविधिः-

अंतरानुशासन को अंग्रेजी में इंटर डिसीप्लिनरी के नाम से जाना जाता है। हिंदी में इसके स्थान पर अंतरविषयक या अंतर क्षेत्रीय शब्द में प्रयुक्त किए जाते हैं। अंतर अनुशासनात्मक शोध का इतिहास बहुत पुराना है प्राचीन यूनान में सुकरात से पहले दार्शनिक अनामिक्समन्दर ने अपने भूगर्भ शास्त्र की जीवाश्मकी और जीव विज्ञान के ज्ञान का एक साथ उपयोग करते हुए पता लगाया था कि जीवो का विकास सरल रूप से जटिल रूपों की ओर हुआ था वैदिक काल के भारत में ज्ञान को अखंड या अविभाजित माना जाता था। भारत में मौर्य वंश के शासन काल के महान दार्शनिक कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में अंतर अनुशासनात्मक शोध का प्रयोग किया है। गैलीलियो से पहले दर्शन के दो रूप थे -मीमांसा दर्शन और व्यावहारिक दर्शन।१६वीं शताब्दी के जर्मन वैज्ञानिक केपलर ने यह पता लगाने के लिए मंगल ग्रह सूर्य का चक्कर कैसे लगाते हैं, गणित और खगोल का सुंदर उपयोग किया था आधुनिक दर्शन के पिता कहे जाने वाले रेने देकार्त ने कहा कि दर्शन पेड़ की तरह है जिसकी जड़ें तत्व मीमांसा, तना भौतिक विज्ञान और उसकी सभी शाखाएं जो ऊपर की ओर निकलती है वह विज्ञान के अनुशासन हैं। अतः अंतरानुशासनात्मक शोध आधुनिक युग की आवश्यकता है। ज्ञान प्राप्ति के आज अनेक रास्ते हैं ।अलग-अलग अनुशासन होने पर भी अधिकांश ज्ञान शाखाओं की पारस्परिक निर्भरता स्पष्ट दिखती है। विश्व की अनंत समस्याओं का निदान हेतु आज अंतर अनुशासनात्मक शोध एक जरूरी साधन हो गया है।

अंतर अनुशासन पद्धति की आवश्यकताः-

अंतर अनुशासनात्मक शोध कई कारणों से समय और परिस्थिति का अनिवार्य आवश्यकता बन गई है जो निम्नलिखित हैं:-

पहला कोई विज्ञान अपने आप में पूर्ण नहीं है कोई भी ज्ञान इस बात का दावा नहीं कर सकता की सभी समस्याओं का हल उनके पास है। और केवल वही एकमात्र हल प्रस्तुत कर सकता है। कहने का तात्पर्य है कि अंतरा अनुशासनिक पद्धति द्वारा अन्य विज्ञानों की सहायता लेना आवश्यक है।

दूसरा समस्त विज्ञानों का केंद्र मनुष्य है ।रसायन विज्ञान और भौतिक विज्ञान का भी संबंध विज्ञानोंऔर समाज से है। इसी प्रकार सामाजिक विषयों का वैज्ञानिक पहलू है। आर्थिक क्षेत्र में भी प्रगति केवल आर्थिक साधनों पर निर्भर नहीं है करती बल्कि एक वैज्ञानिक का भी महत्वपूर्ण योगदान होता हैय क्योंकि वे नवीन साधनों का आविष्कार कर आर्थिक विकास में उत्पन्न बाधाओं को दूर कर सकता है।

तीसरा सामाजिक विज्ञानों में विभिन्न घटनाएं एक दूसरे को प्रभावित करती हैं जिससे इन कारकों को अलग-अलग करके अध्ययन करना असंभव है।

चौथा इस पद्धति के द्वारा समस्या का अध्ययन विभिन्न दृष्टिकोण से हो जाता है जिससे त्रुटि होने की संभावना नहीं रहती है।

पांचवां इस अनुसंधान के द्वारा व्यक्तिगत पक्षपात एवं एक पक्षीय स्पष्टीकरणों को रोका जा सकता है।

२. पाठालोचनात्मक शोध प्रविधिः

किसी रचना के विभिन्न पाठों के प्रतिलिपियों के अध्ययन, अनुशीलन एवं निश्चित सिद्धांतों के अनुगमन द्वारा उस रचना के मूल पाठकों तक पहुंचने की प्रक्रिया को पाठ पाठानुसंधान कहते हैं। पाठानुसंधान वह बौद्धिक और शास्त्रीय विधि है जिसमें पाठ के संबंध में निर्णय देते हुए मूल पाठ का निध ार्रण किया जाता है। कुछ लोगों इसे साहित्यिक आलोचना का अंग मानते हैं। उदाहरण स्वरूप सन् १९७२ में यमन के शाना शहर की बड़ी मस्जिद में मिली पांडुलिपि को कुरान शरीफ की सबसे पुरानी प्रति कहा जा रहा है। इसी तरह भारतीय भाषाओं की परिपेक्ष में कीर्तिलता पर विचार करते हुए हिंदी साहित्य के सभी विद्वान इसे हिंदी के आदिकालीन साहित्य की महत्वपूर्ण कृति एवं महान कवि विद्यापति की प्रारंभिक रचना मानते हैं।मैथिली के ट्रस्ट आलोचक रमानाथ झा इसे जीवन के अंतिम भाग में विद्यापति द्वारा बेमन से लिखी हुई रचना मानते हैं। इस पर पाठ अनुसंधान हो रहा है। पाठ का अभिप्राय होता है जो किसी भाषा में लिपिबद्ध हो। पाठशोध का उद्देश्य रचना अथवा रचना के मूल लेखक का नाम भर जान लेना नहीं होता है। पाठशोध अथवा पाठ अनुसंधान की पूरी प्रक्रिया के दौरान पाठ आलोच्य पाठ के मूल स्वरूप उसके रचनाकार, रचनात्मक उद्देश्य सामाजिक एवं प्रशासनिक स्तर पर रचना की मान्यता एवं उसका प्रभाव अग्रिम रचना प्रक्रिया को उस रचना से प्राप्त प्रेरणा एक पाठ के रूप में उच्च रचना की समकालीन और सास्वत उपायदेता आदि सभी प्रसंगों की जानकारी हासिल करना होता है। प्राचीन ग्रंथों की स्थिति में पाठशोध की विशेष आवश्यकता होती है मुद्रण की असुविधा के कारण प्राचीन काल की रचनाएं मौखिक हस्तलिखित होती थी। फल स्वरुप इन ग्रंथों के कई संस्करण होते हैं। और पाठ अंतरण के कारण पढ़ने वालों के लिए दुविधा उत्पन्न हो जाती है। पाठ की इस बहुतायत में से एक मूल पाठ को खोजना महत्वपूर्ण है लेकिन दुष्कर हो जाता है

पाठ भेद के कारण महाकवि विद्यापति चंदबरदाई मलिक मोहम्मद जायसी आदि द्वारा रचित कृतियों के आवाहन की समस्या देखकर आसानी से समझा जा सकता है कि अनुसंधान प्राचीन ग्रंथ का पाठाअनुसंधान एक अनिवार्य कार्य है। पाठशोध या पाठाअनुसंधान के लिए सामग्री संकलन के स्रोत को दो भागों में विभक्त किया जाता है-मुख्य सामग्री और सहायक सामग्री।

मूल लेखक के हस्तलिखित पाठ अर्थात मूल पांडुलिपि को मुख्य सामग्री कहते हैं। इसके अंतर्गत प्रथम प्रतिलिपि अथवा प्रतिलिपि की अन्य प्रतियां आती है

सहायक सामग्री- सहायक सामग्री मुख्य सामग्री की मौलिकता, प्रमाणिकता के परीक्षण हेतु सहायक सामग्री के रूप में भोजपत्र ताड़पत्र शिलालेख कागज सिक्के आदि के प्रयोग होते थे। पाठशोध या पाठाअनुसंधान की आवश्यकता वस्तुतः पाठ की विकृतियों के कारण उत्पन्न होती है। पाठ में यह विकृतियां कई कारणों से होती है।कुछ तो सचेत विकृतियां होती है ।कुछ विकृतियां पाठकों वाचको अनुलेखों में लिपि, भाषा शैली, संरचना छंद और प्रयोग सम्मत अज्ञानता अनभिज्ञता प्रतिकृति बनाते समय की गई असावधानी आदि के कारण होती है।

लेखन सामग्री की गुणवत्ता के कारण कई बार लिपियां धूमिल हो जाती है। पाठक वाचक या अनुलेखन उसे सही- सही पढ़ नहीं पाते। इन समस्त सुविधाओं से उबकर अस्पस्ट शब्दों, पदों का विकल्प अपने विवेक से दे देते हैं। फल स्वरुप पाठ-प्रक्षेप अथवा पाठान्तर संभव हो जाता है। जिस से निजात पाने के लिए या श्रमपूवर्क पाठ के यथासंभव मूल तक जाने की चेष्टा पाठशोध के द्वारा किया जाता है।

इस दिशा में बढ़ते शोधार्थी देश काल परिस्थिति के अनुसार विभिन्न प्रक्रिया अपनाते हैं। सामग्री संकलन के साथ-साथ इस प्रक्रिया में मूल रचनाकार एवं तत्कालीन राजवंश का वंश वृक्ष बनाया जाता है। इस दिशा में वंश निर्माण की विधि जर्मन भाषा वैज्ञानिक कार्ल लाचमान के उधम से प्रसिद्धि हुई है।

३.तुलनात्मक शोध प्रविधिः-

तुलनात्मक शोध प्रविधि में अध्ययन के विषयों की तुलना से नए तथ्यों का पता लगाया जाता है। तुलना करने की मानवीय प्रवृत्ति जन्मजात रही है। अपनी इसी प्रवृत्ति द्वारा मनुष्य वस्. तुओं में अंतर्निहित अंतर को तथा उसके श्रेष्ठता को जानने की कोशिश की जाती है। अर्थात ज्ञान की प्रतिपुष्टि एवं समृद्धि वस्तुतः तुलना के बिना संभव नहीं है। तुलनात्मक शोध प्रविधि विज्ञान, कला, साहित्य आदि विभिन्न क्षेत्रों का निरी क्षण एवं मूल्यांकन करता है। मानव के सीमित ज्ञान क्षेत्र को विस्तृत करता है। उसके भाषागत साहित्यिक एवं प्रादेशिक बंध नों को ज्ञानाअर्जन के में बाधा नहीं डालने देताय बल्कि ज्ञान की सीमाओं को विस्तृत करता है। अतः भारतीय साहित्य के इतिहास की अवधारणा के निर्माण के लिए तुलनात्मक शोध आवश्यक है। तुलनात्मक शोध का मूल उद्देश्य एक विस्तृत परिपेक्ष्य में विभिन्न भाषाओं साहित्य कला और विज्ञान आदि का अध्ययन मनन है जिससे उसका उचित अभिज्ञान और रसास्वादन हो सके तथा उन भाषाओं साहित्य कला और विज्ञान आदि के बारे में एक समुचित विचारधारा का विकास हो सके।

जब हम तुलनात्मक शोध की बात करते हैं तो यह दोनों शब्द मिलकर एक विशेष अर्थ का निर्माण करते हैं। तुलनात्मक शोध कहने से ही पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है कि किन्हीं दो रचनाओं लेखकों का काव्यांदोलन या किन्हीं अन्य साहित्यिक पक्षों को लेकर एक ही भाषा या किन्हीं दो भाषा के स्तर पर किया जाने वाला शोध है। तुलनात्मक शोध एक राष्ट्र की साहित्य की परिधि ा से दूसरे राष्ट्रीय के साहित्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन है।यह अध्ययन कला, इतिहास, समाज विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के आपसी संबंधों के लिए आवश्यक है। तुलनात्मक शोध को मुख्यतः चार श्रेणियों में विभाजित करके देख सकते हैं।

१. एक ही साहित्य के अंतर्गत तुलनात्मक शोध।

२.एक साहित्य का अन्य साहित्य पर प्रभाव।

३. दो या दो से अधिक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन।

४. समान युग की साहित्यिक धारा का अध्ययन।

उदाहरण के लिए निराला और पंत की काव्य की तुलना विषय शोध को एक ही साहित्य के अंतर्गत तुलनात्मक स

शोध कहेंगे। तुलनात्मक शोध के अंतर्गत विषय के अध्ययन तथा निरीक्षण एवं परीक्षण के संदर्भ में अनुसंधानकर्ता का निम्नलिखित तत्वों के प्रति ध्यान देना नितांत आवश्यक है ताकि प्रस्तुत विषय और अतुलनीय विषय के संबंध में पूर्ण ज्ञान की उपलब्धि हो सके। अतः वे तत्व हैं समता, अभेद, पार्थक्य पाठक के विषमता आदि है।

यह तत्व तुलनात्मक शोध अध्येता की योग्यता के विकास का अवसर प्रदान करता है जिससे वह दो साहित्यों से जुड़ी समस्याओं का विश्लेषण कर पाता है।

तुलनात्मक शोध की विशेषताः-

१)तुलनात्मक शोध पूर्वाग्रहों से मुक्ति दिलाता है।

२)इसके माध्यम से एक ही देश की विभिन्न इकाइयों को परस्पर निकट लाने का प्रोत्साहन मिलता है।

३)तुलनात्मक शोध, व्यक्तित्व मानसिक प्रक्रिया सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थिति पर सारगर्भित प्रकाश डालता है।

५) तुलनात्मक शोध के लिए प्राचीन व आधुनिक का कोई अर्थ नहीं है बस उसे वहां जो भी तुलनीय है वही तुलनात्मक शोध का विषय बन जाता है।

६) तुलनात्मक शोध मनुष्य के विचारों भावों और सामाजिक चेतना का दर्पण होता है।

७)तुलनात्मक सोच के माध्यम से हम विश्व की साहित्यिक सांस्कृतिक उत्कर्ष या फिर मानवता की भावना को बेहतर तरीके से समझ जाते हैं।

८) समस्यात्मक शोध में तुलनात्मक शोध की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। किसी भी समस्या पर एक ही समय में अलग-अलग रचनाकार या क्या सोचते हैं या तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से यह समझा जा सकता है।

९)तुलनात्मक शोध को दो विभिन्न आयामों के बीच साम्य वैषम्य दिशा का पता चलता है

१०)हिंदी तथा हिंदीतर भाषाओं में तुलनात्मक शोध से इसकी सार्थकता सिद्ध होती है। ११)तुलनात्मक शोध भाषा और साहित्य से गहन संबंध स्थापित करता है।

४.ऐतिहासिक शोध प्रविधि

ऐतिहासिक शोध का उद्देश्य अतीत संबंधी नवीन तथ्यों की खोज करना उपलब्धियों का संशोधन करना तथा नवीन साक्ष्यों के आधार पर अतीत का यथार्थ एवं परिकल्पनात्मक प्रस्तुतीकरण होता है।

कारलिंगर के शब्दों में ऐतिहासिक अनुसंधान अतीत की घ टनाओं, विकास क्रमों एवं अनुसंधानों का वह अन्वेषण होता है जिसमें अतीत से संबंधित सूचनाओं के संबंध तथा प्राप्त संतुलित विवेचना की वैधता का सावधानी पूर्वक परीक्षण सम्मि. लित रहता है।

ऐतिहासिक शोध प्रविधि में सर्वप्रथम ऐतिहासिक महत्व के सा क्ष्यों या तथ्यों जैसे- तत्कालीन घटनाएं, प्रथाएं, शिक्षा पद्धति समस्या की ऐतिहासिक उत्पत्ति एवं विकास आदि को प्रदत्त के द्वारा संकलित किया जाता है तत्पश्चात उसकी व्याख्या तथा आलोचना करके कुछ मान्य निष्कर्ष प्राप्त किए जाते हैं। ऐतिहासिक शोध शोध प्रविधि में शोध सामग्री संकलन के दो स्रोत माने जाते हैं। प्रथम प्राथमिक स्रोत या मूल स्त्रोत दुसरा द्वितीयक स्रोत।

प्राथमिक स्रोत स्पस्टतः साहित्यिक एवं पुरातात्विक साक्ष्य होते हैं। प्राचीन भारतीय साहित्य ग्रंथ प्रमुख ऐतिहासिक स्रोत हैं। प्राचीन भारतीय साहित्य साहित्य अधिकांशत धार्मिक स्रोत रहा है। धार्मिक साहित्य के अंतर्गत सर्वप्रथम वैदिक साहित्य का उल्लेख किया जा सकता है। प्राचीन भारतीय शिक्षा का उद्गम वेदों से माना जाता है। प्राचीन मूल ग्रंथों में संपूर्ण वैदिक साहित्य एवं बौद्ध साहित्य के अतिरिक्त पाणिनि के अष्टाध्यायी, मनुस्मृति, पतंजलि का महाभारत एवं कौटिल्य का अर्थशास्त्र विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ऐतिहासिक अध्ययन में मूलभूत सा क्ष्यों के रूप में पुरातात्विक साक्ष्य सार्थक एवं सक्रिय भूमिका अदा करते हैं। पुरातात्विक साक्ष्य दो प्रकार से हमारी सहायता करते हैं। साहित्यिक साक्ष्य तथ्यों की पुष्टि करते हैं। उत्खनन एवं सर्वेक्षण सर्वथा नवीन जानकारी उपलब्ध कराते हैं।वैदिक एवं बौद्ध कालीन शिक्षा प्रणाली के अध्ययन के लिए साहित्यिक एवं पुरातात्विक साक्ष्यों की सहायता ली जाती है।

द्वितीयक स्रोतः द्वितीयक स्रोत के अंतर्गत वे साक्षी आते हैं जो किसी भी इतिहासकार या विषय के विद्वान द्वारा किसी प्राचीन घटना या तथ्य के विषय में साक्ष्यों के आधार पर उसके अपने विचार होते हैं। यह ऐसे व्यक्तियों के द्वारा संचित सूचनाएं होती हैं जिन्होंने मूल घटनाओं, कार्यवाही आदि को देखा ना हो तथा कहीं सुनकर या पढ़कर उसका वर्णन किया हो। यद्यपि इसमें सत्य का अंश रहता है। परंतु प्राथमिक स्रोत से द्वितीय सोच तक पहुंचते-पहुंचते वास्तविकता में कुछ परिवर्तन आ जाता है। जिससे उसके दोषयक्त होने की संभावना बन जाती है। इसलिए ऐसे साधनों की पूर्णतः वेध एवं विश्वसनीयता नहीं माना जा सकता है। इतिहास की पुस्तकें विश्वकोश, शोध पत्रिकाएं तथा शोध पुस्तकें आदि द्वितीय क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि उपरोक्त वर्णित।शोध प्रविधियां वह नींव है जो हमें निर्धारित तरीकों की प्रभावशीलता को प्रभावित करने वाले निर्धारित कारकों को समझने में मदद करती है।

संदर्भ ग्रंथः-

१) तुलनात्मक अध्ययनः भारतीय भाषाएं एवं साहित्य राजमल बोरा वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।

२) साहित्यिक अनुसंधान के प्रतिमानः देवराज उपाध्याय ,नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

३) शोधः स्वरूप एवं मानक व्यवहारिक कार्य विधि- बैजनाथ सिंगल, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।

४) अनुसंधान प्रविधिः सिद्धांत और प्रक्रियाः एस.एन.गणेशन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

५) हिंदी अनुसंधानः विजय पाल सिंह राजपाल एंड संस, दिल्ली।

■■

संजू कुमारी
शोध छात्रा
मगध विश्वविद्यालय,बोधगया

राजभाषा हिंदी का बढ़ता वर्चस्व

किसी भी देश के लिए उसकी भाषा विश्व पटल पर उसकी पहचान का माध्यम होती है कल्पना करके देखिए कि हम किसी देश में जाते हैं और वहां हमारी भाषा को जानने व समझने वाला मिल जाता है तो कैसा अनुभव होता है हम दावे के साथ कह सकते हैं कि परदेश में अपनी भाषा बोलने वाले का मिलना किसी उपहार से कम नहीं होता हमें इस बात का यकीन हो जाता है कि अमुक देश में हमारा कोई अपना है और हम यहां स्वयं को सुरक्षित और आरामदायक महसूस कर सकते हैं जहां तक हिंदी की बात है इस भाषा में अपनी ही मधुरता है विभिन्न बोलियों को अपने में समेटे हुए यह भाषा जन जन की भावनाओं की उत्कृष्टता अभिव्यक्ति है देश की आधिकारिक भाषा उस देश का मान सम्मान व पहचान होती है और अन्य से उस देश को उसकी सभ्यता और संस्कृति से परिचित कराने का माध्यम भी होती है इससे हमारा तात्पर्य यह नहीं है कि अन्य भाषाओं का महत्व नहीं है जिस प्रकार अंग्रेजी और हिंदी को एक दूसरे के समक्ष विरोधी रूप में प्रस्तुत किया जाता है वह भावना बिल्कुल ठीक नहीं है आज का समय ग्लोबलाइजेशन का है लोग देश से विदेश रोजगार व शिक्षा के लिए जाते हैं जहां उन्हें एक संपर्क भाषा की आवश्यकता होती है अंग्रेजी उसमें अच्छी भूमिका निभाती है यही कार्य हिंदी के साथ भी है कि जो लोग बाहर से हमारे देश में रोजगार व शिक्षा के लिए आते हैं उन्हें हिंदी की आवश्यकता पड़ती है यह भाषाई आदान प्रदान का एक क्रम है हां बात वहां से बिगड़ना शुरू हो जाती है जब हम किसी अन्य भाषा को आवश्यकता से अधिक महत्व देना शुरू कर देते हैं तब हमारी अपनी भाषा उपेक्षित होना शुरू हो जाती है चाहे वह राज्य स्तर पर हो या देश के स्तर पर कई बार देखा गया है कि अपने ही देश में हिंदी बोलने वालों को हीन भावना का शिकार होना पड़ता है परंतु पिछले कुछ वर्षों में देश में बहुत तीव्र गति से विकास हुआ है भारत ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपना परचम लहराया है और इसमें हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है हमारे देश का प्रमुख जब अंतरराष्ट्रीय मंच से हिंदी में गरजता है तो लोग बरबस उसको सुनने के लिए आतुर हो जाते हैं जिसके प्रमाण हमें लगातार मिलते रहे हैं हिंदी के विषय में डइक्टर जाकिर हुसैन का मत है कि ‘‘हिंदी वह धागा है जो विभिन्न मातृभाषा और ऊपर फूलों को पूर्ण कर भारत माता के लिए सुंदर हार का सृजन करेगा‘‘ आज के परिपेक्ष में इस कथन का परीक्षण किया जाए तो यह बिल्कुल सत्य प्रतीत होता है इस प्रकार यदि हिंदी को घरेलू स्तर पर देखें तो जिस प्रकार नई शिक्षा नीति में हिंदी को स्थान दिया गया है वह सराहनीय कदम है यह कदम यह दर्शाता है कि देश का नीति नियंता कितना दूरदर्शी और देश प्रेमी है विभिन्न पाठ्यक्रमों में जिस प्रकार हिंदी को रखा गया है वह न केवल भाषा के स्तर पर लाभदाई है बल्कि सीखने के स्तर को सरल करने के लिए बहुत अच्छा है अब जब इंजीनियरिंग और मेडिकल की पुस्तके हिंदी में उपलब्ध होंगी और पढ़ाई का माध्यम हिंदी होगा तो हम अंदाजा लगा सकते हैं कि छात्रों को सीखने में कितनी मदद मिलेगी हिंदी पट्टी के छात्र भी इन बड़े-बड़े पाठ्यक्रमों में अपनी दक्षता का प्रदर्शन कर सकेंगे जिसमें अभी तक वह पीछे थे और हीन भावना से ग्रसित रहते थे हिंदी को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बात की जाए तो पहले भी हमारे राजनेताओं ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने के लिएअनेक प्रयास किए जो अत्यंत सराहनीय रहे पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने भी संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में भाषण दिया था उसकी भूरी भूरी सराहना हुई थी १९७७ में बाजपेई जी के इस भाषण को आज तक याद किया जाता है २०१७ में सुषमा स्वराज जी ने संयुक्त राष्ट्र में अपना भाषण हिंदी में ही दिया था हमारे यशस्वी प्रध ाानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में और उनके अथक प्रयत्नों से संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी सम्मानीय स्थान पा सकी जो हम सभी के लिए गर्व का विषय है इसके पूर्व अंग्रेजी ,स्पेनिश , फ्रेंच, रूसी ,अरबी और चाइनीज को ही संयुक्त राष्ट्र की आधि ाकारिक भाषा के रूप में जाना जाता था संयुक्त राष्ट्र सचिवालय यद्यपि अपने कामकाज के लिए फ्रेंच और अंग्रेजी को ही प्रयोग में लाता रहा किंतु मोदी सरकार के प्रयासों और संयुक्त राष्ट्र संघ की बहुभाषावाद नीति के कारण हिंदी को महत्व मिला एक आंकड़े के अनुसार विश्व में २६ करोड़ से अधिक लोग हिंदी का प्रयोग करते हैं और यह विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा है इस आधार पर यूएनओ में हिंदी को महत्व मिला है हिंदी को महत्व दिलाने में हमारे राष्ट्र प्रमुख के भाषणों का भी महत्व है जो उन्होंने अंतरराष्ट्रीय मंच पर दिए और हिंदी का मान बढ़ाया अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से भी उन्होंने हिंदी में ही बातचीत की स मोदी जी के ये प्रयत्न हमारे लिए गौरव के विषय के रूप में जाने जाएंगे संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए भारत ने लगभग +८००००० खर्च किए हिंदी को संयुक्त राष्ट्र में महत्व मिलना ही था क्योंकि भारत २०१८ से संयुक्त राष्ट्र के वैश्विक संचार विभाग के साथ साझेदारी कर रहा है इसके अतिरिक्त सिंगापुर, नेपाल, फिजी, मॉरीशस ,गयाना, सूरीनाम, अमेरिका, जर्मनी और न्यूजीलैंड देशों में हिंदी बोलने वालों की सं ख्या बहुत अधिक है संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों की जानकारी के लिए हिंदी का प्रयोग आवश्यक था हमारा भारत कई वर्षों से बहुभाषावाद पर संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को मान्यता दिलाने का प्रयत्न कर रहा था और आखिरकार हिंदी को सफलता मिली हिंदी प्रेमियों को सफलता मिली मोदी सरकार ने विकास के हर पहलू पर अपनी नजर रखी है उनका यह नारा एक भारत श्रेष्ठ भारत जो उनका उद्देश्य भी है हमारे लिए प्रेरणादायक है हम उम्मीद करते हैं कि आगे एक भाषा एक भारत श्रेष्ठ भारत का निर्माण होगा और हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा मिलेगा विश्व हिंदी परिषद पिछले कई वर्षों से हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु कार्य कर रहा है और कहीं ना कहीं इसका उद्देश्य मोदी जी के सपनों को पूरा करना है नई शिक्षा नीति में जिस तरह से भाषा के सम्मान की रक्षा की गई वह अपने आप में बेहद महत्वपूर्ण है विश्व हिंदी परिषद तथा भारत के लोग मोदी जी के प्रति आभार प्रकट करते हैं जिनके कारण हमें यह गौरव प्राप्त हुआ हैं और संयुक्त राष्ट्र संघ की सारी सूचनाएं इसकी वेबसाइट पर अब हमें हिंदी में मिलने वाली हैस आज विश्व को यह संदेश देने की आवश्यकता है कि भारत को यदि समझना है जानना है तो जुबान- ए- हिंदी में समझे

■■

विनय भारद्वाज

डॉ सुनीता चौहान

दादू पंथ : सिद्धांत और जीवन दर्शन

भक्तिकाल हिंदी साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण काल है। इसे हिंदी साहित्य में स्वर्ण - युग की संज्ञा दी जाती है। इस काल में अनेक संतों का प्रादुर्भाव हुआ जिन्होंने अपने मानवतावादी सोच और सहज - सरल जीवन दर्शन से साधारण जनता को अपनी ओर आकर्षित किया और उनकी सोच को अपने जीवन का उदाहरण प्रस्तुत कर बदलने का प्रयास किया।

इन्हीं संतों में एक प्रमुख संत हैं -- दादू दयाल। दादू पंथ के अनुयायी मानते हैं कि दादू दयाल जी का जन्म गुजरात प्रदेश के प्रसिद्ध अहमदाबाद नगर में हुआ था ---

" पच्छिम दिशा अहमदबादू
ती ठा साध परगटै दादू। " १

दादू दयाल धुनिया जाति के थे , इसका प्रमाण इनके शिष्य रज्जब जी के कथन से मिलता है। इनका जीवन काल सं६ १५६६ - १६६२ के बीच का पड़ता है। दादू दयाल के गुरु का नाम वृद्धानन्द बताया जाता है।

दादू दयाल की रचनाओं का अनुमान नहीं लगाया जा सकता। इनका कोई प्रामाणिक संग्रह नहीं है। " आधुनिक सम्पादकों में से पंडित सुधाकर द्विवेदी ने रज्जब जी की हीं प्रणाली का अनुसरण कर एक नवीन संग्रह तैयार किया। यह संग्रह काशी नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से प्रकाशित हुआ और उसमें २३२३ साखियाँ और ४४५ पद संग्रहित किए गए हैं। " २

चन्द्रिका प्रसाद त्रिपाठी तथा मंगलदास ने भी सम्पादित संकलन निकाले।

संत दादू दयाल अत्यंत कोमल एवं हृदयग्राही स्वभाव के थे। इनके अनेक शिष्य थे। राघोदास ने अपने भक्तमाल के अंतर्गत ५२ दादू शिष्यों के नाम गिनाये हैं। इनके एक शिष्य थे - रज्जब जी। उन्होंने दादू की बहुत तारीफ की है और उनके सम्बन्ध में लिखा है ---

" गुरु गरबा दादू मिल्या , दीरघ दिल दरिया ,
हँसत प्रसन्न होत हीं , भजन भल भरिया। " ३

संत दादू अत्यंत सरल जीवन के हिमायती थे, वे छल - प्रपंच से दूर रहकर तथा अपना समस्त अहं त्यागकर भगवान के भजन में लीन रहना हीं सफल जीवन मानते थे --

" आपा मेटै हरि भजै , तन - मन तजे विकार ,
निर्वैरी सब जीव सौं , दादू यह मत सार। " ४

दादू जी का संत कबीर के प्रति अत्यंत श्रद्धा भाव था और वे उनसे अत्यधिक प्रभावित थे। कबीर की वाणी से उन्हें अत्यंत सुख की प्राप्ति होती थी , इस सम्बन्ध में उन्होंने लिखा है --

" जेता कंत कबीर का , सोई वर वरिहूँ
मनसा , वाचा , कर्मणा , मैं और न करिहूं। " ५

दादू दयाल सर्वत्र उसी एक ईश्वर को देखते थे , वे उसके सिवा किसी अन्य वस्तु का अस्तित्त्व नहीं मानते थे। वे मानते थे की आत्मा तथा परमात्मा में कोई भेद नहीं है , दोनों एक हीं हैं तथा आत्मा के भीतर हीं परमात्मा ब्याप्त है। " जैसे सरोवर में हंस विहार करता है , उसी प्रकार परमात्मा में आत्मा उस प्रियतम के साथ हिलमिलकर नित्य खेला करता है। " ६

इनके शिष्य सुन्दरदास ने भी माना है कि वहीं ब्रह्म एकमात्र सत्य है और वहीं इस जगत में विभिन्न नामों से ब्याप्त है ---

" सुंदर कहत यह एकुई अखंड ब्रह्म ,
ताहि को पलटि कै जगत नाम धरयो है। " ७

दादू पंथ में सृष्टि की उत्पत्ति पर भी विचार किया गया है। इनके शिष्य वषना जी ने भी कहा है , मैंने इस बात पर विचार किया कि ईश्वर को आखिर यह सृष्टि क्यों उत्पन्न करनी पड़ी तो मुझे लगा यह आनंद के अवसर पर रची गई है --

" जिहिं बरियां यहु सब हुआ , सो हम किया विचार
वषना बरियां खुशी की करता सिरजनहार। " ८

दादू ने अपनी समस्त साधनात्मक अनुभूतियाँ स्वतः अनुभूत हो जाने पर हीं कही है , वे कहीं से पढ़ - लिखकर उसे नहीं कहते। वे अनुभूति तथा ज्ञान में महान अंतर मानते हैं , दादू दयाल ने कहा है --- " ज्ञान की लहर जहाँ से उठती है ,
वहाँ पर हमारी वाणी का प्रकाशित होना भी संभव है , किन्तु जहाँ से हमारी अनुभूति जागृत होती है , वहाँ की हमारी अवस्था अनिर्व. चनीय होती है , और वहाँ से वाणी के स्थान पर कोरे ध्वन्यात्मक शब्द - मात्र हीं उठ सकते हैं। " ९

दादू दयाल अहं की समाप्ति पर जोर देते हैं। वे मानते हैं कि ईश्वर को प्राप्त करने के लिए बाहर भटकने की आवश्यकता नहीं है , वह तो अंदर हीं मिल जायेगा। उसे पाने के लिए किसी उपकरण की आवश्यकता नहीं है , उल्टे अपना सबकुछ उसके हवाले कर सर्वस्व त्याग करना पड़ता है , तभी उसके दर्शन होते है। दादू दयाल किसी लौकिक या पारलौकिक वस्तु की कामना नहीं करते , वे तो केवल राम रस के प्रेमी हैं और उसी का रस पीना चाहते हैं -

" तन भी तेरा मन भी तेरा , तेरा प्यंड परान
सब कुछ तेरा , तू है मेरा , यह दादू का ज्ञान। " १०

जब जीव इस अवस्था में पहुंच जाता है , तो वह सर्वत्र अभेद्य का दर्शन करने लगता है। उसे परमात्मतत्त्व का स्पष्ट अन. भव होने लगता है। दादू को भी यहीं अनुभूति होती है , फिर उन्हें राम और रहीम में कोई अंतर नहीं जान पड़ता। इस दशा में उन्हें स्त्री - पुरुष तथा हिन्दू - मुसलमान में कोई अंतर नहीं दिखता। अब तो घट -घट में उन्हें सर्वत्र राम हीं बसा दिखाई पड़ता है। उन्होंने लिखा है --

" जब पूरण ब्रह्म विचारियै तब सकल आत्मा एक
काया के गुण देखिए ,नाना वरण अनेक। " ११

उपर्युक्त स्थिति को हीं दादू तथा उनके शिष्यों ने जीवनमुक्ति का नाम दिया है। सुन्दरदास ने जीवनमुक्ति को परिभाषित करते हुए लिखा है --

" निज स्वरूप को जानि अखंडित , ज्यों का त्यों हीं रहिये
सुंदर कछु ग्रहे नहीं त्यागे , वहै मुक्ति पद कहिये। " १२

जीवन्मुक्त ब्यक्ति को अपने कार्य में भी आनंद - हीं - आनंद मिलता है , क्योंकि वह अपना सब कार्य अपने प्रियतम ईश्वर को समर्पित करके करता है। दादू दयाल कहते है ---

" दादू उदिम औगुण को नहीं , जेकरि जाणे कोई
उदिम में आनंद है , जो साईं सेती होई। " १३

दादू दयाल इसी जीवन्मुक्त की स्थिति में रहने वाले संत थे , इसलिए उनके लिए योग में भी भोग था और भोग में भी योग

क्या भगवान बुद्ध का अविर्भाव महाभारत या भगवान कृष्ण से पूर्व हुआ था ?

था। वे गार्हस्थ्य होकर भी संसार के पार थे और ईश्वर के समीप थे। इनके सिद्धांतों का निचोड़ है कि जिस प्रकार जीवात्मा तथा परमात्मा एक है और उनका मूल स्वरूप प्रेममय है , उसी प्रकार साधना का भी मूल रूप सहज समर्पण तथा सुमिरन है। भक्तिकाल के ये महान संत अपने जीवन से उच्च कोटि के आदर्शों की स्थापना करते हैं। दादू ने भी अपने जीवन से एक उच्च आदर्श स्थापित किया है , जिससे आने वाली अनेक सदियाँ मार्गदर्शन तथा प्रेरणा पाती रहेंगी।

सन्दर्भ सूचि ---

१ चतुर्वेदी , आचार्य परशुराम , उत्तरी भारत की संत परम्परा , प्रकाशन -- भारती भंडार , लीडर प्रेस , इलाहबाद , संस्करण -- सं० २०२१ , पृ० ४८६
२ वहीं , पृ० ५००
३ वहीं , पृ० ५०५
४ वहीं , पृ० ५१६
५ वही , पृ० ५२०
६ वहीं , पृ० ५२०
७ वहीं , पृ० ५२२
८ वहीं , पृ० ५२३
९ वहीं , पृ० ५२४
१० वहीं , पृ० ५२५
११वहीं , पृ० ५२६
१२ वहीं , पृ० ५२७
१३ वहीं , पृ० ५२८

■■

डॉ अम्बे कुमारी
मगध विश्वविद्यालय ,
बोध गया।

यह तथ्य निर्विवाद रूप से सत्य है कि भगवान बुद्ध का जीवन काल १८०७ ईशा पूर्व का निर्धारित है तथा पाणिनि का काल -७००-५०० ईसा पूर्व था। निश्चय ही पाणिनि ने अष्टाध्यायी तथा अपने ग्रंथों में बुद्ध , महाभारत व भक्ति-भगवत धर्म का उल्लेख अपने पूर्ववर्ती ग्रंथों एवं श्रुतियों से किया है। प्रशन यह है कि महाभारत का काल बुद्ध के बाद का कैसे हुआ ?

इसके लिए इतिहास को खंगालने की आवश्यकता है। एक बात तो यह है कि पाणिनि ने कहीं भी यह नहीं कहा की महाभारत का काल बुद्ध के बाद का है , ऐसा प्रमाण हमें नहीं मिलता है। दूसरी बात महाभारत के एक लाख श्लोकों में कहीं भी बुद्ध का उल्लेख ही नहीं है जबकि महाभारत को उस समय भारत का प्रतिबिम्ब कहा गया था। अगर कहीं महर्षि पाणिनि ने अपने ग्रंथों में "मस्करी परिव्राजक" का उल्लेख किया है तो वह कोई चर्चा का विषय ही नहीं है। बुद्ध का काल तो पाणिनि से भी लगभग १३०० -१२०० ईसा पूर्व था। महर्षि पाणिनि ने अष्टाध्यायी की रचना की , यह संस्कृत व्याकरण का सबसे अधिक सटीक तथा सर्व मान्य ग्रन्थ माना जाता है। जिसके आधार पर सभी बाद के धर्मग्रंथों की रचना की गई। इतना ही नहीं कुछ प्राचीन ग्रंथों को भी पुनः इसी आधार पर संशोधित किया गया।

अब जरा महाभारत की स्थिति पर भी ध्यान दें। वेद व्यास जी ने एक ग्रन्थ की रचना की , जिसमे एक लाख श्लोक थे। इन एक लाख श्लोकों को १०० पर्वों में बांटा गया था। इस ग्रन्थ का रचना काल ३१०० ईसा पूर्व के लगभग माना जाता है। इसका नाम "जय महाकाव्य " था।

वेद व्यास जी के कहने से उनके शिष्य वैशम्पायन जी द्वारा जन्मेजय यज्ञ समारोह में इस जय महाकाव्य को ऋषि - मुनियों को सुनाया गया। तब इसे "भारत" के रूप में जाना गया। (समय लगभग ३००० ईसा पूर्व)

इस जय महाकाव्य अथवा भारत को सुत जी द्वारा लगभग २००० ईसा पूर्व पुनः सुव्यस्थित किया गया तथा १८ पर्वों में बाँटा गया।

तत्पश्चात लगभग १२०० ईसा पूर्व इस ग्रन्थ को ब्राह्मी या संस्कृत में हस्तलिखित पांडुलिपि के रूप में लिपि बद्ध किया गया। इसके बाद भी अनेक विद्धवानो द्वारा इसमे फेर बदल गये।

पुणे स्थित भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान ने पुरे दक्षिण एशिया में उपलब्ध महाभारत की लगभग १०००० पांडुलिपियों को खोज कर शोध और अनुसंधान कर सभी में पाए जाने वाले ७५००० श्लोकों को खोजा और उनके स टिपण्णी एवं समीक्षात्मक संस्करण प्रकाशित किये। इस सम्पूर्ण सामग्री को अलग अलग खंडो में विभाजित कर १३००० पृष्ठों में समेटा गया है।

इसके अलावा जो लोग महाभारत का काल ७०० -५०० ईसा पूर्व मानते हैं उन्हें छान्दोग्य उपनिषद जो १००० ईसा पूर्व से भी पहले का है , भी देखना चाहिए। उसमे भी महाभारत का वर्णन मिलता है।

अगर वैज्ञानिक आधार की बात करें तो भू वैज्ञानिकों के अनुसार सरस्वती नदी के ५००० -३००० ईसा पुर्व की उपस्थिति का पता चलता है तथा १९०० ईसा पूर्व भू गर्भी परिवर्तनों से इस नदी के सुखाने का आभास मिलता है। जबकि महाभारत में सरस्वती नदी का वर्णन अनेक बार आया है जिससे स्पष्ट है कि महाभारत ईसा से १९०० वर्ष पूर्व का ही है।

अब ज्योतिषीय गणना के अनुसार जो महाभारत में ही वर्णित हैं-------

१ -विश्व विख्यात भारतीय गणितज्ञ एवं खगोलज्ञ आर्य भट्ट के अनुसार महाभारत युद्ध लगभग ३१०२ ईसा पूर्व हुआ था।

२ -विश्व विख्यात भारतीय गणितज्ञ एवं खगोल शास्त्री वराहमिहिर के अनुसार महाभारत युद्ध २४४९ ईसा पूर्व के लगभग हुआ था।

३ -चालुक्य राजवंश के सबसे महान सम्राट पुल्केसी-१ के अनुसार ४वी शताब्दी के ऐहोल अभिलेख में बताया गया है कि महाभारत युद्ध को ३७३५ वर्ष बीत गए और उसके हिसाब से यह ३१०० ईसा पूर्व का समय आता है।

४ -पच्छिमी यूरोपीय विद्धवान पी वी होले महाभारत में वर्णित ग्रह न क्षत्रों की आकाशीय स्थितियों का अध्यन कर इसे ३१४३ ईसा पूर्व का मानते हैं।

५ -अधिकतर भारतीय विद्धवान श्री बी एन अचर ,एन एस राजाराम ,के सदानंद ,सुभाष काक आदि गृह नक्षत्रों की आकाशीय गणना के आधार पर इसे ३०६७ ईसा पूर्व मानते हैं।

६ -ताजा शोधानुसार ब्रिटेन में कार्यरत न्युक्लिअर मेडिसिन के फिजिशियन डॉ मनीष पंडित ने महाभारत में वर्णित १५० खगोलिय घटनाओं का अध्यन कर बताया कि यह युद्ध ३०६७ इसा पूर्व हुआ था , उस वक्त कृष्ण ५५ -५६ वर्ष के रहे होंगे। इसके कुछ समय बाद ही महाभारत का रचना काल माना जाता है।

७ -कृष्ण का काल द्वापर युग में था। जबकि कलियुग का प्रारंभ ३१०२ ईसा पूर्व हो गया था।

इससे पता चलता है कि कृष्ण का काल और महाभारत इसा से कम से कम ३१०२ वर्ष पूर्व ही था।

८ -डॉ प्रभुदयाल मितल ने छान्दोग्य उपनिषद के श्लोकों ,मैत्रायिनी उपनिषद और शतपथ ब्राह्मण के " कृतिका स्वादधीत " उल्लेख से बताया कि तत्कालीन खगोल स्थिति की गणना कर ट्रेनिंग कहलेज ,पूना के गणितज्ञ प्राध्यापक शंकर बालकृष्ण दीक्षित ने कृष्ण काल को लगभग ४९९९ वर्ष पूर्व यानी ईसा से लगभग ३००० वर्ष पहले ही माना है। छान्दोग्य उपनिषद भी इसी काल का माना जाता है उसमे देवकी पुत्र कृष्ण का उल्लेख मिलता है। शतपथ ब्राह्मण का काल २५०० ईसा पूर्व का है। उपनिषद का रचना काल भी २५०० -२००० ईसा पूर्व का ही निर्धारित किया गया है।

९ -डॉ मीतल के अनुसार ही " महाराजा परीक्षित के समय सप्त ऋषि (आकाश में सात तारे) मघा नक्षत्र पर थे। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मघा नसे प्रारम्भ होकर २७ नक्षत्र होते हैं। प्रत्येक नक्षत्र पर सप्त ऋषि १०० वर्ष रहते हैं। नक्षत्रों का एक चक्र पूरा कर वर्तमान में सप्त ऋषि कृतिका नक्षत्र पर हैं। जो की २१ वां नक्षत्र है। इस प्रकार २७००. २१०० == ४८०० वर्ष पूर्व परीक्षित का काल हुआ। परीक्षित के पितामह अर्जुन थे , जो श्री कृष्ण से १८ वर्ष छोटे थे। इस प्रकार उक्त ज्योतिष गणना के अनुसार कृष्ण का काल अब से ५००० वर्ष पूर्व का सिद्ध होता है।

१० -भारत का सर्वाधिक पुराना युधिष्ठर संवत है। यह कलियुग से ४० वर्ष पूर्व का है। कलियुग का आरम्भ ३१७६ शक संवत पूर्व है , अब १८८७ शक संवत है। यानी कलियुग को प्रारम्भ हुए ५०६६ वर्ष तथा युधिष्ठर संवत को ५१०६ वर्ष हो गए हैं।

११ -पुरातात्वेत्ताओं का मत है कि अब से ५००० वर्ष पूर्व भयंकर भूकंप और आंधी तूफान से प्रलय जैसी स्थिति आई होगी। इसी प्रकार की घटनाओं का जिक्र महाभारत में मिलता है , जिसमे हस्तिनापुर व द्व ारिका के नष्ट होने का उल्लेख मिलता है।

ऐसे एक दो नहीं अनेक तथ्य हमारे सामने उपलब्ध हैं जिससे सिद्ध होता है कि महाभारत व श्री कृष्ण का काल ३१०० ईसा पूर्व के लगभग था जबकि बुद्ध का काल अंतिम शोध मिलाने तक १८०७ ईसा पूर्व ही ज्ञात हो सका है।

डॉ कीर्तिवर्धन
विद्या लक्ष्मी निकेतन
५३ महालक्ष्मी एन्क्लेव
मुजफ्फरनगर -२५१००१

सन्दर्भ ——

1 –भविष्य पुराण प्रति सर्ग पर्व ,प्रथम खंड
२ –महाभारत गीता प्रेस ,गोरखपुर आदि पर्व अध्याय 1 ,श्लोक 1६ –10६
३ –आर्केलोजी ऑन लाइन ,साइंटिफिक वेरिफिकेशन ऑफ वैदिक नॉलिज , एविदेन्स फॉर एन्शियंट पोर्ट सिटी ऑफ द्वारका
४ –ए डी पुशलकर ,हिस्ट्री एंड कल्चर ऑफ इंडियन पीपुल
५–महाभारत ,गीता प्रेस ,आदि पर्व अध्याय २
6–महाभारत और सरस्वती सिन्धु सभ्यता , लेखक सुभाष कक
७ –आर्यभटटिय लेखक आर्यभट वर्ष ४९६
8 –छान्दोग्य उपनिषद (३.17. 6)
९ –भारतीय ज्योतिष शाला ,पृष्ठ ३४
10 –महाभारत, उद्योग पर्व ,अध्याय 1४३
11–THE HINDU RENAISSANCE जनवरी २००6 , लेखक श्री बी एन नरहरि जो वर्तमान में अमेरिका के टेनेसी प्रांत के मे. म्फिस विश्व विद्यालय में भौतिक विज्ञान के प्रोफेसर हैं।
12- THE DATE OF MAHABHARAT WAR BY SRI RAGHVAN - 1969
13 &THE DATE OF MAHABHARAT WAR BASED ON THE AASTRONOMICAL DATA MYTHIC SOCIETY BANGALORE] BY SRI KAMATH
१४ -अन्य ग्रन्थ तथा अन्तर जगत (INTERNET)

किस्मत

चिता की ताप अब धीरे धीरे कम हो रही थी और शाम का अंधेरा दिन को निकलने को तैयार खड़ा था । वहीं रुक रुक कर हो रही बूंदा बांदी आसमान के भी सुबकने का इशारा कर रही थी । रूमी अब भी वहीं बैठा था। उसके सामने उसका देवन नहीं था, उसकी आँखों में उदासी और अकेलापन साफ झलक रहा था । देवन उसका सबसे अच्छा दोस्त था । वही देवन जो सामने धीरे धीरे चिता की राख में बदल रहा था। देवन जब रूमी को उठाकर लाया था तब वो सिर्फ तीन हफ्ते का था और अब वह ३ साल का हो गया था । रूमी अचानक चौंक कर उठा जैसे देवन ने उसे अकेला कहीं छोड़ दिया हो । वह सीधा घर की तरफ भागा । वो जानता था कि घर पर देवन की बूढी अपाहिज माँ एकदम अकेली है जो बिना सहारे के उठ भी नहीं सकती । घर के मुख्य द्वार से दौड़ता रूमी सीधे पीछे के हिस्से की तरफ भागा। उसने चारों और नजर दौड़ाई और फिर अंदर झांका । कुछ लोगों को अंदर बैठा देख उसे तसल्ली हुई ।

चांदपुरा से आईकोड जाने वाली सड़क के एक मोड़ पर कुमारन की दुकान है । चालीस सेंट की जमीन पर दुकान और घर दोनों बने हुए थे । आगे के ऊंचे हिस्से पर चाय और परचून की दुकान थी और खाली पड़े पिछले हिस्से में देवन और उसकी मां रहते थे । ३ साल पहले हुए लैंडस्लाइड की बड़ी दुर्घटना हुई थी जिसमे देवन का घर तबाह हो गया था। देवन के पिता उन छप्पन लोगों में से थे जिन्होंने उस दिन अपना सब कुछ गंवा दिया था । उसकी माँ को कंक्रीट के एक बड़े स्लैब के नीचे से खींचकर बहार निकाला गया था। पहले पहल तो लोगों को लगा कि कोई लाश है, वो तो अस्पताल ले जाते समय उसकी सांसें चलती दिखाई दीं । उसकी जान तो बच गयी लेकिन पीठ पर छत गिरने से वह पूरी तरह से अपाहिज हो गयी थी। जब दुर्घटना हुई उस समय देवन अपने पड़ोसी के घर पर ज्ट देख रहा था इस कारण वह बच गया। उसके पिता का शव तीसरे दिन मलबे में मिला । कुमारन ने तरस खाकर देवन और उसकी अपाहिज माँ को आश्रय दिया। देवन छोटा जरूर था लेकिन बहुत मेहनती था । अपने माँ - बाप की इकलौती संतान होने के कारण वह बहुत ही लाड़ प्यार से पाला गया था।

'माँ को मुझे बिलकुल पहले जैसा स्वस्थ देखना ळे'' उसके दिमाग में दिन रात सिर्फ यही खयाल घूमता रहता था और इसी लिए जी तोड़ मेहनत भी करता, अगर कभी भी थोड़े से पैसे खर्चे से बच जाते तो वह उसे कुमारन को दे देता । "जब बहुत सारे पैसे जुड़ जाएंगे तो आप माँ को किसी बड़े डाक्टर को दिखाना और वो फिर से पहले जैसी हो जाएगी।''

उस दिन माँ का सारा काम जल्दी से निपटा कर वो घर से निकल गया । परमू नायर शटर उठा रहा था रहा था, देवन को देखते ही उसने पूछा "अरे देवन आज इतनी सुबह सुबह? " देवन उसे दे खकर मुस्कुरा दिया और अपने काम में लग गया । परमू नायर का ''पद्मावितास होटल'' ही इकलौता रेस्टोरेंट था जो हाईस्कूल के नजदीक था । देवन वहाँ रोज सुबह पहुँच जाता था । उसका काम रात के सारे जूठे बर्तन धोना था । वहां काम करने का एक फायदा ये भी था कि उसके और उसकी माँ के रोज के खाने का प्रबंध भी वहीं से हो जाता था और महीना पूरा होते होते कुछ पगार हाथ में आ जाती सो अलग। परमू नायर खुद उसकी माँ के लिए रोज खाना बाँध कर देता था, वह गरीबों पर दया करना अपना कर्तव्य समझता था।

तभी परमू नायर का दोस्त सलीम वहां आ पंहुचा और देवन से बोला "अरे देवन उधर सड़क पक्की करने का काम चल रहा है कुछ लोग चाहिए, अच्छे पैसे मिलेंगे, चलोगे ?" देवन तुरंत तैयार हो गया। उसने चाय का प्याला नीचे रखा और सलीम के साथ हो लिया। "देख रहे हो ये कच्ची सड़क इसी पर तारकोल बिछेगा । पहले मिटटी को मौरंग डाल के बाँधा जाएगा, फिर इस पर गिट्टियां पड़ेंगी और बाद में सबसे ऊपर तारकोल डाला जाएगा।" देवन काम पाकर बहुत खुश था।

मौरंग डालने के बाद सड़क को समतल करने के लिए रोड रोलर चलाया जाता है, और जैसे जैसे रोलर आगे बढ़ता है उसके इस्पात के बड़े बड़े पहियों में मौरंग चिपक जाती है जिसे पोछते रहना पड़ता है । उन नन्हें हाथों को इसी मौरंग को पहियों से साफ करने का काम सौंपा गया था । सलीम ने देवन को मिस्त्री से मिलवाया और हाथ में कपड़ा थमा दिया। रोड रोलर धीरे धीरे आगे बढ़ने लगा। मजदूर सड़क पर पानी डालते जा रहे थे। देखते देखते कुछ तमाशबीनों भीड़ भी वहाँ जुट गयी लोग खड़े होकर ताली बजाते और मजदूरों का उत्साह बढ़ाते । कुछ बच्चे भी देवन के पीछे पीछे चल रहे थे । तभी अचानक गाड़ी हिली, लोगों को उस शोर में ड्रम के गिरने की आवाज साफ सुनाई पड़ी । रोलर के साथ चल रहा देवन पीठ के बल गिरा और तभी रोड रोलर आगे बढ़ गया । भीमकाय चट्टान सा उसका इस्पात का पहिया देवन के शरीर को कुचलते हुए आगे बढ़ गया। देवन ने एक हिचकी ली और फिर शांत हो गया । उसका छोटा सा सिर सड़क की धूल में पिस चुका था। रोलर आगे निकल गया और लोग अभी भी हँसते हुए तालियाँ बजा रहे थे। गीली मौरंग में लाल रंग की धारियाँ उभर आयीं थीं । देखते ही देखते हलके लाल रंग के साथ हवा में ताजे खून की बू आनी शुरू हो गयी थी । कुछ कौवे जो अब तक बिजली के तारों पर बैठे थे अचानक से उड़ गए थे । पास के भगवती मंदिर में हो रही प्रार्थना के स्वर अब भी सुनाई दे रहे थे ।

(श्री शमसुद्दीन वी. जे. की मलयालम लघु कथा "विधि" का हिंदी भावानुवाद)

मनीष श्रीवास्तव,
बोस्टन, यूनाइटेड स्टेट्स

आजादी का बरगद

सरफरोशी के हल से जोते,
लहू से सींचे धरती पावन ये..
आजादी का बरगद बोएं,
सन सैंतालीस के सावन में..

भारतवर्ष से इस भारत तक
वीरों के इतिहास का वो अध्ययन है..
जिसको दोहराकर गर्वित
हर हिन्दुस्तानी का कण-कण है..

ना हिन्दू ना मुस्लिम ना सिख इसाई
हिन्दुस्तान हमारा स्वप्न है
ये कहकर इक दूजे के ढाल बने वो
स्वतंत्रता के इस रण में

घर-घर की कहानी है कि
होती भाई-भाई में अनबन है
पर टूट नही सकती ये कडियां
किसी रावण के प्रवचन से..

कभी हिम्मत से, कभी जोर से,
कहीं बलिदानों और अनशन से..
मुठ्ठी से अपनी मिट्टी की
खुशबू भिखराए सबने अर्पण के..

तिरंगे की लहराती शान तले,
जंजीरें पिघलाकर अंसुवन की ..
नूतन इक संविधान भी लिखा
सन ४९ में वीरों ने इस आंगन मे..

जड़ निकले, फिर शाख बने,
फूले-फलें नव-उपवन मे..
जब शीर्ष उठाए डटके खड़े,
ये भय बोया फिर दुश्मन मे..

अनेकता मे एकता की ये इक
अभेद अटूट सा प्रण है..
ज्ञान-विज्ञान का भंडार बने
शान्ति का ये मेरा भवन है..

सरफरोशी के हल से जोते,
लहू से सींचे धरती पावन ये..
आजादी का बरगद बोएं,
सन सैंतालीस के' सावन में ..

- **समीर मूसा**

अरशद मिर्जा की कवितायें

इश्क में जरा हद से गुजर के देखो तो,
जमाने की मोहब्बत को भूल जाओगे।

आजकल दिल सभी से मिलें ये जरूरी नहीं,
दुश्मनी दोस्ती में मिलें ये जरूरी नही।
चाहने पर सभी को यहां मोहब्बत ही मिले,
मोहब्बत में सभी दिल मिलें ये जरूरी नही।

ना सोचा है ना सोचा था ना पाऊंगा कभी उसको,
ना चाहा है ना चाहा था ना चाहूंगा कभी उसको।
मोहब्बत में कभी सौदा ना चाहत में कभी धोखा,
ना आता है ना भाता है ना मैं दूंगा कभी उसको।

ना सोचा है ना सोचा था न सोचूंगा कभी उसको,
ना चाहा है ना चाहा था ना चाहूंगा कभी उसको।
मोहब्बत में कभी सौदा ना चाहत में कभी धोखा,
ना आता है ना भाता है ना मैं दूंगा कभी उसको।

कभी कभी सही मगर खबर लिया करो,
उदास दिल कि भी कभी खबर लिया करो।

अरशद मिर्जा

मैं और मेरी कविता

हाथ में ले कलम
लिखना चाहे कोई नज्म

जज्बात खाने लगे हिलोरें मद्धम मद्धम
बैठी रही कुछ गुमसुम गुमसुम

दिल की बात आई जुबां पे
उतरने को बेताब हुए कागज पे

नजरें टिकी हुई है आकाश पे
बिन बारिश बरसात पे

सतरंगी छटा पे
अलौकिक इन्द्रधनुष पे

बगिया के फूलों पे
रंग बिरंगी तितलियों पे

जैसे अल्फाजों को मोतियों में पिरोना चाहा
दिल की आवाज को धीरे से सुनना चाहा

कलम को अपनी ताकत बनाना चाहा
हर मुद्दे पर लेखनी का जादू बिखेरना चाहा।।

ऐश्वर्या संपन्ना

गज़ल

नहीं कोई इससे, बड़े हैं गिले
वो आये यहाँ और, हमें ना मिले

बड़ा खूबसूरत, ये जज़्बा मगर
मुहोब्बत में मिलते, यहीं हैं सिले

मिसालें मैं क्या दूं, किसी और की
ये घर घर की बातें, यही सिलसिले

घडी दो घडी ही, तो है कामकी
वहीं फासले फिर, वही लब सिले

है इस राहकी बस, यही मंजिले
हजारों है फिर भी, यहाँ काफिले

बदलती 'ऋतु' का, ये पैगाम है
कभी दिल जले फिर, वही दिल खिले

ऋतुराज बिहोला

जौके इश्क

ये जौके इश्क है या
रिंद की बोतल बोल रही है ।
क्या बात है जो हर बात
कानों में मिश्री घोल रही है ।

रकीबों के पहलू में बेपर्दा
क्यूँ बैठे हो जा कर ।
तेरी ये बेतकल्लुफी तो
कई राज खोल रही है ।

इश्क तो बेशकीमती
खुदरंग जवाहर है जनाब।
ये कौन सी दौलत है जो
इश्क को तोल रही है ।

ऐसे ही सच्चे रिश्तों का
आकाल पड़ा है शहर में।
चाहने वालों से खामखा
क्यूँ दुश्मनी मोल रही है।

जलेबी सी लच्छेदार बातों से
अपना काम निकाला कर।
दुनिया सीधी कब थी ,
ये तो शुरू से गोल रही है।

नमक के शहर में यूँ ही
शक्कर कम मिलता है ।
फिजा में कड़वी बातों से
क्यूँ तू नमक घोल रही है ।

श्वेता सिंह उमा

डाकबंगला

इसका आज के
इस खतरनाक समय से
कुछ लेना-देना नहीं है।

बरसों से सोचता रहा हूं
किसी वीराने में बसे
डाकबंगले में चला जाऊं।
बाहर बारिश की बूंदें
दरख्तों पर
गा रही हों सारंग,
और ओसारे पर की आरामकुर्सी के बगल में
तिपाई पर
रखी हो गर्म कहफी...।

सुनो,
आतिशदान में डाल दूं कुछ लकड़ियां
ये सूना, तनहा कमरा गर्म हो जाए
वायलिन पर मद्धम उतारूं राग जयजयवंती
किताब से पढ़कर सुनाऊं अज्ञेय की कविता
या फिराक की कोई नज्म...!
दीवार पर लगी बड़ी-सी घड़ी
'टन्न' करके घंटा बजाये साढ़े नौ का
और मैं हौले से तुम्हें गर्म चादर ओढ़ा दूं...!

हालांकि ये सब मुमकिन नहीं है आज,
पर, ऐसा सोचने में क्या जाता है...!!

डॉ किशोर सिन्हा

मैं तिमिर हूं...!!

मैं तिमिर हूं..अंधकार ,रात्रि.. स्याह...कालिमा... इत्यादि बहुत से नाम जिससे तुम मुझे पुकारते हो।तुम्हारे जीवन की वह सच्चाई जिसे तुम नकारना चाहते हो, जिसे तुम "हर - कर" सिर्फ प्रकाश में रहना चाहते हो। जिसे तुम दुःख की कालिमा बताते हो। अज्ञान के भंडार का सूचक भी बनाते हो। यही नहीं तुम मेरा गलत फायदा उठाकर न सिर्फ अपने विवेक को बल्कि दूसरे का जीवन भी नर्क कर देते हो।

तुम्हारी हर बुराई, गलत कार्य और दुख - रोग, क्लेश, बीमारी की संज्ञा भी तुम मुझे ही बताते हो।

लेकिन मेरा तुम्हारे जीवन में होना कितना आवश्यक है आओ, आज मैं तुम्हें बताता हूं। आज अपने होने का तुम्हें एक छोटा स्वरूप दिखाता हूं, एक दर्शन करवाता हूं की मै तुम्हारे लिए क्या हूं और क्यों मै तुम्हारे लिए जरूरी हूं। तो सुनो,...

मै रात्रि का वह अंधकार हूं, जिसमें तुम्हारे पूरे दिन की थकान को उतारकर तुम्हें स्वस्थ स्वप्न लोक में ले जाने में मदद करता हूं।

मैं सूर्य के प्रकाश श्रोत का वह काली परछाई हूं, जिसके द्वारा तुम अपने अंदर के ज्ञान ज्योति के प्रकाश को पढ़ सकते हो।

मैं रात्रि का वह अंधकार हूं,
जिसमें तुम अपनी आंखों को अपलक जागने से बचाकर उसे विश्राम देकर अगले 10 - 12 घंटे जागने के लिए उत्साह और उसे शांति विश्राम देते हो।

मैं वह तिमिर हूं, जो तुम्हारी सक्रियता को स्थिरता देता हूं। तुम्हें वह पल देता हूं की तुम ठहर कर सोच सको, अपने जीवन में सही निर्णय लेने के लिए आंखें बंद कर और दिमाग की स्थिर कर सही फैसला लेने में सक्षम हो सको।

मैं वह काली स्याही हूं जिसमे लकड़ी डुबोकर तुम अपने ज्ञान का प्रकाश चहुं ओर बांट सकते हो, अपना जीवन लिख सकते हो।

यह सब बहुत छोटी छोटी बातें है।

तुम्हारे इस दुनियां में आने से लेकर, जाने तक में मेरा स्थान उतना ही मायने र खता है जितना की प्रकाश का है।

मै हर जगह व्याप्त हूं । भू - लोक से लेकर अंतरिक्ष तक और वहां भी जहां तक तुम्हारी सोच नही जा सकती।

तुम भ्रूण रूप में मां के कोख में रहते हो। वहां भी अंधकार के गोद में ही तुम पलते हो और देखो शिशु रूप में तुम 18-22 घंटे तक तुम मुझमें ही अपना स्थान खोजते रहते हो, अपनी आंखें बंद करके मेरे ध्यान में ही खोना चाहते हो।

जैसे - जैसे तुम्हारा मानव रूप विकसित होता है, तुम मुझे भूलते जाते हो और तुम कम से कम आंखे बंद करना चाहते हो। पर, थककर फिर इसी रात्रि के गोद में

अपना सर रख कर दिनभर की थकान को दूर करते हो।
जीव उत्पति के लिए, प्यार समर्पण के लिए तुम रात्रि में मेरे समय का ही चुनाव करना चाहते हो क्योंकि वह समय शांत, सुखद और सुकून से भरा होता है, उस वक्त मैं तुम्हे बहुत प्रिय लगता हूं।
जब कभी भी तुम श्रद्धा पूर्वक अपना शीश झुकाते हो या आसमान में देखते हो तुम आंखे बंद करके मुझमें समाहित होकर मेरे द्वारा ही अपनी प्रार्थना , दुआ और पूजा में अपने खुदा, भगवान या परमात्मा को पहुंचाना चाहते हो।
सिद्धि प्राप्ति के मार्ग के लिए भी तुम मेरा चुनाव करते हो। जीवन को अंकुरित करने के लिए भी । स्वयं को विश्राम देने के लिए, अपने आराध्य को याद करने के लिए, यहां तक कि तुम्हारे इस जीवन का अंत भी आंखे बंद कर मुझमें समाने से ही होता हैं।

मैं तुम्हें अंधकार में भी प्रकाश दिखाता हूं, ध्यान और ज्ञान के द्वारा तुम्हें स्वयं को समझने में मदद करता हूं, स्थिर समय और सोच का अवसर प्रदान करता हूं।

मैं तिमिर हूं, अज्ञान नही...! मै प्रकाश श्रोत को ढकता हूं क्योंकि तुम्हारे शरीर को, बुद्धि को, विवेक को शांत र खकर नव ऊर्जा के लिए इसी तिमिर की आवश्यकता होगी।

मैं पूरे चराचर जगत में व्याप्त हूं। मैं तुम्हें दिन की तेज गर्मी में छांव बनकर आराम प्रदान करता हूं।
पर, मुझे बुरा लगता है जब तुम अपने बुरे कार्य का दोष मुझ पर मढ़ते हो।

मुझे अच्छा नही लगता जब तुम अपने बुरे कर्मों का साक्षी मुझे बनाते हो। मै तुम्हें भयभीत करने के लिए अंधकार प्रदान नही किया हूं।

इसलिए अपने बुरे कर्मो का ,अपने दुख की उपमा मुझे देना बंद करो।

तिमिर, अंधकार, तम, रात्रि तुम्हारे शरीर और जीवन के लिए क्यों आवश्यक है आज अपनी आंखे बंद करके सोचना।
मैं तिमिर तुम्हारे इस ज्ञान चक्षु के भीतर तुम्हारा इंतजार कर रहा हूं।

मोनी बिजय
(मोनी श्रीवास्तव कोइराला)
दोहा कतर

माई

माई के गुन गावे
ओकरा संगे फोटो खिंचवावे
माई माई कहिके बधाई देवेला
बस एगो दिन
बाकि दिन
कहवाँ बानी माई
कइसे बानी माई
केहुओ ना पूछे
केहुओ ना सोचे
364 दिन दरद से तलफत माई
अकेलही बा माई
बूढ़ माई
झिड़की खात माई
एगो कोना में सुसुकत माई
जवन भेंटाइल
चुपे खात माई
ऊंच सुनत
खोंखत, हांफत
अपने लुगरी के तुरपत माई
ना मिठाई
ना पकवान
रुखरे खात
सभे लोराइल आँखिन से
ताकत माई
नेह में सउनाइल दू गो बाति ला
तरसत माई
डेराते डेरात तनि लजात
अपने ला कुछ कहल चाहतिया
सभका रूप देखि
अपना में बिटुरा जात माई
अब त चीठिओ नइखे
मन के फुसिलावे खातिर

बिटिया के दू गो बाति ला
तरसत माई
ओकरा जोहत
गरे लागि लोर बहावे ला
अइसने दूगो पल खातिर तरसत माई
जे कुल्हि दिहलस
घर–बार
जिनगी के कुल्हि खुसी
ओही खुसियन खातिर तरसत
अकेल बूढ़ माई।

■■

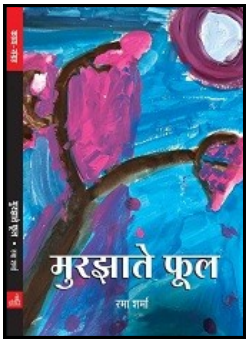

मूल रचना – माँ(मुरझाते फूल)
मूल रचनाकार– रमा शर्मा
भोजपुरी भावानुवाद– जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

मरंगगोडा नीलकंठ हुआ उपन्यास : आदिवासी चिंतन

देश को आजाद हुए आज लगभग 75 साल हो गए हैं । इस दौरान देश में बहुत बदलाव देखा गया है । स्कूल, कहलेज, फैक्ट्रियां, सड़क यातायात साधनों में लगातार वृद्धि हुई है । लोग तेजी से विकास की ओर अग्रसर हुए हैं, परंतु समाज का एक ऐसा वर्ग है जो आज विकास से वंचित है आज भी वह आदिम जीवन जी रहा है । उसके जीवन स्तर में कोई परिवर्तन नहीं आया है जहां एक तरफ शहरों में विकास की गंगा बह रही है, वहीं आदिवासी समाज भुखमरी, गरीबी, अशिक्षा आदि के कारण पशुओं जैसा जीवन जीने को मजबूर है परंतु धीरे-धीरे वर्तमान सरकार के समय में इनकी प्रगति की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है सरकार इनके विकास के लिए सक्रिय है इसी क्रम में माननीय द्रौपदी मुर्मू को देश के प्रथम नागरिक होने का सम्मान प्राप्त हुआ है जो इस समाज के लिए बड़ी उपलब्धि है । जब देश का संविधान बनकर तैयार हुआ तो उसमें प्रत्येक नागरिक के लिए स्वतंत्रता और समानता का अधिकार दिया गया, जिसमें अनुसूचित जाति जनजाति एवं अल्पसंख्यकों को विशेष दर्जा दिया गया, परंतु कुछ स्वार्थी राजनेताओं और व्यक्तियों के कारण इन लोगों को आवश्यक सुविधाएं नहीं मिल पा रही है, जिसके कारण यह समाज विकास की दौड़ में पिछड़ता चला गया । आदिवासी समाज की जल, जंगल और जमीन से जुड़ी समस्याओं को आधार बनाकर हिंदी उपन्यासकारों ने अनेक उपन्यासों की रचना की, जो बहुत सफल रहे ।

महुआ मांझी कृत उपन्यास "मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ" झार खंड के आदिवासियों की विकिरण ,प्रदूषण और विस्थापन से उलझी जीवन गुत्थी को प्रस्तुत करता है । किस तरह आदिवासियों का जीवन आधुनिकता की भेट चढ रहा है, ऊर्जा की आवश्यकता को पूरा करने के लिए जंगलों को उजाड़कर खुदाई की जाती है, जिससे निकलने वाला यूरेनियम तथा रेडियोधर्मी तत्व आदिवासियों के वा. तावरण को प्रदूषित कर देता है, जिसका प्रभाव उनके स्वास्थ पर पड़ता है साथ ही साथ उन्हें अपने जंगलों से विस्थापित होकर कही और बसना पड़ता है उनकी जमीन उनसे ले ली जाती है, जिससे आदिवासियों के सामने भोजन और रोजगार की समस्या उत्पन्न हो जाती है । हरिराम मीणा ने अपनी पुस्तक आदिवासी विमर्श में उद्घाटित किया है कि"महुआ मांझी का उपन्यास मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ वैश्वीकरण और विकास के नाम पर पीड़ा भोगते आदिवासी समाज की त्रासदी गाथा को उद्घाटित करता है" ।1

सन 1976 में सिंहभूमि के सारंडा, कोल्हान, पोराहाट जैसे क्षेत्रों में विश्व बैंक के सहयोग से वन विकास निगम (फॉरेस्ट डेवलपमेंट कॉरपोरेशन) की स्थापना कर दी गईस कॉरपोरेशन ने करीब एक लाख बयानवे हेक्टेयर जमीन को लीज पर लेकर जमीन पर लगे साल ,महुआ ,कुसुम , करंज, इमली जैसे घरेलू उपयोग के पेड़ों को काटना आरंभ कर दिया और व्यवसायिक दृष्टिकोण से ज्यादा लाभदायक और शीघ्र बढ़ने वाले पेड़ जैसे सागवान, यूकलिप्टस आदि लगाने लगे । इन पेड़ों से आदिवासियों को कोई सांस्कृतिक लगाव और आर्थिक लाभ नहीं था । देखते देखते दो-तीन साल के भीतर सरकार ने जंगल की तमाम लघु वनोपज को राष्ट्रीय कृत करके पूरा व्यवसाय अपने हाथों में ले लिया । जिसके कारण इलाके में बाहरी अधिकारी ,कर्मचारी, नेता, ठेकेदार और बिचौलियों की भरमार हो गई । कारपोरेशन और सरकार की संपत्ति को निजी संपत्ति समझ कर उसको निर्ममता से लूटा जाने लगा और सदियों से जंगल पर आश्रित गरीब आदिवासी लोगों को उनकी घरेलू उपयोग की रोजमर्रा की सामान्य चीजों से भी वंचित कर दिया गया । इस प्रकार आदिवासियों का घरेलू रोजगार तबाह हो गया । यह घटना आदिवासियों में विरोध के पनपने का कारण बनी । कई गुट आदिवासियों को विरोध करने के लिए उकसाने लगे।"आप भोले भाले हैं तमाम अत्याचारों को चुपचाप सहते आ रहे हैं पर अब वक्त आ गया है विरोध जताने का अपने अधिकारों के लिए लड़ने का । कोल विद्रोह में अंग्रेजों के छक्के छुड़ाने वाले वीरों के वंशजों आइए आप लोग भी हमारे साथ इस आंदोलन में शामिल होइए"2 और इस प्रकार काफी संख्या में प्रभावित क्षेत्र के आदिवासी उनके साथ जंगल आंदोलन में कूद पड़े ।

सभी आदिवासियों का एक ही प्रश्न था कि जंगल के बिना वह कैसे जिएंगे उनकी झोपड़ी खटिया बनाने की लकड़ी और रस्सी जंगल से ही आती है पत्तों से दोना बनाकर वे पत्तल बेचकर चावल, नमक तथा अन्य आवश्यक वस्तुएं खरीदते हैं वह सब कहां से आएगी? उनके अनुसार साल की लकड़ी और पत्तों के बिना उनके विवाह से लेकर मृत्यु तक के संस्कार संभव ही नहीं है यदि उन्हें जंगल में घुसने नहीं दिया जाएगा तो वे अपने जानवरों को कहां चराएंगे खेती करने के लिए जरूरी उपकरण बैलगाड़ी, हल , कुदाल, कुल्हाड़ी या हंसूआ आदि के लिए लकड़ी का जुगाड़ कहां से करेंगे वे सूप,चटाई कैसे बुनेंगे? बीमारी को ठीक करने के लिए जड़ी बूटियां तो जंगल से ही मिलती हैं । उनका इंतजाम कैसे होगा आदिवासियों के बच्चे जंगल में खेलते कुदते बड़े होते हैं मांस के लिए शिकार करते हैं वह कहां से करेंगे उनके पर्व त्योहार मेले नाच गाना सब कुछ जंगलों से जुड़ा है क्या जंगल के बिना वह जी सकेंगे यह सारे प्रश्न जंगल आंदोलन का कारण बने । जिसका कोई सटीक जवाब कारपोरेशन के अधिकारियों के पास नहीं था ।

कारपोरेशन द्वारा मजदूरों को पूरी मजदूरी नहीं दी जा रही थी स मजदूरों को सड़ा अनाज दिया जाता था। कारपोरेशन के अधिकारियों द्वारा उनकी औरतों के साथ बदसलूकी की जाती थी । अधिकारियों से शिकायत करने पर कोई कार्रवाई नहीं होती बल्कि झूठे केस में फंसा कर उन्हें मजा चखाया जाता था । इन घटनाओं के कारण आंदोलनकारियों द्वारा फॉरेस्ट डेवलपमेंट कॉरपोरेशन को बंद करने की मांग जोर पकड़ने लगी थी ।

आदिवासियों ने जंगलों को काटकर खेत बनाना प्रारंभ कर दिया था । जिसके लिए वे तर्क देते थे कि इन जंगलों पर हमारा पारंपरिक अधिकार रहा है । जब बाहरी लोग आकर जंगल साफ करके अपने लाभ के लिए सागवान उगा सकते हैं तो पेड़ काटकर हम क्यों नहीं कर सकते हैं खेती? जब इस संबंध में लोगों से पूछा गया कि अगर यह जमीन तुम्हारी है तो तुम्हारे पास अवश्य ही जमीन के पट्टे होंगे, उसे दिखाओ ।

तब आदिवासियों का जवाब होता-"हम कागज कलम की भाषा नहीं जानते जंगल के बीच जहां जहां हमारे गांव थे, वहां ससनदिरी (कब्र)में हमारे पुरखों की निशानी के रूप में गाड़े गए खड़े पत्थर ही हमारे पट्टे हैं । उजड़े हुए गांव की निशानी, अखड़ा, सरना स्थल और खेतों के अवशेष ही हमारे पट्टे हैं । घने जंगल के

बीच वर्षों पहले अपनी झोपड़ीयो के आसपास हमारे पुरखों द्वारा यत्न पूर्वक लगाए गए इमली, आम, करंज, कुसुम, महुआ आदि के पेड़ हमारे ही हमारे पट्टे हैं । हमें हमारी जमीन वापस चाहिए।3

इन सब कार्यों के जवाब में इलाके में पुलिस बल की तैनाती कर दी गई थी । भीड़ पर लाठियां बरसाई जाती थी । गोलियां चलाई जाने लगी थी । जिससे निर्दोष ग्रामीण मारे जाने लगे थे इस घटना के विरोध मे आंदोलनकारियों का जवाब होता ''कि हमें दुख इस बात का है कि सरकार हम आदिवासियों की इन तमाम गतिविधियों को कानून-व्यवस्था भंग किए जाने के नजरिए से देख रही है । इसके नेपथ्य में छिपी हमारी सामाजिक आर्थिक समस्याओं को बिल्कुल नजरअंदाज कर रही है ।''4

सगेन रह तो पश्चिमी सिंहभूमि में रहा था और यहां के लोगों के साथ आंदोलन भी कर रहा था परंतु उसे अपने मरंग गोड़ा की चिंता हमेशा रहती थी क्योंकि जब भी वह घर जाता तो उसे किसी न किसी नई बीमारी की जानकारी मिलती । किसी का सिर अस्वाभाविक रूप से बड़ा मिलता किसी का सिर धड़ की तुलना में बहुत छोटा किसी के हाथ पर शरीर की तुलना में अधिक लंबे होते जा रहे थे । किसी के शरीर पर काले धब्बे नजर आते फिर उसमें घ ाव बन कर पीव से लहू बजबजा उठता । ''विभत्स दानों से पटे शरीर वाले नंगे शिशु हाथ पांव में पांच पांच की जगह एक दो सात आठ उंगलियों वाले मासूम .... टेढ़े मेढे पैरों का ढांचा लिए धूल मिट्टी कादो में घीसटते विकलांग मरंग गोड़ा में राह चलते जहां तहां दिख जाते थे ।''5

सारंडा में साल काटकर सागवान लगाने के खिलाफ तो लोगों का गुस्सा था ही वही गुआ नामक खदान से बड़ी मात्रा में लौह अयस्क के लाल पानी के वह कराने और ग्रामीणों के खेतों को बर्बाद किए जाने के विरोध में भी लोगों का आक्रोश बढ़ता जा रहा था । इस आक्रोश को दबाने के लिए प्रशासन ने पूरे अंचल को छावनी में बदल दिया था पुलिस द्वारा विदर नाग जैसे आंदोलनकारियों की सरेआम निर्मम हत्या जैसे कारनामों के द्वारा आंदोलन को दबाने की कोशिश की जा रही थी । उतना ही यह उग्र रूप धारण करता जा रहा था । जिस पर आंदोलनकारियों का कहना था कि ''शायद वे भूल गए हैं कि यह वही भूमि है जहां कोल विद्रोह हो विद्रोह का लंबा सिलसिला चला था और यहां की मिट्टी में तीर धनुष धारी वीरों के लहू की बूंदे मिली हुई है जिन्होंने निर्भीकता से तोप बंदूकधारी ब्रिटिश सेना के भी छक्के छुड़ा दिए थे ।''6

आदिवासियों में डायन की समस्या भी चर्चा का विषय रही है । सगेन को उसकी मां ने यह बताया कि ''यहां के लोगों को पता चल गया है कि तुम्हारी ताई ने डायन विद्या सीख रखी है इसलिए अब उसके पास जाने से डरने लगे हैं लोग ।''7

चोर और डायन बताकर कई लोग अपने पुराने दुश्मनों को खत्म करने लगे उनकी संपत्ति हड़पने लगे हद तो तब हो गई जब अपराधियों और असामाजिक तत्वों से समाज को मुक्ति दिलाने के नाम पर ग्राम रक्षा दल की स्थापना की गई और इस दल के लोगों ने चोर काटो डाइन मारो का नारा देते हुए न सिर्फ चोरों को बल्कि तथाकथित डाइनो को भी मारना काटना आरंभ कर दिया । इसके अलावा भोले-भाले ग्रामीणों को उकसा कर हजारों संख्या में पेड़ों को दलालों द्वारा कटवा दिया गया ''ग्रामीणों द्वारा उकसाकर कटवाई गई हजारों एकड़ जमीन पर लगे कीमती पेड़ो को ठेकेदारों और टिंबर व्यवसायियों के हाथों बेच कर कुछ छुटभाइए नेता और दलाल लाखों रुपए कमा रहे हैं सपिछले दो वर्षों में इलाके में करीब चालीस हजार एकड़ में लगे वृक्ष कट चुके हैं ।''8

इसी दौरान एक घटना घटी जब एक दिन शाम को सगेन की ताई साप्ताहिक हाट से लौट रही थी । पड़ोस के कुछ लोगों ने जिनके यहां दो दिन पहले एक नवजात शिशु की मौत हुई थी । ताई को पकड़ लिया और जोर-जोर से चिल्लाना शुरू किया ''आज हम लोगों ने डायन को पकड़ लिया है । आओ आओ सब लोग आओ और इसको मार डालो और देखते ही देखते आसपास के काफी लोग वहां जमा हो गए फिर सब ने जी भर कर उस पर अपनी भड़ास निकाली । अपने अपने परिवार में हुई मौतों बीमारियों और शारीरिक विकलांगता की भड़ास उन्होंने उसका सर मुड़ाकर जबरन मानव मल खिलाया और बुरी तरह घायल करके मार ही डालने का उपक्रम कर रहे थे कि देवा ने उन्हें रोका कहा ''इसे अभी मत मारो पहले इससे मृत बच्चे को जिंदा करवा लो इसने उसे मारा है अब जिंदा भी इसे ही करना होगा।''9

देवा के कहने पर ताई को एक अंधेरे कमरे में बंद कर दिया गया फिर मृत बच्चे की दो दिन पहले दफनाई गई दुर्गंध उठती लाश को जमीन से निकालकर ताई के कमरे में डाल दिया गया और ''ताई पर दबाव डाला गया कि तुमने मंत्र फूंक कर इसे मारा है अब तुम्हें ही इसे जिंदा करना होगा जब तक बच्चे के रोने की आवाज बाहर नहीं आएगी तब तक हम तुम्हें बाहर नहीं निक. लेंगे।''10

अपनी ट्रेनिंग के दौरान जब सगेन कंपनी के पुस्तकालय में बैठकर पढ़ाई करता था ।उस समय वहां उसे यूरेनियम से संबंधित पुस्तकों को पढ़ने का अवसर मिलास जिससे उसे पता चला कि यूरेनियम कितना विध्वंसकारी है इसका विकिरण इतना विध वंसकारी है की बम विस्फोट के वर्षों बाद भी यह प्राणियों पर दुष्प्रभाव डालता है । नवजात शिशुओ को विकलांग बनाने की क्षमता रखता है । कैंसर जैसी लाइलाज बीमारियों से नई-नई पीढ़ियों को तबाह करने की कूवत रखता है और तभी से उसे अपने मरंग गोड़ा के लोगों में होने वाली विकलांगता तथा अन्य विचित्र बीमारियों का राज समझ में आने लगा । अध्ययन के बाद उसे पता चला कि मरंग गोड़ा के लोगों को होने वाली अधिकतर लाइलाज बीमारियों की जड़ में यूरेनियम से होने वाला विकिरण है ना की किसी दुष्ट वोगा का प्रकोप या डायन विद्या, जैसा वहां के अज्ञानी लोग अब तक समझते रहे हैं और निर्दोष पर जुल्म ढाते रहे हैं ।''11

उसको अपने अध्ययन के दौरान यह भी पता चला कि विकिरण जीवित प्राणी के जीन के साथ तो छेड़छाड़ करता ही है यह स्त्री पुरुष की जनन क्षमता को भी प्रभावित करके उन्हें बांझ बना देने की ताकत रखता है । जो प्राणी विकिरण या रेडियोधर्मिता या रेडिएशन के जितना निकट संपर्क में आता है वह उतना अधिक प्रभावित होता है । विकिरण एक ही सेल में लाखों म्यूटेशन पैदा कर सकता है । मनुष्य के सेल में करीब 3-5 बिलियन डीएनए के जोड़े होते हैं ।

इसी समय सूरज सिंह बेसरा जैसे नेताओं के कारण घ ाटशिला मुसाबनी जैसे कई इलाकों में जल जंगल जमीन नौकरी रोजगार विस्थापन जैसे मुद्दों पर आंदोलन की शुरुआत भी हो चुकी

थी । विस्थापन मुआवजा रोजगार के मुद्दे के अलावा भी मरंग गोड़ा कि यूरेनियम खदान के प्लांट से निकलने वाले जहरीले धुएं से हो रहे प्रदूषण के खिलाफ आवाज उठाते रहे थे धुएं से प्रभावित लोगों को पड़ रहे खांसी के दौरों से बचाने के लिए नष्ट होते धान और सब्जियों को बचाने के लिए खदान कंपनी के मैनेजमेंट पर दबाव डालने का प्रयास कर रहे थे । सगेन ने भी इस राजनीतिक दल से जुड़कर यूरेनियमऔर विकिरण के मुद्दे को प्रचारित करने का प्रयास किया तो लोग उसे सतर्क करने लग ``यूरेनियम और परमाणु का मामला अत्यंत संवेदनशील मामला है इसके खिलाफ कोई भी कदम उठाना देशद्रोह माना जाता है इस मामले में कंपनी और प्रशासन का रवैया अत्यंत सख्त है ऐसा करने पर किसी भी वक्त गिरफ्तार किए जा सकते हो कठोर से कठोर सजा हो सकती है । अपने पिता की तरह वर्षो जेल में सड़ना चाहते हो क्या?''12

सगेन के दिमाग में यह प्रश्न निरंतर चलता रहता की यूरेनियम कंपनी केंद्र सरकार द्वारा संचालित है तो क्या सरकार जान बूझकर विकिरण के मुद्दे को दबा रही है यह कैसा षडयंत्र है? आखिर क्यों यहां के अशिक्षित, अल्पशिक्षित आदिवासियों को इतनी बड़ी और भयानक सच्चाई से अब तक कि टेलिंग डैम के ऊपर से नंगे पांव चलना बच्चों का वहां खेलना स्वास्थ्य के लिए अत्यंत घातक है? क्यों खुदाई के दौरान निकलने वाले ऐसे पत्थरों को जिनमें कम मात्रा में यूरेनियम होता है सड़क किनारे यू ही फेंक दिया जाता है? अज्ञानता वश कितने ही लोग उन्हें उठाकर घर ले जाते हैं और घर की दीवार छत या चाहरदीवारी बनाने के काम में लाते हैं उनसे निरंतर निकलने वाली गामा किरणों या रेडान गैस के शिकार होते रहते हैं बेचारे.... । क्यों खदान या मिलकर में काम करने वाले मजदूरों को यूरेनियम की धूल लगे कपड़ों को पहन कर घर जाने से मना नहीं किया गया? यह क्यों नहीं बताया गया कि इससे घर के लोग विकिरण से प्रभावित हो सकते हैं? खास करके वह पत्नी जो इसे नंगे हाथों से धोती है ?क्यों नहीं बताया गया कि खदान से विस्फोट करके निकाले गए यूरेनियम अयस्क वाले पत्थरों से धुलधुल कर आते बरसाती जल के कारण उनके कुओं तालाबों और नदी के पानी में, उनकी मिट्टी में ,उनके खेतों की फसल में जहर घुल चुका है? क्यों खनन कार्य के लिए मिल या टेलिंग डैम के लिए उनकी जमीन लेते वक्त उन्हें यह नहीं बताया गया कि उनसे न सिर्फ उनकी जमीन ली जा रही है या उनका जंगल लिया जा रहा है बल्कि उनका खुशहाल जीवन भी छीना जा रहा है । स्वयं सगेन जो उपन्यास का प्रमुख पात्र है ने अपने प्रिय ततंग और जियांग को खोया है इस जहर के कारण उसके भाई और पिता लाइलाज बीमारी से ग्रस्त हैं बेचारी ताई डायन होने का लांछन लेकर अपमान जनक जीवन जी रही है । महुआ मांझी ने आदिवासियों की मूल समस्या जल ,जंगल और जमीन पर अधिकार किसका है इसको बड़े रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है एक स्थान पर जब कंपनी के अधिकारी पुलिस बल के साथ जमभीरा और सुकुरमनी का घर गिरा देते हैं उसका चित्र इस प्रकार है ''नई खदान कंपनी के लोग कई पुलिसकर्मियों के साथ खड़े होकर उसकी झोपड़ी को उस गाड़ी से तुड़वा रहे हैं कांडे के घर लोग उनके पड़ोसी हाय तौबा मचा रहे हैं मगर किसी की बात नहीं सुन रहे देखते-देखते करीब 22 झोपड़ियां उजाड़ दी गई सगेन की आंखों के सामने चित्रकारी की हुई रंगीन दीवारें भड़ भडाकर गिर पड़ी मिट्टी के घड़े टूट फूट कर बिखर गए बल्लियों समेत खपड़े की छत धसक धसक कर जमीन पर आ टिकी । और उन झोपड़ियों तथा झोपड़ियों के आसपास के तमाम खेतों को समेटकर वहां एक बड़ा सा डैम बना दिया गया । मुआवजे के थोड़े बहुत पैसे देकर पल्ला झाड़ लिया कंपनी वालों ने और कांडे सहित सगेन के ढेर सारे दोस्त अपने परिवार वालों के साथ वहां से दूर न जाने कहां चले गए ।''13

आदिवासियों के मकान उजाड़ कर वहां से यूरेनियम निकाली जाने लगी परंतु वहां के लोग बेरोजगार हो कर इधर-उधर भटकने लगे । गांव के कुछ लोगों को काम मिल गया परंतु अधिकतर का जीवन अस्त-व्यस्त हो गया । कंपनी तो दिन रात फल-फूल रही थी परंतु आदिवासियों का जीवन दूभर हो गया । रेकोंडा को अपने लोगों का यह दुख सहन नहीं होता । वह कंपनी के लोगों से जमीन के लिए लड़ जाता था जिसका उदाहरण इस प्रकार है "दिकुओ की बहाली हो रही थी जबकि ऐसे बहुत सारे स्थानीय लोग काम के लिए मारे मारे फिर रहे थे जिनकी जमीन पर कंपनी फल फूल रही थी जिनके घर और खेत उजाड़ दिए गए थे कंपनी का टेलिंग बनाते समय खदान को विस्तार देते समय मिल जाते समय और वह बिल्कुल बेरोजगार और आश्रय हीन हो गए थे ऐसे लोगों में कई एक तो रेकोंडा के बाल बंधु थे कंपनी की वजह से सब कुछ खोकर भिखारियों की तरह उनको मारा मारा फिरता देख रेकोंडा की भौंहे तन जाती मुट्ठियां भींच जाती और वह कंपनी के अफसरों पर पिल पड़ता है । ''13

कंपनी की गतिविधियों के खिलाफ जो भी खड़ा होता उसे किसी न किसी रूप में फंसा कर तबाह दिया जाता स रेकोंडा को भी इसी विरोध की सजा मिलती है और उसके अपने लोगों द्वारा उसका साथ नहीं दिया जाता है ''इस बार उसे इस तरह लपेटे में लिया गया कि वह उनके जाल में छटपटाता रह गया मगर कोई उसकी मदद के लिए आगे नहीं आया उसके ऊपर चोरी करके स्मेगलिंग का आरोप लगाया गया था । संगीन अपराध देशद्रोह सारे साथी कन्नी काट गए जिनके लिए लड़ा वे भी । वकील तक रखने के लिए पैसे नहीं । कहां से आते कुत्ते की शादी और दुलसुनुम दोनों का ही नहीं उतरा था अब तक । जेल में सड़ता रहा ।'' 14

लेखिका ने उपन्यास में माओवादी समस्या को भी उभारने का प्रयास किया है । फायर आफ फॉरेस्ट शीर्षक में झारखंड में बढ़ते हुए माओवादी संकट पर भी दृष्टि डाली गई है । प्रज्ञा को आदित्य से पता चलता है कि इस इलाके में माओवादी भी सक्रिय हो गए हैं आदित्य श्री का कथन इस प्रकार है '' लोग चाहे इसे किसी भी रुप में ले पर सच्चाई तो यह है कि सन 1951 से 1990 के बीच इस देश में विकास के नाम पर करीब 85 लाख आदिवासियों को उजाड़ दिया गया । इसमें से तीन चौथाई का भी पुनर्वास नहीं हुआ रोजगार तो दूर जीवन यापन सुविधाएं भी नहीं दी गई । यह असंतोष नक्सली घटनाओं की वृद्धि का कारण बना तुम्हीं सोचो , आदिवासियों से जबरन जंगल के अधिकार छीन लिए गए जो उनके जीविकोपर्जन के साधन थे कीमती खनिजों के खनन के लिए उनकी जमीन छीनी गई जिनकी जमीनें नहीं छीनी गई उनमें से कुछ ने दुर्गम पहाड़ी इलाकों में बसे होने के कारण गरीबी का दंश अब और न झेल सकने की वजह से हथियार उठा लिए । यदि विकास का लाभ उन्हें समय रहते मिला होता तो मुझे नहीं लगता कि स्थिति इतनी विकट होती । ''15

इस प्रकार हम देखते हैं कि उपन्यास में लेखिका ने ना केवल मरंग गोड़ा के आदिवासियों के जीवन में होने वाली समस्याओं को उठाया है बल्कि आदित्य श्री जैसे पत्रकार के माध्यम से इस समस्या को दुनिया के सामने लाने का भी प्रयास किया है चाहे वह समस्या आदिवासियों के घरों को तोड़कर डैम बनाने की हो उनकी बेरोजगारी की हो या यूरेनियम के कारण लोगों में फैल रहे गंभीर बीमारी की हो ।आदित्य श्री और सगेन के माध्यम से लेखिका ने झारखंड के आदिवासियों की समस्याओं को सभ्य समाज के सामने रखने का सफल का प्रयास किया है ताकि उन आदिवासियों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ा जा सके उनका जीवन स्तर उठाया जा सके और उनमें शिक्षा का प्रचार प्रसार किया जा सके । यह उपन्यास निश्चित रूप से आदिवासियों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डालने में सक्षम है आज पूरी दुनिया विकास के नकारात्मक प्रभाव को देख रही है । विश्व का कोना कोना महत्वाकांक्षा की भेट चढ़ रहा है जिसका परिणाम गंभीर कोरोना के रूप में हमारे सामने आया है और न जाने क्या-क्या सामने आएगा लेखिका आदिवासियों के जीवन का उदाहरण देते हुए कहती है कि "तुम विकसित लोगों के पास बेशक विकास के उन्नत मॉडल है मगर हमें पूरा यकीन है कि विकास का आदिवासी मॉडल ही इस ध रती को समस्त प्राणियों को बचा सकता है वरना इस धरती पर हिमयुग आने में देर नहीं लगेगी आओ दोस्तों आज इस संकट की घड़ी में हम सब मिलकर विकिरण के ि खलाफ आवाज उठाने का अपनी धरती को बचाने का संकल्प लें ।"16

महुआ मांझी ने अपने उपन्यास मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ के माध्यम से केवल आदिवासियों की समस्या को ही नहीं उठाया है अपितु लगातार बढ़ते प्रदूषण पर भी चिंता की है । उन्होंने वैज्ञानिक रूप से हो रहे विकास और भौतिक संसाधनों में हो रही वृद्धि को लेकर कहीं भी विरोध नहीं किया है किंतु मानव मूल्यों को तहस-नहस करके यदि विकास की बात हम सोचे तो हमारी नैतिकता और मानवता के ऊपर गंभीर प्रश्न चिन्ह खड़ा हो जाता है । आदिवासियों का समाज एक ऐसा समाज है जो सही मायने में मानव समाज है क्योंकि वहां स्वार्थ की दुर्गंध नहीं है धोखेबाजी की दलदल नहीं है यदि वहां है तो प्रेम, समरसता, निश्चलता, भोलापन और परस्पर सहयोग की भावना है । इन्हीं गुणों से आच्छादित प्राणी को मानव की संज्ञा दी जाती है । महुआ मांझी ने इसी विषय की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है कि हमें मानव से दानव नहीं बनना चाहिए मानव ही रहना चाहिए यही आज के युग की सबसे बड़ी चुनौती भी हमारे समक्ष है कि मानव की रक्षा मानव के रूप में कैसे की जाए इस दृष्टि से महुआ मांझी का यह उपन्यास अत्यंत प्रशंसनीय है ।

संदर्भ सूची-

1 हिंदी उपन्यास और आदिवासी विमर्श- संपादक डॉ अमित कुमार भारती ज्ञान प्रकाशन प्रथम संस्करण 2017 पृष्ठ 78

2 मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ- महुआ मांझी राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड 1 बी नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली 110002 प्रथम संस्करण 2012 पृष्ठ 113

3 वही पृष्ठ 116

4 वही पृष्ठ 117

5 वही पृष्ठ 118

6 वही पृष्ठ 122

7 वही पृष्ठ 123

8 वही पृष्ठ 127

9 वही पृष्ठ 156

10 वही पृष्ठ 156

11 वही पृष्ठ 158

12 वही पृष्ठ 162

13 वही पृष्ठ 89

14 वही पृष्ठ 105

15 वही पृष्ठ 105

16 वही पृष्ठ 338

17 वही पृष्ठ 402

- **रेणुका सरोज**

असिस्टेंट प्रोफेसर

आर आर पीजी कॉलेज अमेठी उत्तर प्रदेश

चाटुकारिता

बचपन से सुना देखा और जाना है चाटुकारिता भी एक कला है किसी का स्वभाव, किसी की आदत तो किसी की जरूरत , किसी की मजबूरी।

स्कूल , कॉलेज में बच्चे अध्यापकों व मेधावी छात्रों की चाटुकारिता व बढ़ाई करते नहीं देखते ताकि उनका ध्यान आकर्षित कर सकें अपनी ओर साथ ही जरूरत के समय बेझिझक मदद ले सकें। ये सिलसिला यहीं कहाँ थमता है ऑफिस, फैक्टरी, दुकान या जिसकी काम की जो भी जगह हो चाटुकारिता जरूरी रहती है ताकि बहस , मालिक उन पर अपनी दया दृष्टि रखें बोनस, तनख्वाह में बढ़ोतरी और समय समय पर छुट्टी देने में एक तरह से ये सीढ़ी दर सीढ़ी चलता रहता है एक से दूसरे व्यक्ति तक

अब दुकानदार भी तो लुभा लुभा कर अपना सामान ग्राहकों को बेचता है
उसी तरह चाटुकारिता भी तो एक गुण है जो किसी किसी में ही विद्यमान होता है
मजदूर अपनी रोजी रोटी के लिए मालिक की
गरीब अपनी गरीबी से लड़ने को साहूकार की
छात्र अपने गुरु की
कर्मचारी अपने बहस की
नेता जनता के वोट की
छोटा नेता बड़े नेता की
बड़ा नेता उससे बड़े नेता की

इस तरह चाटुकारिता एक हुनर ही नहीं जरूरत बन दिखाई पड़ती है और रिश्ते नाते , दोस्ती आदि भी इस से अछूती नहीं या यूं कहें की चाटुकारिता की कला तो विरासत में मिली है लोगों को राजा, महाराजाओं के जमाने से जिसका आज भी उतना ही बोलबाला है की किस्से, कहानियों में चाटुकारिता बस छलावा, दुःख, तकलीफ या हद से ज्यादा हो तो किसी बुरी बीमारी से कम भी नहीं इसलिए समझदारी से चलो तो दामन बचा सकते हैं चाटुकारिता का मुखोटा पहने लोगों से और खुद को ठेस लगने से।।

- **मीनाक्षी सुकुमारन**

नोएडा

जापान में महिलाओं की स्थिति

अधिक महिलाओं को जन्म लेने की खुशी है

1950 में सर्वेक्षण में शामिल सभी महिलाओं में से केवल 16.4 % ने कहा कि, अगर उन्हें फिर से जन्म लेने का मौका मिला, तो वे एक लड़की के रूप में पुनर्जन्म लेना पसंद करेंगी। लेकिन 1987 में, प्रतिशत बढ़कर आधे से अधिक 53.7% हो गया था। संयोग से, उसी वर्ष, 1987 में, सभी पुरुष उत्तरदाताओं में से 81.8% ने कहा कि वे एक लड़के के रूप में पुनर्जन्म लेना पसंद करेंगे।

जापानी महिलाओं की स्थिति में धीरे- धीरे परिवार, कार्यस्थल और समाज में उन्हें जिस तरह से देखा जाता है, में सुधार हो रहा है। हालाँकि, कार्यस्थल में उनकी स्थिति और समाज में उन्हें जिस तरह से देखा जाता है, वह परिवार की तुलना में अधिक धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है।

जीवन चक्र

लंबे समय तक जीवित रहना और कम बच्चे पैदा करना

1947 में, महिलाओं की औसत जीवन प्रत्याशा 53.96 वर्ष थी, जबकि पुरुषों की औसत जीवनप्रत्याशा 50-06 वर्ष थी। 1994 तक औसत जीवन प्रत्याशा महिलाओं के लिए 82.98 वर्ष और पुरुषों के लिए 76.57 हो गई थी। इस प्रकार, इस अवधि के दौरान, महिलाओं और पुरुषों के लिए औसत जीवन प्रत्याशाओं के बीच का अंतर 3.90 से बढ़कर 6.41 वर्ष हो गया।

जापान की जन्मदर घट रही है। 1955-1964 के दशक तक और इसमें शामिल होने के दौरान, यह जोड़ों के बच्चे पैदा करने की बढ़ती मितव्ययिता के कारण था, जबकि हाल के वर्षों में यह औसत आयुमें वृद्धि के कारण है कि महिलाएं अपने पहले बच्चे को जन्म देती हैं। 1975 के बाद से, २० के दशक में महिलाओं में जन्म दर में काफी गिरावट आई है, और इस गिरावट की भरपाई अभी तक महिलाओं में २६ के दशक में जन्म दर में वृद्धि से नहीं हुई है।

बच्चों के घर छोड़ने के बाद लंबे समय तक एक साथ जीवित रहने वाले जोड़े

1950, 1975 और 1994 में शादी करने वाली महिलाओं की तीन पीढ़ियों के लिए जीवन चक्रमहडल के माध्यम से प्राप्त अनुमानों से पता चलता है कि महिलाओं से पहली पीढ़ी में औसतन 4.0 साल और दूसरी और तीसरी पीढ़ी दोनों में 8-1 साल अकेले रहने की उम्मीद की जा सकती है। अपनेपति की मृत्यु के बादय इन महिलाओं से अपने बच्चों के क्रमशः 3.9, 11.9 और 15.9 वर्ष में घर छोड़ने के बाद केवल अपने पति के साथ रहने की उम्मीद की जा सकती है, जो समय के साथ काफी वृद्धि दर्शाती है।

विवाह के संबंध में पसंद की अधिक स्वतंत्रता

लोग बाद की उम्र में शादी कर रहे हैं और, पिछले कुछ वर्षों में, जिस उम्र में लोग पहली बार शादी करते हैं, वह बहुत भिन्न होता है। इससे पता चलता है कि शादी करने के लिए "उचित" उम्र का पारंपरिक दृष्टिकोण गायब हो रहा है। इसके अलावा, अविवाहित लोगों का प्रतिशत बढ़ रहा है: लगभग 40% महिलाओं ने अपने २० के उत्तरार्ध में, और लगभग ३० के दशक के पहले भाग में लगभग 30 % पुरुषों ने कभी शादी नहीं की है। यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि 30 वर्ष की आयु में महिलाओं के प्रतिशत में तेजी से वृद्धि हुई है और 30 वर्ष और उससे अधिक उम्र के पुरुषों के प्रतिशत में तेजी से वृद्धि हुई है, जिन्होंने कभी शादी नहीं की है।

"लव मैच" भी बढ़ रहा है, और जोड़े शादी से पहले एक-दूसरे को जानने में अधिक समय व्यतीत करते हैं। उन जोड़ों की संख्या में भी वृद्धि हुई है जहां पत्नी पति से बड़ी है, जहां उनकी उम्र समान है, या जहां एक पति या पत्नी विदेशी है। महिलाओं के लिए पुनर्विवाह दर, जो पहले काफी कम थी, अब इस हदतक बढ़ रही है कि अब यह पुरुषों के करीब है।

बढ़ती तलाक दर

जापान में तलाक की दर लगभग 1965 से बढ़ रही है। 1994 में, प्रति 1000 लोगों पर यह दर 1.57 थी, जो अब तक का सबसे अधिक दर्ज किया गया। लंबी अवधि में देखा जाए तो, सभी आयु समूहों के लिए तलाक की दर आम तौर पर बढ़ रही है।

■■

रमा शर्मा
संरक्षक एवं मुख्य संपादक
हिंदी की गूंज पत्रिका
टोक्यो, जापान

इस अंक के चित्रकार

अंतर्राष्ट्रीय ई–पत्रिका हिंदी की गूँज के कवर पृष्ट पर सुशोभित पेंटिंग आदरणीया डॉ स्नेह सुधा नवल जी द्वारा बनाया गया है । डॉ स्नेह सुधा नवल बालपन से ही चित्रकला से जुडी हुई हैं । शौकिया चित्रकार के रूप में उनका जाना–माना नाम है । डॉ स्नेह सुधा नवल के चित्रों की एकल प्रदर्शनियाँ ,जागृति मंच ,दौलतराम कॉलेज,साक्षरा में आयोजित हुई और सहयोगी चित्रकार के रूप में रोटरी क्लब,दिल्ली अपटाउन ,साहित्य कला परिषद् ,ताशकंद में मेरीन होटल ,अमेरिका के होटल हरंडन ,हिंदी अकादमी दिल्ली में आयोजित हुई । डॉ स्नेह सुधा नवल एक प्रतिष्ठित कवयित्री भी हैं ।कला और साहित्य जगत के कई पुरस्कार उन्हें प्राप्त हुए हैं जिनमे अलाइंस क्लब , रोटरी क्लब ,पूर्व राष्ट्रपति जैल सिंह द्वारा कबीर सेवा सम्मान ,कादम्बिनी क्लब गाडवारा ,मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी,विदर्भ नागपुर और विश्व हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा प्रदत्त कला भारती व साहित्य भारती भी सम्मिलित है । 43 वर्ष दिल्ली विश्वविद्यालय के दौलतराम कॉलेज में प्राध्यापिका और कार्य प्रिंसिपल रहने के बाद अब अवकाश प्राप्त कर कला और साहित्य सेवा में संलग्न हैं ।

■■

डॉ. कन्हैया त्रिपाठी की पाँच कविताएँ

माँ सदैव साथ है

शब्द-शब्द रह गए,
हमसे वह जो कह गई।
'मंत्र से'वे शब्द थे,
विचार लो तो जिंदगी।

माँ का हर शब्द अब
जीवन की जीत है,
रोशनी प्रदीप्ति सी
नव्य संगीत है।

आत्म का विस्तार करती
विम्ब गढ़ती, है आत्मीय सी
कर्तृतव्य का एहसास देती
माँ है, वह साथ है।

माँ का ब्रह्माण्ड सा दिल

कहाँ है दिल की धुन
क्या आप जानते हैं?
मैं जानता था कि-
माँ के पास दिल की धुन है।
धुन, माँ की तरह
जिसमें सात सुरों का संगम था
और सुंदर भविष्य के लिए,
सात रंगों का कलर फुल स्वप्न।

बच्चे के दर्द
सिर्फ मां ही सोच सकती है,
बच्चे का भविष्य,और
भविष्य में शांति पूर्ण भविष्य
क्योंकि माँ के पास ही है-
ब्रह्मांड का एक बड़ा दिल।

माँ जीवन लय है

जन्म के समय मैं
नहीं जानता था-माँ
वह सब जानती थी, प्यार
भी वही कर रही थी हमसे
उसके ही मधुर स्पंदन ने
हमें माँ का कराया एहसास।

माँ ने हमें जीवन दिया
अपनी उंगलियों से सिखाया चलना
जीवन का पाठ पढ़ाया
समाज और सरोकारों से जोड़ा माँ ने
एहसास अनंत थे, उसके भीतर
पिता वट वृक्ष की तरह थे, तो
माँ गंगा सी शीतल, करुणा की प्रतिमूर्ति।

माँ की अच्छाइयां, मनुष्य को
बनाती है मनुष्य, करुणा-दया-प्रेम
और जुड़ाव तो माँ ही सिखाती है
माँ, इसलिए ईश्वर की बनाई
दुनिया की सर्वोत्तम कृति है
संस्कार, और जीवन की लय है
माँ, माँ है।

माँ का न होना

संसार की सारी खुशियाँ
एक तरफ, माँ
कीउ पस्थिति ही सब कुछ
सब खुशियों के बराबर,
माँ के न होने पर ही
एहसास होत ाहै
क्या थी माँ
माँ के न होने पर ही
एहसास होता है
क्या है रिक्त-स्थान।

वह जीना चाहती थी
अपना भरपूर जीवन
वह और भी,
बहुत कुछ सिखा जाती
मिलकर रहने की रीत,
जीवन के संगीत
गरिमा, प्रेम और
त्याग की परिभाषाएं,
अब समझ आता है,
सबसे पीड़ादायी है
माँ का न होना।

बच्चे नहीं कह पाते अपना दुःख

पिताजी की डांट, और छोटे-बड़ों की
अच्छी-बुरी बातें
माँ के न होने पर
बच्चे नहीं कह पाते अपना दुःख।

माँ के साथ बीते जीवन
हर बच्चों के प्रसन्नता की हेतु है
माँ है तो कुछ भी हो जाए अनबन
सच मानो माँ सबके बीच की सेतु है

(डॉ. कन्हैया त्रिपाठी भारत गणराज्य के महामहिम राष्ट्रपति जी के ओएसडी रह चुके हैं, डॉ. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर मे बतौर सहायक प्रोफेसर/निदेशक हैं और अहिंसक सभ्यता के पैरोकार हैं।)

उपासना सियाग

माँ की बात

स्कूल से निकलते हुए पारुल सोच रही थी कि घर पहुँचते-पहुँचते अँधेरा हो जायेगा। उसके स्कूल में आज से एक्स्ट्रा क्लास थी। वह अपने गांव के पास के कस्बेनुमा शहर के स्कूल में बारहवीं कक्षा की छात्रा है। शिक्षकों पर दिवाली से पहले कोर्स समाप्त करने का दवाब होता है। उसके बाद प्री -बोर्ड की परीक्षा की तैयारी भी तो होती है। इसलिए स्कूल की छुट्टी के बाद दो घंटे एक्स्ट्रा क्लास लेना तय हुआ है।

" यह तो रोज की बात हो जाएगी !" वह बुदबुदाई।

गाँव पहुँचने से पहले थोड़ा सा जंगल और फिर खेतों से हो कर गुजरना पड़ता है। रोज तो चार बजे तक घर लौट आती है तो खेतों में काम करने वाले होते हैं , साथ में और सहेलियां भी साथ होती है । ऐसे में उसका रास्ता भी अच्छे से गुजर जाता है। कोई डर की बात नहीं होती है।

शाम के छह बजने वाले थे। राम-राम करके जंगल तो पार कर लिया। अँधेरा बढ़ने लगा था। तभी उसके आगे से कोई जानवर भागते हुए निकल गया। कोई जंगली कुत्ता था या फिर कोई भेड़िया था। वह जोर से चिल्ला पड़ी। साईकल से गिरते-गिरते बची !

" हे कृष्ण भगवान , रक्षा करो ...." मन ही मन भगवान को पुकारा।

" अरे कौन है वहाँ ?" उसकी चिल्लाहट सुन कर एक व्यक्ति चिल्लाया ,दौड़ते हुए उसके पास आया।

अजनबी को देख कर वह और भी डर गई। वह खेत में काम करने वाला हट्टा -कट्टा मजदूर दिखने वाला व्यक्ति था। वह चुप साईकल ले कर चलने लगी।

"यह हमारे गाँव का तो नहीं है !" दिमाग में एक साथ बहुत सारे विचार दौड़ गए , कुछ सोच कर सहम गई।

हाँ तो छोरी ! तू कौन है .. कहाँ से आई है ... किधर जा रही है ?"

" वो भाई जी , मैं स्कूल से आ रही हूँ .... " सारी बात बता दी।

" अच्छा तो यह बात है ! फिर तू ऐसा कर अपने बापू या भाई को बोल दे , जो रोज शाम को तुझे यहाँ लेने आ जाये ! यह जंगल है, यहाँ चार पैरों वाले भेड़ियों से ज्यादा दो पैर वाले भेड़िये भी खतरनाक हो सकते हैं ! "

" मेरे बापू और भाई नहीं है , सिर्फ माँ ही है !"

" अरे , ओह्हो !" वह कुछ बोल नहीं पाया। उसके साथ ही चलता रहा। थोड़ी देर में गाँव की सीमा आ गई।

माँ दरवाजे पर ही खड़ी थी। पारुल को आते देख कर साँस में साँस आई। पारुल के देर से आने का कारण माँ को तो मालूम ही था।

रात को सोते समय सारे दिन के विवरण के साथ उसने अजनबी के बारे में भी बताया। माँ सोच में पड़ गई। बोली , उसकी बात तो सही है। आज कल किसका भरोसा है ! मैं तो मेरी माँ की बताई एक ही बात जानती हूँ और गाँठ भी बाँध रखी है कि अपनी सावधानी को कोई नहीं भेद सकता !"

" हाँ माँ ! मैंने भी यही बात गाँठ बांध ली है .... " खिलखिला कर हंस पड़ी।

" अब तो श्री कृष्ण भगवान का ही सहारा है ... हे प्रभु रक्षा करना इस बिन बाप की बेटी की, अब तू ही भाई है इसका ...." प्रार्थना करते हुए गला भर आया , दो बून्द आँसू ढलक पड़े आँखों के कोनों से।

" हाँ माँ , उसका ही तो सहारा है .... चलो अब सो जाओ , मुझे चार बजे उठा देना ...." सहसा वातावरण सुगंधित धूप -इत्र की महक से महक उठा। माँ-बेटी नींद के आगोश में समा गई।

सुबह चार बजे पारुल को जगा कर माँ भी अपने काम में लग गई। दो गाय और एक भैंस थी। जिनके दूध से माँ बेटी का गुजर बसर होता था। थोड़ी जमीन भी थी जो कि उसके ताऊ जी सँभालते थे। उसकी कमाई रो पीट कर ही पूरी मिलती। कभी माँ शिकायत करती तो घुड़क दिया जाता , पारुल की शादी भी तो वही करेंगे !

इस बात पर वह दब जाती कि जेठ से बिगाड़ करेगी तो बेटी को ब्याहने में कौन सहायता करेगा। पारुल माँ को समझाती थी। वह पढ़-लिख कर बहुत काबिल बनेगी। शादी की जरूरत कोई ही नहीं है। माँ उसकी बातों से परेशान हो जाती और समझाती कि शादी समाज का नियम है और उसकी जिम्मेदारी भी। फिर लोग क्या कहेंगे ! बाप है नहीं , बेटी को बिगाड़ दिया ! पारुल भी नाराज हो जाती। कहती कि हमारी परेशानी और ताऊजी की ना-इन्साफी तो लोगों को दिखती नहीं ?

माँ पारुल के लिए सद्बुद्धि मांगती हुयी अपने काम में जुट जाती।

दरवाजे के पास साईकिल की घंटियों की आवाज सुनते ही वह बस्ता साईकिल पर टाँग कर अन्य सहेलियों के साथ हो ली।

" कल शाम को मुझे बहुत देर हो गई थी , अँधेरा घिर आया था ...." पारुल ने कहा।

" हाँ, हम्म्म ...., क्या किया जा सकता है... हम भी तो बिना काम नहीं रुक सकते ! " एक लड़की ने कहा।

" तू सर से क्लास जल्दी खत्म कर देने के लिए नहीं कह सकती क्या , गाँव जाना होता है ! "

" कहा था ... लेकिन ..."

" कोई बात नहीं पारुल बीस दिन की ही तो बात है , फिर तो हम सब साथ ही आएँगी।

खेत और जंगल पार करने में और उसके बाद स्कूल की दूरी छह किलोमीटर थी। सहेलियों के समूह में साथ आने में कोई डर भी नहीं था। बीस दिन तो यूँ ही निकल जायेंगे।

शाम को वही समय हो गया। डरते-सहमते जंगल पार किया ही था कि सामने वही व्यक्ति खेत में काम करते दिखा तो उसे हौसला मिला। संयत हो कर साईकिल चला ने लगी।

" ए छोरी ! आज तू फेर देर से आई है ? "

" हाँ , भाई जी ... प्रणाम "

"प्रणाम बाई ! सुबह तो और छोरियां भी थी तेरे साथ , कहाँ गई वो सारी ?"

" मेरे पास विज्ञान विषय है इसलिये हमारे अध्यापक जी अलग से क्लास लगाते हैं ... स्कूल की छुट्टी पहले हो जाती है तो मेरे लिये दो घंटे के लिए कौन रुके...मुझे तो बीस दिन तक अकेले ही आना होगा ! "

" अच्छा ! चल कोई ना ! मैं हूँ ना यहाँ ... मैं तुझे गाँव तक छोड़

आया करूँगा। ”
पारुल ने गर्दन हिला कर हामी भरी।
माँ हमेशा की तरह दरवाजे पर खड़ी मिली। उसने माँ को अजनबी के बारे में बताया। माँ ने सावधान किया। अनजान लोगों से दूर ही रहना चाहिए।
अगले दिन फिर वही दिनचर्या रही। शाम को जंगल पार करते ही वह अजनबी मिल गया।
“ प्रणाम भाई जी ! ” माँ के सावधान करने के बावजूद उसने कह ही दिया।
“ प्रणाम बाई ! आज का दिन कैसा रहा। ”
“ अच्छा रहा ...”
“ भाई जी आपका नाम क्या है ? ”
“ मेरा नाम है चतुर्भुज ... ”
“ आप हमारे गाँव के तो नहीं लगते ....” अजनबी से खुलना तो नहीं चाह रही थी फिर भी पूछ बैठी।
“ मैं बाहर गाँव का हूँ , ब्रह्मदत्त चौधरी ने खेतों की चौकीदारी के लिए मुझे रखा है।
वह साईकिल चलाती अपने गाँव की सीमा पर पहुंची तो वह भी मुड़ गया। पारुल ने अचानक साईकिल रोक कर पीछे मुड़ कर देखा तो वह जा रहा था। वातावरण सुगंधित धूप से महक रहा था। वह चकित थी कि यह खुशबू कहाँ से आ रही है। फिर सोचा कि पास ही मन्दिर है। संध्या वंदन का समय था तो हो सकता है ये महक वहीं से आ रही थी।
आज माँ दरवाजे पर नहीं थी। वह संध्या वंदन करके अपने लड्डू गोपाल को भोग लगा रही थी। उसने भी सर झुका कर प्रणाम किया फिर माँ को सारी दिनचर्या बतायी और उस अजनबी के बारे में भी बताया।
“ माँ ! वह आदमी ब्रह्मदत्त जमींदार के खेतों की चौकीदारी के लिए रखा है ! ”
“ अच्छा ...”
“ और माँ ... मैंने उसका नाम पूछा तो मुझे हँसी आते -आते रह गई ! ”
“ क्यों ? ”
“ चतुर्भुज ... हाहाहा , यह भी क्या नाम है ! जिसके चार भुजा हो , लेकिन उसके तो दो ही हैं ..... ”
माँ ने भी हँसी में साथ दिया और बोली , “ यह तो विष्णु भगवान का नाम है बिटिया ! जिसके चार भुजा है , सर पर मुकुट है हाथों में सुदर्शन चक्र है। यह तो बहुत सार्थक नाम है। और फिर ऐसे किसी पर हँसा नहीं करते ! ”
माँ ने समझाते हुए फिर चेताया कि यूँ अजनबी से घुलना मिलना ठीक नहीं है।
“ लेकिन माँ , वह मुझे अजनबी तो नहीं लगता। ”
माँ ने झट से उसकी आँखों में झाँका कि कहीं ...! एक पल के लिए एक सोच उभरी और मन में चिंता से भर उठी। उस रात माँ चिंता के मारे कई देर जागती रही। सुबह जल्दी उठ भी गई। सोती हुयी बेटी के सर पर हाथ फिरा कर जगाया। बेटी का मुस्कुराता चेहरा उसे सदैव ऊर्जा देता था।
पारुल स्कूल चली गई। दरवाजा बंद करने को हुयी तो सामने से पारुल के ताऊ जी -ताईजी आते दिखे। जेठ को देख कर ओढ़नी से पर्दा कर लिया।
जेठानी ने आते ही तमक कर कहा , “ सुलोचना .....! ये क्या सुन रहे हैं , छोरी शाम को देर से आती है ? अकेली आती है ? ”
“ हाँ दीदी .... उसकी अलग से क्लास लगती है तो दो घंटे ज्यादा रुकना पड़ता है। बाकी लड़कियाँ दो घण्टे किसलिए रुकेगी ! ”
“ ऐसी भी क्या पढाई है ! कोई ऊंच-नीच हो गई तो हमसे आ कर मत कहना ! ” जेठ जी तल्खी से बोले।
“ दीदी ... फिर क्या करूँ मैं ? ”
“ पढ़ना जरुरी है क्या ! घर का काम सिखाओ , दो-तीन साल में ब्याह कर देंगे ....”
“ उसका बहुत मन है पढ़-लिख कर कुछ बनने का ....”
“ अरे, ऊंदरे का जन्मा बिल ही खोदेगा ...., उसके खानदान में कोई मर्द तो पढ़ा नहीं ... ये पढ़ेगी हुंह्ह ! ”
“ मेरी मानती कहाँ है वह ...., दीदी आपसे मेरी एक विनती है .... आप शाम को राजबीर को भेज दिया करो , बहन को ले आया करेगा.... ”
“अब राजबीर को समय कहाँ है ! वह भी शाम को खेतों से आ कर आराम करता है , सारा दिन का थका -हारा होता है ... अब बहन को लेने के लिए रुक जायेगा तो आराम कब करेगा ! दस दिन निकल गए तो अब भी निकल जायेंगे ! ” यह ताऊजी की आवाज थी।
ताऊ जी और ताई जी अपनी जिम्मेदारी निभा कर चले गए। चिन्तित और आहत मन माँ ने बेटी के लिए अपने लड्डू गोपाल के आगे प्रार्थना की।

उस दिन शाम को पारुल ने जंगल पार किया तो चतुर्भुज भाई जी को यहाँ -वहाँ देखने लगी। आज तो वह नजर ही नहीं आ रहे थे। एक बार तो ठिठकी , लेकिन यहाँ इंतजार का मतलब था और देर करना , अँधेरा तो घिरने ही लगा था। वह कृष्ण भगवान को मन ही मन पुकारती चलने लगी। अपनी साईकिल की गति बढ़ा दी। गाँव की सीमा पर पहुँचते ही सुगंधित धूप की महक जैसे उस से लिपट गई। सारा वातावरण महक उठा। वह चकित -सी सोचती हुई चलती रही कि पास ही मंदिर से ये खुशबु आ रही होगी ...

अगले दिन भी चतुर्भुज नहीं मिला। पारुल पहले दिन से कुछ कम भयभीत हुयी।अलबत्ता एक सुगन्धित महक उसके साथ चलती रही थी।

उसके अगले दिन उसने सोचा कि वह आज चतुर्भुज के सहारे का इंतजार नहीं करेगी। वह सोच रही थी। वह कब तक किसी का सहारा देखेगी। वह अकेली है तो अकेली ही रहेगी। माँ का सहारा भी उसी ने तो बनना है।
“ अरे बाई ! ” पारुल ने मुड़ कर देखा तो चतुर्भुज भाई जी पुकार रहे थे। देख कर खिल गई।
“ राम-राम भाई जी .... ! आप दो-तीन दिन से कहाँ थे ? ”
“ क्यों ,तू डर गई थी ? ”
“ हाँ जी भाई जी ... ” न कहते हुए भी सच मुँह से निकल ही गया।
“ मतलब कि तुझे सहारे की आदत पड़ गई ! ”
“ यह तो सच है .. ” पारूल ने मन में कहा ।
“ अच्छा बाई .,तेरे बापू को क्या हुआ था ? कितने बरस हो गए ... ”
“ पता नहीं ! मैं तो बहुत छोटी थी ... ”

पारुल क्या बताती कि उसके बापू ने आत्महत्या कर ली थी। अकेली खेती से काम चलता नहीं तो उसने सोचा था एक डेयरी

बनाने की। दूध-घी बेच कर जीवन की गति सुधारने की सोची थी परन्तु पशुओं को कोई ऐसा रोग लगा कि वे एक-एक करके मरते गए। बैंक का कर्जा बहुत हो गया था। आत्महत्या के अलावा कोई चारा नजर नहीं आया।

बैंक से जमीन पर कर्जा लिया था। ताऊ जी ने कर्जा चुकाने की एवज में जमीन पर कब्जा कर लिया। माँ-बेटी के पास कोई और चारा भी नहीं था।

पारुल को खामोश देख कर चतुर्भुज बोला, " तेरे बापू ने आत्महत्या की थी ? "

उसके साईकिल पर ब्रेक लग गए।

" आपको कैसे पता ? "

" मैं यहीं गाँव में रहता हूँ , मुझे सब मालूम है ! "

" आप तो बाहर गाँव के हो न ! "

" अब तो यहीं हूँ न ! " कह कर हँस पड़ा वह।

अब गाँव की सीमा आ गई थी। दोनों अपनी -अपनी राह मुड़ गए।

घर पहुँच कर वही दिनचर्या थी। रात को हल्की ठण्ड होने लग गई थी। माँ ने लड्डू गोपाल को भी छोटा सा नरम कम्बल ओढ़ा दिया। आले नुमा मंदिर के आगे पर्दा लगा कर सर नवा दिया।

" माँ ! ये तो मूर्ति है ,इनको ठण्ड लगती है क्या ? "

" अरी बिटिया ... हाँ लगती ही है ...," माँ कहते-कहते रुक गई।

" क्या हुआ माँ ! रुक क्यों गई ...,"

" कुछ नहीं बिटिया , तुम नहीं समझोगी ... नयी पीढ़ी हो और ऊपर से तुम्हारे पास विज्ञान का विषय है... सौ तर्क-वितर्क करोगी। जो शाश्वत सत्य है वह नहीं बदलता ! अब सो जाओ ... ! "

अगले दिन सुबह से शाम तक व्यस्त रहने के बाद पारुल जब स्कूल से निकली और जंगल के पास पहुँची ही थी कि पीछे से जानी -पहचानी आवाज ने ठिठका दिया। साईकिल के पैडल पर पैर रोक दिया। मुड़ कर देखा तो चतुर्भुज भाई जी आ रहे थे। साईकिल से उतर गई।

" भाई जी आप ! प्रणाम ....आप यहाँ ?"

" जीती रह बाई , आज मुझे बाजार में कोई काम था। "

" बाई .. कल मैंने सोचा कि तू तो बहुत डरपोक है ! तेरी माँ ने तुझे डरना ही सिखाया है क्या ? "

पारुल चुप रही। क्या बोलती ! कह तो सही ही रहे हैं।

" नहीं भाई जी, मेरी माँ मुझे अकेला नहीं समझती , वह सोचती है कि मेरे साथ उनके लड्डू-गोपाल है ! "

" हा हा ... बाई ! तेरी माँ तो बहुत चतुर है !

" तू भी ऐसा ही मानती है क्या ... तेरी माँ का विश्वास ठीक है ?"

"पता नहीं ! माँ कहती है कि ईश्वर एक शक्ति है जो हमारे मनों में हिम्मत की तरह रहता है और वही सही राह दिखलाता है । तो कभी कहानियों में भगवान के साक्षात प्रकट होने की बात करती है कि जब भी धर्म की हानि होती है , तब ईश्वर धरती पर आते हैं ... तो भाई जी मैं थोड़ा अलग सोचती हूँ ..."

" जैसे ? "

" माँ कहती है , धर्म की हानि होने पर ईश्वर आते हैं तो फिर धर्म की हानि होती ही क्यों है ... अगर उसका वजूद है तो सब ठीक क्यों नहीं रहता ! दूसरी बात यह कि उन्होनें द्रोपदी का चीर क्यों बढाया ! वहाँ तो बहुत सारे हथियार धारी थे ... उसे क्यों नहीं प्रेरित किया .. ! अगर वह साहस दिखाती तो आज किसी नारी को किसी कृष्ण की सहायता की आस नहीं रहती ..."

" बाई तेरी बात तो ठीक है ! यह तो पुराणों की बातें हैं .. "

" और हम पुरानी बातों को ले कर ही जीते आये हैं .... "

" फिर तू क्या सोचती है ? "

वह चुप सोचती रही कुछ बोल न सकी , एक बार चतुर्भुज की और देखा और चुप चलती रही। बोलने को कुछ था भी नहीं।

" वैसे भाई जी , आप क्या सोचते हो ? "

" मैं तो कुछ भी ना सोचूँ ! मुझे क्या है ! "

" यही तो बात है भाई जी ! कि मुझे क्या या मेरा क्या जाता है ! हम सिर्फ अपने बारे में ही तो सोचते हैं ... हम अपनी लड़की को सुरक्षा देंगे और दूसरे की लड़की को मरने देंगे ...!"

" छोरी तू अभी छोटी है , तुझे क्या समझाऊँ ..."

" मैं समझती तो सब हूँ ... इतनी भी छोटी नहीं ,आप कोशिश तो करो ..."

" फेर कभी समझाऊंगा , फेर भी एक बात कहूंगा कि लड़कियों में आत्मबल होना चाहिए !"

" आत्मबल ! " पैर थम गए पारुल के।

"जा अब तेरा गाँव आ गया..."

घर आ कर भी वह अपने उलझी -सी रही। माँ ने पूछा भी। फिर भी जवाब नहीं दिया। अनमनी -सी रही। अनमनी होने की बात भी नहीं थी फिर भी वह सोच रही थी कि यह आत्मबल लड़कियों में कैसे होना चाहिए। जबकि किसी भी लड़की को बचपन से सिखाया जाता है कि वह देह है , सिर्फ पारदर्शी देह ही है , उस से परे वह कुछ भी नहीं है ... वह लड़की है ... नाजुक है , परी है ,किसी और दुनिया से आई हुयी ! फिर वह इस दुनिया में कैसे समाहित रहे।

" माँ ..."

" हूँ ..."

" लड़कियों में आत्मबल क्यों होना चाहिए ? "

" ....."

" सुन न माँ ! ये हूँ से क्या पता चलेगा ! "

" तुझे ये किसने कहा कि आत्मबल नहीं होता हमारे में .... अगर नहीं होता तो आज मैं जिन्दा रह कर तुझे पाल नहीं रही होती। भाग्य और दुनिया के थपेड़े सहन नहीं कर पाती... यह तो ..यह तो ...."

कहते हुए माँ का गला भर आया।

" यह तो , क्या माँ ..."

" यह तो ईश्वर ने नारी को शरीर ही ऐसा दिया है कि वह न चाहे तो भी असुरक्षित हो जाती है। "

" अब शरीर तो शरीर है , इसका क्या किया जा सकता है माँ ? "

" खुद का बचाव ही सबसे बड़ी बात है बिटिया , ऐसा काम ही क्यों करे या ऐसी जगह अकेली जाये ही क्यों , कि संकट में फंस जाये ! "

" तो माँ कभी जाना ही पड़ जाये तो ? अब मुझे ही लो , कितने दिन से अकेली आ रही हूँ ....यह तो चतर्भुज भाई जी मिल गए , अगर न मिलते तो अकेली ही जाती न ? "

" मुझे तो कृष्ण भगवान पर भरोसा है , हो न हो ये चतुर्भुज को

उन्होंने ही भेजा होगा ..."
" माँ ..." ठुनक पड़ी पारुल।
" अब ईश्वर अवतार कहाँ लेता है माँ ? " पारुल के शब्दों में कौतुहल कम व्यंग्य अधिक था। माँ चुप रही। कुछ सोचती रही।
" बिटिया ये जो तुम आत्मबल कहती हो न , वही ईश्वर बन कर आत्मा में ही रहता है। और हमनें उसे ही भुला रखा है ...."
" तुमने एक ही बात की रट लगा रखी है माँ , ईश्वर की ! "
" मुझे शब्द नहीं मिल रहे कि तुझे कैसे समझाऊँ ...."
" समझाने की जरूरत ही नहीं माँ , सब समझ है मुझे , हमारे समाज में हमें बचपन में दो इकाइयों में पाला जाता है। लड़की और लड़का..., तू लड़की है , ऐसे रहेगी , तू लड़का है ऐसे रहेगा। दोनों की असमान परवरिश ही सबसे बड़ी मुसीबत की जड़ है। तू लड़की है , दुपट्टा ओढ़ ! लड़का चाहे अधनंगा ही क्यों ना फिरे ! और भी बहुत है जो भेद करती है लड़के और लड़कियों में...

कभी देखा है माँ , राह चलते हुए कैसे महसूस होता है , घिन आती है ,गंदी नजरों से !

सड़क पर चलती लड़की , हाड़ -माँस की इंसान नहीं लगती बल्कि रसभरा रसगुल्ला लगती है... मौका मिलते ही गपक जाओ नहीं तो छू कर , गन्दी नजरों से ताड़ कर चाशनी तो चख ही लो ..!
" ऐसे में आत्मबल क्या करेगा ....? गन्दी नजरों वाले इंसान की नजरों में झांको या उसको पीटो ! "
" हम कर ही क्या सकते हैं ? "
" तो माँ हम क्यों कुछ नहीं कर सकते ? कब तक ईश्वर को पुकारेंगे या लड़कियों को घरों में बंद रखेंगे ! "
पारुल को आवेशित देख कर माँ चुप रही । विचार तो उसके मन में भी उमड़ रहे थे ।
सोच रही थी कि क्या बताये बेटी को, स्त्री की यही दशा है सदियों से.., वह सिर्फ शरीर है, गोरी है, काली है, क्या उम्र है उसकी, यह भी मायने नहीं रखती है । घर से बाहर ही नहीं वह तो घर में भी सुरक्षित नहीं है ।
" लेकिन माँ...! "
पारुल ने पुकारा तो सुलोचना सोच- विचार से बाहर आई ।
" सभी पुरुष ऐसे नहीं होते... अब ताऊ जी हैं, राजबीर भाई जी हैं और भी है परिवार के जो कितना सम्मान करते हैं हमारा ... और हमारे परिवार ही क्यों गाँव में भी तो सभी अपने परिवार की स्त्रियों का सम्मान करते ही है !"
" अरे बिटिया सिर्फ अपने परिवार की ही स्त्रियों का सम्मान करते हैं, बल्कि मैं तो कहूँगी कि एक तरह से जानवरों की तरह हड़का कर रखा जाता है क्योंकि वो जानते हैं अपनी आदिम प्रवृत्ति को..!
जैसा तुमने कहा कि स्त्री , स्त्री न हुई रसगुल्ला हो गई ! जब उन्हें पता कि सभी स्त्रियाँ रसगुल्ले समान है तो वो अपने वाले रसगुल्लों को डब्बे में बंद ही रखना चाहेंगे न...! "
इस बात पर दोनों माँ बेटी खिलखिला कर हँस पड़ी ।
" बात जरा सी है और समझ किसी को भी नहीं आती, जब हम अपनी बहन बेटी की सुरक्षा चाहते हैं तो किसी और की बहन बेटी की क्यों नहीं ? "
बहुत सारी बातें थी, सवाल थे दोनों के मनों में... जवाब सिर्फ एक ही था कि खुद की सुरक्षा खुद करो, स्वयं को मजबूत बनाओ, यहाँ शारीरिक बल की बात नहीं थी, यहाँ बात थी आत्मबल की, जो हर स्त्री में होना ही चाहिए !

अगली सुबह भी रोज की तरह ही थी । मौसम में थोड़ी ठंड बढ़ने लगी थी । पारुल के मन में कुछ चल रहा था । माँ को बताये या न बताये, उधेड़बुन - सी थी । कई दिन से उसे लग रहा था कि उसका पीछा किया जा रहा है । हो सकता है उसका वहम हो... लेकिन बार- बार मोटर साइकिल से उसके रास्ते में चक्कर काटना, उसको मुड़ मुड़ कर देखना तो वहम नहीं हो सकता है ।
माँ को बताएगी तो वह उसे जाने नहीं देगी । दो -चार दिन की ही तो बात है, फिर तो और सहेलियाँ भी साथ होंगी ही.. सोच लिया कि माँ को नहीं बताएगी ... डरने वाली क्या बात है, आजकल चतुर्भुज भाई जी नहीं आते तो क्या हुआ, कुछ और लोग तो खेतों में होते ही हैं ।
" क्या बात है बिटिया, थोड़ा परेशान दिख रही हो ? माँ ने भांप लिया ।
" नहीं तो ! " अचकचा गई पारुल ।
" फिर चुप क्यों हो, कोई बात है तो बता बेटा, घर में, अपनों से कुछ छुपाया नहीं करते... अगर छुपाया ही जाए तो फिर कैसा घर, कैसे अपने..? "
पारुल हँस पड़ी, " अरे माँ, मैं रात की बातों पर विचार कर रही थी...! "
माँ के गले लग अपनी सहेलियों के साथ चल पड़ी ।
और माँ ! हमेशा की तरह अपने लड्डु गोपाल के सामने अपनी बेटी की सलामती की दुआ करने लगी ।
शाम को स्कूल से निकली ,कुछ दूर चलने के बाद, उसको वही दो लड़के मोटर साइकिल पर आते हुए नजर आये ।
एक बार तो वह सहम गई । जी कड़ा कर के चेहरे पर सख्ती लिए साईकल चलाती रही । एक लड़का जोर से चिल्लाया तो वह गिरते- गिरते बची...

वह दिन ही जाने कैसा था ! आधे राह पहुंची थी कि वो लड़के फिर से आ रहे थे । उसकी साईकल के आगे ला कर मोटर साइकिल रोक दी ।

पारुल डर गई और साईकल से उतर गई । कुछ बोल नहीं पाई, जबान जैसे तालु के चिपक गई । वह साईकल को एक तरफ मोड़ कर जाने लगी तो एक लड़के ने आगे बढ़ कर रोक लिया । अब तो पारुल के हाथों में पकड़ी साईकल भी छूट कर गिर गई ।

तभी दूसरे लड़के ने उसके दुपट्टे की ओर हाथ बढ़ाया और जोर से कहकहा लगाया... बहुत घटिया और अश्लील शब्दों का प्रयोग भी कर रहे थे । यह समय पारुल के लिए मृत्यु तुल्य था ।

पारुल ने कदम पीछे हटा लिये... तभी उसके मस्तिष्क में एक बात कौन्धी, " आत्मबल "
और वह झट से नीचे झुकी , दोनों हाथों में मिट्टी भर कर उन बदमाशों के मुँह पर फेंक दी ।

अचानक हुए वार से और आँखों में मिट्टी जाने से वे उसे गालियाँ निकालते हुए गिर गए ... पारुल को कुछ और हौसला मिला, उसने बदमाशों के बाल पकड़ कर आपस में सर भिड़ा दिया और पूरी ताकत से वहाँ से भाग निकली !

(शेष भाग ..... अगले अंक में)

रमा शर्मा, जापान

जापान से निकलने वाली पहली हिंदी साहित्यिक पत्रिका 'हिंदी की गूंज' की संरक्षक एवं मुख्य संपादक।

कार्य : हिंदी का प्रचार प्रसार, भारतीय संस्कृति की सेवा और किन्नर समाज के सुधार और उद्धार के लिये विशेष रूप से कार्यरत।

प्रकाशित पुस्तकें : बहते पानी के साथ बहना, दिल की बातें, देहरी पर दीपक प्रकाशित तथा आठ पुस्तकें प्रकाशन प्रक्रिया में।

साझा संकलन : 30 साझा संकलनों में रचनाएं संकलित।

संपादित पुस्तकें : अपनी-अपनी धरती, अपना-अपना आसमान, अपने-अपने सपने।

सम्पर्क :
मोबाइल : +81-8061658299, +91-9289641577
ई-मेल : hindikeegoonj@gmail.com
hindikigoonj.jp@gmail.com

₹ 150.00
ISBN : 978-93-5536-207-0
बोधि जन-संस्करण
आवरण चित्र : प्रिशा

काव्य-संग्रह

मुरझाते फूल • रमा शर्मा

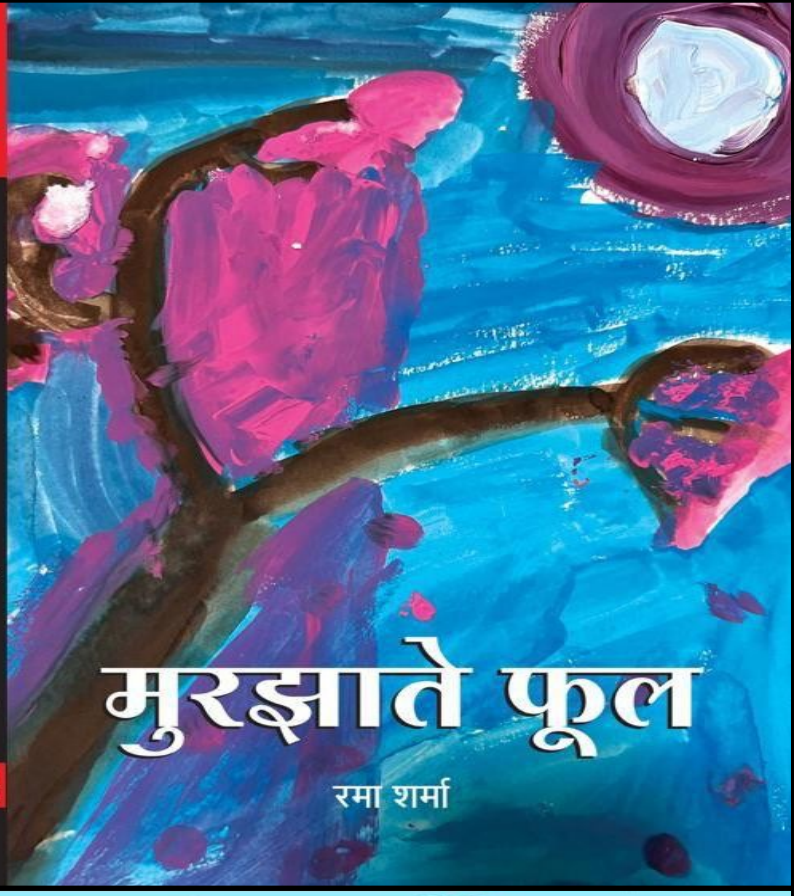

मुरझाते फूल

रमा शर्मा

अंतरराष्ट्रीय पत्रिका

रमा शर्मा, जापान

जापान से निकलने वाली पहली हिंदी साहित्यिक पत्रिका 'हिंदी की गूंज' की संरक्षक एवं मुख्य संपादक।

कार्य : हिंदी का प्रचार प्रसार, भारतीय संस्कृति की सेवा और किन्नर समाज के सुधार और उद्धार के लिये विशेष रूप से कार्यरत।

प्रकाशित पुस्तकें : बहते पानी के साथ बहना, दिल की बातें, देहरी पर दीपक, मुरझाते फूल प्रकाशित तथा आठ पुस्तकें प्रकाशन प्रक्रिया में।

साझा संकलन : 30 साझा संकलनों में रचनाएं संकलित।

संपादित पुस्तकें : अपनी-अपनी धरती, अपना-अपना आसमान, अपने-अपने सपने।

सम्पर्क :
मोबाइल : +81-8061658299, +91-9289641577
ई-मेल : hindikeegoonj@gmail.com
hindikigoonj.jp@gmail.com

₹ 200.00
ISBN : 978-93-5536-206-3
बोधि जन-संस्करण
आवरण चित्र : प्रिशा

काव्य-संग्रह

आतप जीवनम् • रमा शर्मा

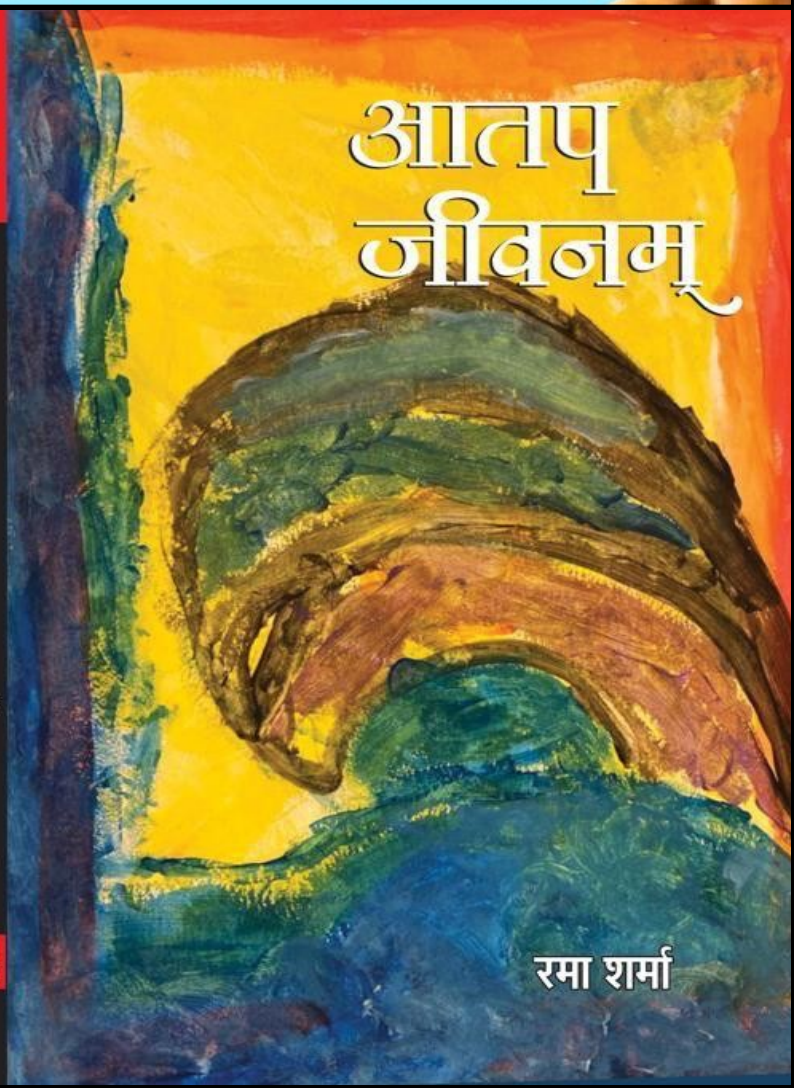

आतप जीवनम्

रमा शर्मा